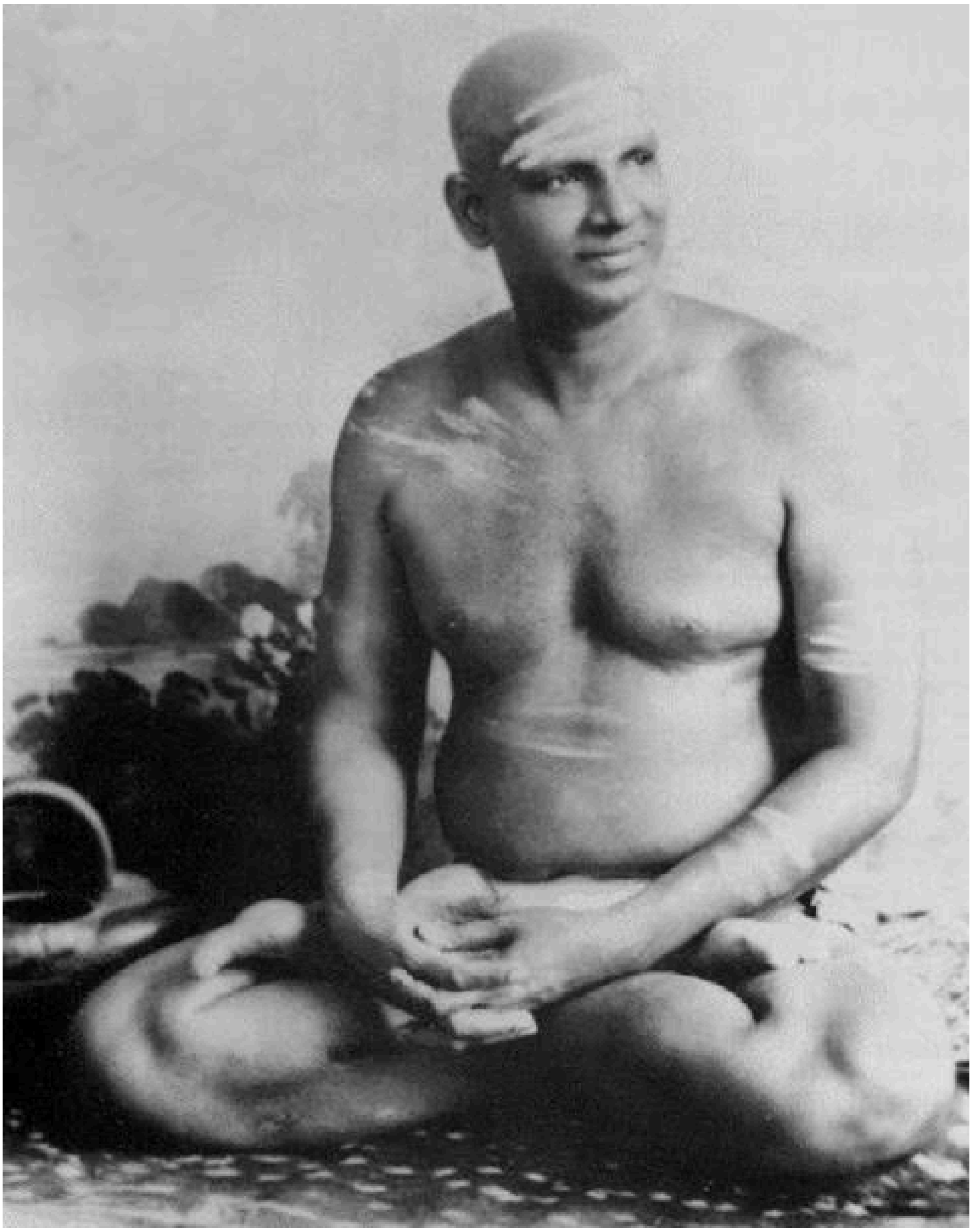



देवी माहात्म्य
स्वामी शिवानन्द

देवी माहात्मय्

(श्री दुरु् ◌ा सप्तशती)

परम पूज्यरुुरुदेव कीअंर्रेजी पुस्तक 'देवी माहात्मय्'के

मूलमार् का पाठ-ववधि सहहत अववकल हहन्दी

लेखक

श्री स्वामी शशवानन्द सरस्वती

अनुवाहदका

शशवानन्द राधिका अशोक

प्रकाशक

द डिवाइन लाइफ सोसायटी

पत्रालय : शशवानन्दनर्र- २४९१९२

जजला हटहरी ढ़्वाल, उत्तराखण्ण्(हहमालय), भारत

www.sivanandaonline.org. wwwldishq.org

प्रथम हहन्दीसंस्करण:२००७

द्ववतीय हहन्दीसंस्करण:२०१८

(१,००० प्रततया)ाँ

ISBN 81-7052-216-1

HS15

PRICE : ₹115/-

'द डिवाइन लाइफ सोसायटी, शशवानन्दनर्र' के शलए स्वामी पद्मनाभानन्द द्वारा प्रकाशशत तथा उन्हीं के द्वारा 'योर्- वेदान्त फारेस्ट एकिोमी प्रेस, पो. शशवानन्दनर्र, जज. हटहरी ढ़वाल,

उत्तराखण्ि, वपन २४९१९२ ' में मुहित ।

For online orders and Catalogue visit: dlsbooks.org

प्रकाशकीय वक्तव्य

दुर्गासप्तशती अथवा देवी माहात्म्य एक अनूठी पुस्तक है। यह शाक्त िम ाका मूल आिार है। यह मन्त्रों का शजक्तशाली संग्रह है। इस पुस्तक का प्रत्मयेक श्लोक एक र्मयात्ममक शजक्त है जो
मानव की प्रकृतत पर ववजय पानेमें शजक्तशाली ढंर् से काय ाकरता है।

प्राचीन समय सेही मााँको ईश्वर की भातााँत माना र्या है। ऋग्वेद भी इस तथ्य का प्रमाण
देता है कक प्राचीन समय में भी यह दृढ ववश्वास था कक ववश्व की शासक सव ाकृपालुमााँहै तथा मा ाँ
अधिकतर मानव-मन पर प्रभाव िालती है। वपता नहीं, जो अधिक पररश्रमी समझा जाता है।

प्रकृतत के तीन कायो— सृजन, संरक्षण तथा संहार के स्बन्ि में देवी मााँकी दुर्गाअथवा
काली, लक्ष्मी, सरस्वती के रूप में आरािना की जाती है। वास्तव में ये तीन पृथक्-पृथक् देववयााँनहीं
हैं, वरन् ्ये एक ही तनराकार देवी तीन ववशभन्न रूपों में हैं। दुर्गापूजा अथवा नवरात्रत्र महाकाली,
महालक्ष्मी, महासरस्वती की नौ हदन आरािना का अवसर है जब ववश्वमाता की तीन प्रकार से
आरािना की जाती है। इसमें यही समझाया र्या है।

-द डिवाइन लाइफ सोसायटी

अनुवाहदका का ववनम्र तनवेदन

परम पूज्य रुरुदेव श्री स्वामी शशवानन्द जी के चरणों में बारंबार प्रणाम। परम पूज्य रुरुदेव नेइस पुस्तक में दुरााासाप्तशती का अथ ाहदया है, इसके पाठ करने की ववधि बताई है और देवी के मानव जीवन में महत्मव पर प्रकाश िाला है। साथ ही यह भी बताया है कक इसका पाठ सभी को करना चाहहए; क्योंकक देवी माँवह कल्याणमयी मा ाँहैं, जजनसेहमारे बाहरी और आंतररक संपूण ाव्यजक्तत्मव का तनमाणा होता है और उनकी कृपा से ही हम हमारे मानव जीवन के लक्ष्य आत्ममसाक्षात्मकार को प्राप्त कर पाते हैं। उनकी कृपा के त्रबना जीवन में ककसी प्रकार की प्रर्तत संभव नहींहै, क्योंकक वे े इस संसार की सृष्टा हैं। वेइस संसार की रचना करनेवालेऔर पोषण करनेवालेतथा संहार करने वालेप्रभुका ही साकार रूप हैं। अतः देवी को ब्रह्मा, ववष्णुऔर महेश सेअशभन्न मानतेहुए उनकी आरािना करनी चाहहए। और देवी मा ाँकी आरािना हेतुनवरात्रत्र का समय सवश्रोष्ठ है। पुस्तक के अन्त में परम पूज्य रुरुदेव के द्वारा सन् ्१९४२ सेलेकर सन् ्१९५६ तक प्रततवष ानवरात्रत्र पर हदए ए संदेश हदए ए हैं, जो अत्मयंत प्ेरेरणाप्रद हैं।

हमें आशा नहींपूण ाववश्वास है कक परम पूज्य रुरुदेव श्री स्वामी शशवानन्द जी की पुस्तक देवी माहात्म्य के प्रथम हहंदी संस्करण सेहहंदी भाषी जन प्रेरणा प्राप्त करेंरे् ेऔर लाभाजन्वत होंरे्; क्योंकक रुरुदेव स्वयं भर्वद्साक्षात्मकार प्राप्त संत थेऔर वेप्रत्मयेक प्राणी में ईश्वर के साक्षात दशना ककया करतेथे।

सदा रुरुदेव की सेवा में

शिवानन्द राधिका जौक

श्री श्रींी पढ़ने ेके सामान्य तनयम

प्रातःकाल स्नान एवं अपनी तनत्मय पूजा (संध्या) की समाजप्त के पश्चात पूजा करने वाले को एक शुद् स्वच्छ आसन पर उत्तर अथवा पूव ाकी ओर मुख करके बैठना चाहहए तथा मन एकाग्र और भजक्त से पूण ाहोना चाहहए। श्री श्री चंिी का पाठ दृढ़ आस्था, भजक्त और शुद् उच्चारण के साथ
करना चाहहए। पाठ की अवधि में व्यजक्त को न तो बात करना चाहहए न कुछ ववचार करना चाहहए,
न सोना चाहहए न छींकना चाहहए, न जंभाई लेना चाहहए न ही थूकना चाहहए। इसका पाठ करते समय उसे देवी का जो भी रूप रुधचकर लर्े, उसका ध्यान करना चाहहए। अध्याय को पूण ाककए त्रबना
बीच में उठना नहीं चाहहए तथा पुस्तक को ववशेष रूप से ताबेँ की थाली के ऊपर रखना चाहहए।
प्रत्मयेक अध्याय की समाजप्त एवं प्रारंभ के पूव ाघंटी बजाना चाहहए। पाठ प्रार्भ करने के पूव ासंकल्प तथा देवी पूजन करना आवश्यक है।

श्री श्री चंिी पाठ हेतु सप्ताह में मंर्लवार, शुक्रवार तथा शतनवार का हदन ववशेष रूप से अत्मयंत शुभ है। अष्टमी, नवमी तथा चतुदाशी देवी की ततधथया ाँहैं। इसका पाठ तन्न क्रम से ककया जाना चाहहए :-

१. देवी सूक्त, २. देवी कवच,
३. अर्ला स्तोत्र, ४. कीलकम्, ्
५. रात्रत्रसूक्तम्, ् ६. देवीमाहात्म्य,
७. फल श्रुतत और ८. क्षमा प्राथनाा ।

श्री श्री चंिी का तीन भार्ों में ववभाजन ककया र्या है :-

१. प्रथम, २. मध्यम और ३. उत्तर ।

प्रथम अध्याय में महाकाली की महहमा बतायी र्यी है, द्ववतीय, तृतीय, चतुथ ाअध्याय में महालक्ष्मी की महहमा का वणना ककया र्या है तथा अंततम नौ अध्याय ५ से १३ तक में श्री महासरस्वती की महहमा का र्ान ककया र्या है। जो श्री श्री चंिी का पाठ आस्था और भजक्त के साथ करता है उसे संपवत्त, दीघायु और मुजक्त प्राप्त होती है ।

१. देवी सूक्त (ऋग्वेद के अनुसार)

महवष ाअ्बरीन की पुत्री वाक के द्वारा इन ८ श्लोकों की रचना की र्यी है, ये ऋग्वेद से शलए र्ये हैं, इसमें दस मंलि, दस अनुवाक, १२५ सूक्त हैं। ये श्लोक वाक ने जजस सत्मय का साक्षात्मकार ककया उसे ेअशभव्यक्त करते ेहैं, वाक ने ब्रह्मशजक्त से स्वयं को एकरूप कर शलया था तथा

स्वयं को ११ रुिों, १२ आहदत्मयों तथा सभी देवों, इन्र्ि, अजग्न और अजश्वनी कुमारों—जो कक उनके द्वारा पोवषत है और जो संपूण ाजर्त के स्रोत, आश्रय और आिार हैं, के रूप में अशभव्यक्त ककया था। वे वास्तव में ब्रह्माण्रूिवपणी हैं।

२. देवी कवचम् ्

देवी कवचम् ्में ६१ श्लोक हैं, यह माकाण्र्िेय पुराण में है। यह कवच पाठ करने वाले के शरीर के सभी अंर्ों की सभी स्थानों तथा सभी कहठनाइयों में रक्षा करता है। इसमें शरीर के प्रत्मयेक भार् को इंधर्त ककया जाता है और इसके बाद आनंद, संपवत्त, स्वास्थ्य, शजक्त एवं थ्य, शजक्त एवं समृद्धि हेतु देवी की ववशभन्न नामों से पूजा की जाती है।

३. अर्ाला स्तोत्र

इसमें ऋवष माकाण्र्िेय २७ प्रेरक श्लोकों में अपने शशष्यों को देवी का माहात्म्य बता रहे हैं। उनका सभी नामों और रूपों में वणना ककया र्या है और प्रत्मयेक श्लोक के अन्त में देवी से भौततक समृद्धि, शारीररक स्वास्थ्य, यश और ववजय हेतु प्राथनाा की र्यी है।

४. कीलकम् ्

इसमें ऋवष माकाण्र्िेय अपने शशष्यों को भक्तों को देवी माहात्म्य का पाठ करते समय जजन बािाओं का सामना करना पड़ता है, उन्हें दूरू करने की ववधि और सिान बता रहे हैं। कीलकम् ्के पाठ से देवी का आशीवादा, आध्याजत्ममक समन्वय तथा मन की शांतत और सभी कायों में सफलता प्राप्त होती है।

५. रात्रत्र सूकूतम् ़्

रात्रत्रसूक्त(८श्लोक)ऋग्वेद से शलया र्या है। इसमें १० मंलि, १० अनुवाक, १२७ सूक्त हैं, जोयहदशातााहैककदेवीकीअनाहद काल से पूजा होती आई है। इसमें देवी का ववश्व के सवव्यापक परमईश्वरजोककओंकारकेरूप में प्रर्ट हुुई है, के रूप में वणना ककया है। देवी वह है जो हमारी प्राथनााओंकोपूणाकरतीहैं।

प्रस्तावना

देवी माहात्म्य अथवा दुर्ा ा सप्तशती इस संसार में अनूठी पुस्तक है। यह शाक्त ि म ा का मूल और आिार है। यह प्रत्मयेक और सभी के शलए एक कामिेनु है। यह मनुष्य जो भी कामना करता है, उसे पूण ा करती है। यह इस संसार में भजक्त तथा परलोक में मुजक्त प्रदान करती है। यह प्रारंभ से ले
कर अन्त तक मन्त्रों का शजक्तशाली भण्िार है। इस ग्रंथ का प्रत्मयेक श्लोक एक र्त्मयात्ममक शजक्त है जो कक मनुष्य की प्रकृतत पर ववजय पाने में शजक्तशाली ढंर् से काय ा करती है।

इस पुस्तक का प्रथम श्लोक यह प्ेरेरणा देता है कक संपूण ा पुस्तक देवी मन्त्र 'ह्रीं' की पूण ा व्याख्या है। इस पुस्तक की अनेक व्याख्याऐं उपलब्ि हैं जो इसकी दाशतानक ढंर् से अथवा सामान्य ढंर् से व्याख्या करती हैं। जो भी इस संसार में एक अच्छा और शांततपूण ा जीवन व्यतीत करना चाहता है, उसे सप्तशती के मन्त्रों की उपेक्ेषा नहीं करनी चाहहए।

मा ाँ की भाताँत परमेश्वर की िारणा तनरथका नहीं है। ऋग्वेद भी इस तथ्य को प्रमाणणत करता है तथा प्राचीन समय में भी यह दृढ़ ववश्वास था कक सव ा कृपालु मा ाँ ही शासक है। वपता जो कक अधिक श्रम करने वाला है, उसकी तुलना में मा ाँ अधिकतर मानव मन को अच्छी लर्ती है। देवी, दुर्ा ा अथवा श्री के रूप में हदव्यता की िारणा मात्र शसद्ान्ति नहीं है, बजल्क यह जीवन का व्यावहाररक तरीका है। यह एक ववशेष दृजष्टकोण है जजसे ेएक ओर नहीं रखा जा सकता है। यह ककसी भी िाशमका ववश्वास के मत की भाताँत महत्मवपूण ा है तथा यह हहंदू िम ा की सवाधिक महत्मवपूण ा शाखाओं वैष्णव, शैव तथा शाक्त में से एक है। यहा ाँ तक कक एक सूक्ष्म दाशतानक भी शजक्त की िारणा को छोड़ नहीं सकता। उसके शलए वह अतनवाय ा रूप से शजक्त की मूतत ा है। उसे शजक्त से प्ेरेम है। सवोच्च बुद्धि तथा सवाधिक काल्पतनक आत्ममववद्या, ज्ञानशजक्त का प्राकट्य मात्र है और यह शजक्तवाद की सीमा से बाहर नहीं है। इसशलए अब हम ज्ञान और आत्ममसाक्षात्मकार के लक्ष्य को प्राप्त करने के शलए महहमामयी मा ाँ की पूजा करें, उपासना करें।

सप्तशती का तनत्मय इस प्रकार पाठ ककया जाना चाहहए कक यह सात हदनों में पूण ा हो जाये। तन्न क्रमानुसार अध्याओं के ववभार् करके पाठ करना चाहहए १, २, १, ४, २, १, २ प्रथम, द्ववतीय तथा तृतीय; चतुथ; ा पंचम, षष्ठम, सप्तम; तथा अष्टम, नवम तथा दशम; एकादश; द्वादश और त्रयोदश। यही पर्परार्त तनयम है। सप्तशती को मन की ककसी भी कामना की पूतत ा के शलए ककया जा सकता है और यह पूण ा होती है। इसे जीवन के ककसी भी उद्देश्य के शलए प्रयोर् ककया जा सकता है और यह अवश्य ही पूण ा होर्ा। इसका प्रयोर् आध्याजत्ममक उद्देश्य के शलए ककया जा सकता है और

आपको देवी का आशीवादा प्राप्त होर्ा। शजक्त सभी कामनाओं, ज्ञान एवं कक्रयाओं क मूलिाार है, इसशलए मनुष्य कभी भी शजक्त के साम्राज्य से बाहर नहीं जा सकता है। स्पूण ाामनुष्य शजक्त मात्र
है, इसशलए उसे शजक्त की आरािना से सब कुछ प्राप्त है सकता है।

देवी दुर्ा ाका आशीवादा आप सभी के ऊपर हो, वे आप सभी को आध्याजत्ममव ज्ञान और आत्ममसाक्षात्मकार प्रदान करें।

देवी मा ाँकी भारतीय िारणा

सृजृष्ट के प्रारंभ सेही जब आहदम मानव स्त्री प्रिान समाज में तनवास करता था, देवी माँाँकी पूजा की जाती थी। बाद में जैसे-जैसेसभ्यता का ववकास हुआ स्त्री प्रिान समाज का स्वरूप िीरे-िीरे समाप्त हो र्या और वपता पररवार का प्रमुख बन र्या। वहााँ उसे ेअधिकारी माना जानेलर्ा और प्रत्मयेक व्यजक्त उसकी ओर तनदेशन तथा स्वीकृतत हेतुदेखनेलर्ा। ईश्वर की िारणा में भी पररवतना आया और ईश्वर के वपता के स्वरूप की स्थापना हो ई। लेककन माँाँकी पूजा भी साथ-साथ चलती रही। चूाँकक यह िारणा मनोवैज्ञातनक रूप सेभक्त के मन को अधिक अच्छी लर्ी, माँाँके प्रतत बच्चे े का आकषणा के अत्मयधिक तनकट है, अतः पररणाम स्वरूप हहंदू िूम ामें ईश्वर के मातृ ृरूप तथा वपतृ ृ रूप के मध्य एक संवेदनात्ममक एकस्वरता ववकशसत हो र्यी। लोर्ों नेसीता राम अथवा रािा कृष्ण की साथ-साथ पूजा की।

मानव मन की िारणा स्बंधित अनुभवों पर आिाररत है। ववषयपरक आदशवााद नेइसी कारण अपनी प्रारंशभक अवस्था में ववषयाधश्रत तथा वैयजक्तक समरूपता का सहारा शलया। भर्वान् ् तनर्ुणा तथा सर्ुण िारणाओंमें सीशमत नहींहै। लेककन एक जहटल ररक्तता की िारणा की अपेक्षा दयालुवपतृसृत्ता अथवा आकषका, कृपालु मातृसृत्ता के रूप में ईश्वर के साथ एक सचेतन स्बंि स्थावपत करना अधिक सरल है। वास्तव में भर्वान् ्र्ुणों सेरहहत है, लेककन स्बंअिच्छाई तथा सद्गुणों के सकारात्ममक आदशों का सकारात्ममक अध्यारोपण जजज्ञासुके आत्मम चररत्र तनमाणा तथा आध्याजत्ममक प्रर्तत के शलए अतनवाय ाहै।

माँाँअपनेबच्चेके प्रतत अत्मयंत दयालुहोती है। आप ककसी भी अन्य की अपेक्षा अपनी माँाँसे अधिक उन्मुक्त होतेहैं। यह माँाँहै जो आपकी रक्षा करती है, आपका पोषण करती है, आपको सांत्मवना देती है, आपको प्रसन्न करती है और आपकी देखभाल करती है। वह आपकी प्रथम र्ुरु है। वह अपनेबच्चों के शलए अपना सवस्ाव न्योछावर कर देती है। आध्याजत्ममक क्षेत्र में भी सािक का देवी माँाँके साथ अन्तरंर् सबं्ि है।

जर्न्माता की पूजा अथवा उपासना सेआत्ममज्ञान प्राजप्त में सहायता प्राप्त होती है। कठोपतनषद् में यक्ष प्रश्न इस दृजष्टकोण का समथना करतेहैं। माँाँके पास खुले हृदय सेजाऐं। अपना मन उन्मुक्त और ववनम्र रखें। अपनेववचार शुद्ि एवंउत्मकृष्ट रखें। एक बच्चे ेके समान सरल रहे अपनेअजस्तत्मव, अहंकारी प्रकृतत, चतुराई, चालाकी, स्वाथताा, कुहटलता, िूतताा को चूर-चूर कर दें। त्रबना ककसी शत ाके पूण ाआत्मम समपणा करें। उनके मन्त्रों का पाठ करें। उनकी पूजा आस्था और अववचल भजक्त के साथ करें।

दुरा्पूजा या नवरात्रत्र प्रबल सािना हेतु सवाधिाक अनुकूल अवसर है। ये नौ हदन मा ाँकी आरािना के शलए अत्मयंत श्रेष्ठ हैं। स्वयं को उनकी आरािना में लरा् दें। नवरात्रत्र उन दुरु्णाों पर जो कक अन्याय, अत्मयाचार, ऐश्वय ाकी वृद्धि, लालच, स्वाथ,ा घृणाा में अपनी अशभव्यजक्त पाते हैं तथा अन्य आसुरी शजक्तयों के रूहस्थान है, जो मनुष्य के ऊपर दःुख लाते हैं, दैवी शजक्तयों की ववजय का प्रतीकात्ममक उत्मसव है।

देवी की उनके सभी रूपों में आरािना कीजजए। वे परमात्ममा का सृजनात्ममक रूप हैं। वे ब्रह्मांिीय ऊजा ाका प्रतीकात्ममक रूप हैं। पदाथों के सभी रूपों तथा आत्ममा की जस्थर शजक्त का भौततक अंततम पररणाम शजक्त है। शजक्त एवं ंआत्ममा अशभन्न हैं। ये अतनवाय ारूप से एक हैं।

पंच तत्मव एवं उनका संयोर् मा ाँका ही बाह्य प्राकट्य है। बुद्धि, वववेक, शसद्धिया ाँऔर इच्छा उसके आंतररक प्राकट्य हैं। मानवता उसका दृश्यमान रूप है। अतः मानवता की सेवा देवी मा ाँकी पूजा है।

अनुभव करें कक मा ाँआपकी आखोँ से देखती हैं, आपके कानों से सुनती हैं, आपके हाथों से कायाकरतीहैं। अनुभव करें कक शरीर, मन, प्राण, बुद्धि तथा उनके सभी काय ाउसके प्राकट्य हैं। एक हीवैजश्वकजीवन सभी के हृदयों में स्पजन्दत होता है। जब आप ककसी से घृणाा करते हैं, तो ऐसा करकेआपस्वयं अपनी आत्ममा को नकारते हैं, तो कफर हमारे जीवन में घृणाा और स्वाथताा के शलए स्थानहीकहा ाँहै? अपने हृदय में इस दैवी चेतना के साथ हरे िूब जाय।ें इस दैवी ऐक्य के आदश ा कासदाध्यान करें और अभ्यास करें।

मााँकी कृपा असीम है। उनकी दया अनंत है। उनका ज्ञान अनंत है। उनकी शजक्त अपरंपार है।उनकीमहहमा अवणानीय है। उनका वैभव अपार है। वे आपको भजक्त और मुजक्त भी प्रदान करेंर्ी।वेहृदय की थोड़ी सी शुद्धि से प्रसन्न हो जाती हैं। पावन दुरा्पूजा देवी से प्राथनाा का पववत्र अवसरहै।इस सुंदर अवसर को हाथ से न जाने दें। मा ाँकी कृपा प्राप्त करने हेतु सच्चा और तनजश्चतप्रयास करें। वे आपका संपूण ाजीवन | बदल देंर्ी और आपको दैवी ज्ञान, आध्याजत्ममक अन्तदृजाष्टऔर कैवल्य का दुरा्ा प्रदान करेंर्ी।

देवी मा ाँकी पूजा

देवी उस दैवी शजक्त का समानाथका शब्द है, जो कक ववश्व को अजस्तत्मव के एकीकृत बल के रूप में प्रर्ट करती है, उसका पोषण करती है, उसका रूपांतरण करती है। वास्तव में देवी पूजा कोई
एक स्प्रदाय से स्बंधित नहीं है और न ही यह ककसी एक मत से जुड़ी हुई है। देवी अथवा शजक्त
से हमारा अथ ाहै, सभी अजस्तत्मवमान शजक्तया ाँजैसे ज्ञान की सवज्ञाता की शजक्त। ये शजक्तया ाँईश्वर
के कल्याणमय रूप हैं। आप उन्हें ववष्णु, शशव या जो चाहें पुकार सकते हैं। अन्य शब्दों में शजक्त
स्वयं ईश्वर हैं, जो अनेक देवताओं के रूप में प्रर्ट होते हैं तथा जो ववश्व का कारण हैं। जर्त के
कारण शजक्त और शाक्त एक हैं। शजक्त और शजक्त को िारण करने वाले को पृथक नहीं ककया जा
सकता। ईश्वर और शजक्त अजग्न और अजग्न की उष्णता के समान हैं।

इसशलए देवी पूजा और शजक्त पूजा ईश्वर की महहमा, ईश्वर की महानता, ईश्वर की
सवोच्चता की पूजा है। यह परमात्ममा की पूजा है। यह बड़ा ही दुभाग्राय है कक देवी को रक्त की प्यासी
हहंदू ूदेवी समझ शलया र्या है। नहीं, नहीं, देवी मात्र हहंदुओं की स्पवत्त नहीं है। देवी ककसी एक िम ा
से स्बद्नहीं है। देवी देव की चैतन्य शजक्त है। इसे कभी नहीं भूलना चाहहए। देवी शजक्त आहद
नाम तथा उन ववशभन्न रूपों के ववचार जो उन रूपों से ेसब्द्हि ैंवे मानव ज्ञान की सीशमतता तथा
मानव की समझ के कारण हदए र्ये हैं। भर्वान् ्कृष्ण र्ीता में कहते हैं कक यह मेरी तन्न प्रकृतत
शजक्त है, इसके परे मेरी उच्च प्रकृतत, वास्तववक शजक्त है जो जीवन का मूल है तथा जो इस संपूण ा
ववश्व को बनाए रखती है। उपतनषद् कहती है कक पराशजक्त जो ईश्वर की परम शजक्त है उसे े
ववशभन्न प्रकार से सुना जा रहा है। यह प्रकृतत की शजक्त, ज्ञान शजक्त तथा कक्रया के रूप में प्रकट
हुई हैं। सत्मय कहता हूाँ कक ववश्व के सभी प्राणी देवी के पूजक हैं। यहा ाँऐसा कोई भी नहीं है जो ककसी
न ककसी रूप में शजक्त की लालसा नहीं रखता। भौततकीववद् तथा वैज्ञातनकों ने अब यह शसद्किर
हदया है कक प्रत्मयेक वस्तु शुद्अववनाशी ऊजा ाहै। यह ऊजा ाउस दैवी शजक्त का एक रूप मात्र है, जो
अजस्तत्मव के प्रत्मयेक रूप में उपजस्थत है।

चूाँकक शजक्त की आरािना इसकी अतनवाय ाप्रकृतत में नहीं की जा सकती, इस कारण इसकी
आरािना इसके प्रकट रूपों, काल्पतनक रूपों जैसे सृजृन, संरक्षण तथा ववनाश की भाताँत की जाती है।

शजक्त उपरोक्त तीनों कायों के संबंिमें सरस्वती, लक्ष्मी तथा काली है। यह जैसा प्रत्मयक्ष
स्वरूप में प्रतीत होता है, ये अलर्-अलर् तीन देववया ाँनहीं हैं, बजल्क एक ही तनराकार देवी के तीन
ववशभन्न रूप हैं। दुर्ा ापूजा अथवा नवरात्रत्र जर्त की देवी की तीन प्रकार से ेमहाकाली, महालक्ष्मी
तथा महासरस्वती के रूप में पूजा का नौ हदवसीय आरािना का उत्मसव है।

सरस्वती ब्रह्म बुद्धि, ब्रह्म चेतना, ब्रह्म ज्ञान है। सरस्वती की पूजा बुद्धि शुद्धि, वववेक, ववचार शजक्त, ज्ञान तथा आत्ममज्ञान हेतु आवश्यक है। लक्ष्मी का अथ ामात्र भौततक सप्वत्त जैसे े स्वण, ा पशु आहद नहीं है। सभी प्रकार की समृद्धि, यश, वैभव, खुशी, प्रततष्ठा, महानता देवी लक्ष्मी की कृपा के अन्तर्ता आते हैं। श्री अप्पय्य दीक्षक्षतार तो यहा ाँतक कक अंततम मोक्ष को भी मोक्ष साम्राज्य लक्ष्मी कहते हैं।

इसशलए लक्ष्मी की आरािना का अथ ाहै उस देवी की आरािना जो अनेकता को एकता में ववलीन कर दे। इसशलए देवी की आरािना उनके सभी रूपों में सािना की संपूण ाकक्रयाववधि की व्याख्या है।

दुर्ाापूजा अथवा नवरात्र में कठोर अनुष्ठान कीजजए और अपनी आंतररक प्रकृतत को शुद्ि कीजजए।

यहमााँकीआरािनाकेशलएवषामेंसवाधिकशुभसमयहै।सप्तशती(देवीमाहात्म्य) अथवा लशलता सहस्रनाम का पाठ कीजजए। देवी के मन्त्र का जप कीजजए। पारंपररक पूज ा को सच्चे े मनतथापूणाभजक्तकेसाथकीजजए।देवीमााँकेदशना केशलएरुदनकीजजए।देवीमााँआपको ज्ञान,शांतततथाआनंदकावहआशीवादा प्रदानकरेंर्ीजजसकीकोईसीमानहींहोर्ी।देवीमााँदुर्ा ा संसारमेंिमाकीस्थापनाकरें,वे ेसभीववरोिीबलोंकानाशकरेंजोककसंसारकीशांततमेंबािा ालतेहैं।वेपृथ्वीसेसभीप्रकारकीबीमाररयोंएवंदुर्भक्षा काउन्मूलनकरें।वेइसजर्तकेअपने सभीबच्चोंकेशलएपरमशांतत,समृद्धितथाअक्षयआनंदलायेंवेसभीअसुरोंअथवादुष्टप्रकृतत वालेजनोंकोसाजत्मवकजनोंमेंबदलदें।वेवासना,क्रोि,अहंकार,पाखंआहदआसुरीवृवत्तयों(मिु, कैटभ,महहष,शुंभ,तनशुंभजजनकाप्रतीकहैं)कामानवोंमेंसेउन्मूलनकरें।

वेअपनेबच्चोंकोदेवीज्ञानकादुग्िप्रदानकरेंतथाउन्हेंदेवीवैभवऔरयश,कैवल्यकी अववनाशी अवस्था और अनंत सूय ा के प्रकाश की ववशालतम ऊाँ चाइयों तक उठाय।े

मातृ–वन्दना

या कुन्देन्दुतुषारहारिवला या ि ुभ्रवस्त्रावृता

या वीणावरदण्मिण्ण्तिकरा या श्वेतपद्मासना।

या ब्रह्माच्युतिंकरप्रभृतृतशभदेव ैः सदा पूण्ति

सा मां पातु सरस्वती भगवती तनैःर्ोिषिाड्यापहा।।

माता मरकतश्यामा मातङ्गी मदिाशलनी।

कटाक्षयतु कल्याणी कदम्बवनवाशसनी।।

यि मातङ्गतनये िय नीलोत्पलद्युते।

यि सङ्गीतरशसके िय लीलिाुकप्रप्रये।।

जप हेतु देवी- मन्त्र

ॐ नमश्चण्ण्िकाय ॥

ॐ ऐं ह्रींकलींचामुण्ायिप्रवच्चे॥

ॐश्रीदुगाुाया नमैः।।

ॐ श्री महालक्ष्मम्य नमैः ॥

ॐ श्री सरस्वत्य नमैः ॥

ॐ दुगाुादेवींरिणमहंप्रपद्ये।।

ॐ नीलांदेवींरिणमहंप्रपद्ये।।

अथ सप्तश्लोकी दुरु् ा

शशव उवाच-

देप्रव त्वं भकतसुलभे सवकाायप्राविातयतन ।

कलौ हह कायशासद्यर्मुपायं बू्रूहह यत्नतैः ।।

देव्युवाच-

ृणिु देव प्रवक्ष्मयाशम कलौ सवेष्टसािनम् ् ।

मया तव व स्त्नेहेनाप्यम्बास्त्तुततैः प्रकाश्यते ।।

ववतनयोर्

ॐ अस्य श्रीदुरुासाप्तश्लोकीस्तोत्रमन्त्रस्य नारायण ऋवषः, अनुष्टुप् ् छन्दः,श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वत्मयो देवताः श्रीदुरुाप्रीत्मयथं ंसप्तश्लोकी दुरुापाठे ववतनयोर्ः ।

ॐ ज्ञातननामप्रप चेतांशंस देवी भगवती हह सा ।

बलादाकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छतत ।।१ ।।

दुगेु स्त्मृता हरशस भीततमिेषिन्तौः

स्त्वस्त्र् : स्त्मृता मततमतीव िुभां ददाशस ।

दाररद्र्यदुैःखभयहाररणण का त्वदन्या

सवोपकारकरणाय सदार्द्ाधचत्ता ॥२॥

सवमाङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सवार्ासाधिके ।

रिण्ये त्र्यम्बके गौरर नारायणण नमोऽस्त्तु ते ॥३॥

रिणागतदीनातपाररराणपरायणे ।

सवस्त्ायातततहारे देप्रव नारायणण नमोऽस्त्तु ते ।।४।।

सवस्त्ावरूपे सविेसविाण्कतसमण्न्वते ।

भयेभ्यस्त्राहह नो देप्रवदुगेदेप्रवनमोऽस्तु ते ॥५॥

रोगानिेषानपहंशसतुष्टा

रुष्टातुकामान् ्सकलानभीष्टान् ्।

त्वामाधश्रतानांनप्रवपन्नराणां

त्वामाधश्रताह्याश्रयतांप्रयाण्न्त ॥६॥

सवाबिााप्रिमनंरलोकयस्त्याणखलेश्वरर ।

एवमेव त्वया कायमास्त्मद्वररप्रवनिानम् ्॥७॥

।। इतत श्रीसप्तश्लोकीदुगा्स्पूणा ा॥

ऋग्वेदोक्तं देवीसूक्तम् ्

ववतनयोर्

ॐअहशमत्मयष्टचस्ाय सूक्तस्य वार्ाभृणी ऋवषः, श्री आहदशजक्तदेवता द्ववतीयाया जर्ती, शशष्टानां च त्रत्रष्टुप् ्छन्दः, श्रीदेवीमाहात्म्यपाठे ववतनयोर्ः ।

ध्यानम् ्

ॐ शसंहंस्त्रा िाशिखरा मरकतप्रख्य श्वतुशभभुाैः
खिं चक्रिनुैःरिंश्च दिती नेर ण्स्त्रशभैः िोशभता ।
आमुकताङ्गदहारकंकणरणत्काञ्चीरणन्नूपुरा
दुगुा ादुगुतातहाररणी भवतु नो रत्नोल्लसत्कुण्लिा ।।

देवीसूक्तम् ्

ॐ अहं रुरेदे्शभवसुाशभश्चराम्यहमाहदत्यरुतप्रवश्वदेव ैः ।
अहं शमरावरुणोभा बबभम्यहाशमन्द्राग्नीअहमण्श्वनोभा॥१ ॥

अहं सोममाहनसं बबभम्यहां त्वष्टारमुतपूषणं ंभगम् ्।
अहं दिाशम र्द्प्रवणं हप्रवष्मतेसुप्राव्येयिमानायसुन्वते॥२॥
अहं राष्री संगमनी वसूनांधचककतुषोप्रर्मायज्ञज्ञयानाम् ्।
तां मा देवा व्यदिुः पुरुराभूररस्त्रारांभूयाविायन्तीम् ्॥३॥

मया सो अन्नमप्रत्त यो प्रवपश्यततयैःप्राणणततयईंऋणोत्युकतम् ्।
अमन्तवो मां त उपज्ञक्षयण्न्तश्रुधिश्रुतश्रद्धिवंतेवदाशम ।।४।।

अहमेव स्त्वयशमदं वदाशमिुष्टंदेवेशभरुतमानुषेशभैः ।
यं कामयते तं तमुग्रं कृणोशमतंब्रह्माणंतमृपूरषं ंतंसुमेिाम् ्॥५॥

अहं रुर्द्राय िनुरातनोशम ब्रह्मद्प्रवषे िरवे हन्तवा उ ।

अहं िनाय समदं कृणोम्यहं द्यावापृधृर्वी आप्रवविे॥६॥

अहं सुवे प्रपतरमस्त्य मूद्ािन् ्मम योतनरप्स्त्वन्तैः समुद्रेदे् ।

ततो प्रवततष्ठे भुवनानु प्रवश्वोतामूं द्यां वष्मणाोपस्त्पिृाशम ॥७॥

अहमेव वात इव प्रवाम्यारभमाणा भुवनातन प्रवश्वा ।

परो हदवापर एना पृधृर्व्या तावती महहना संबभूव ।।८।।

इतत ऋग्वेदोकतं देवीसूकतं समाप्तम् ्।

ॐ तत् ्सत् ्ॐ

अथ देव्याः कवचम् ्

प्रवतनयोगैः

ॐ अस्य श्रीचणर््िकवचस्य ब्रह्मा ऋवषः, अनुष्टुप् ्छन्दः, चामुणर््ा दैवता, अङ्गन्यासोक्तमातरो बीजम्,् हदग्बन्दिवतास्तत्त्वम्,् श्रीजर्दबर््ाप्रीत्मयथे सप्तशतीपाठाङ्गत्मवेन जपे ववतनयोर्ः ।
ॐ नमश्चणर््िकाय ॥

मार्कणर््ेयउवाच

ॐ यद्गुह्यं परमंलोकेसवरार्क्षाकरंनृणाम् ्।
यन्न कस्त्यधचदाख्यातंतन्मेबूूहहप्रपतामह॥१॥
ब्रह्मोवाच

अण्स्त गुह्यतमंप्रवप्रसवभूतोपकारकम् ्।
देव्यास्तु कवचं पुण्यंतच्छृणुष्वमहामुने॥२॥
प्रर्मं ि लपुरीततद्प्रवतीयंब्रह्मचाररणी।
तृतीयं चन्द्रघण्टेततकूष्माणर््ेततिचतुर्काम् ्॥३॥
पञ्चमं स्त्कन्दमातेततषष्ठंकात्यायनीतर्।
सप्तमं कालरारीततमहागौरीततचाष्टमम् ्।।४।।

नवमं शसद्धिदारीचनवदुर्गाुः। प्रकीततताुः।
उकतान्येतातन नामातनब्रह्मणवमहात्मना॥५॥
अण्ग्नना दह्यमानस्तुिरुमध्यातारणे।
प्रवषमे दुर्गमे च वभयातौःरिणंगतौः॥६॥

न तेषां ायतेककंधचदिुभंरणसंकटे।
आपदं न च पश्यण्न्तिोकदुैःखभयंकरीम् ॥७॥

य स्तु भकत्यास्त्मृतातनत्यंतेषांवृदृ्धिैःप्रायते।
ये त्वां स्त्मरण्न्तदेवेशिरक्षशसतान्नसंर्ययैः।।८।।
प्ेरेत संस्त् र्ा तु चामुण् ा वाराही महहषासना।
ऐन्द्ी गिसमारूढावष्णवीगरुिासना।।९।।
नारशसंही महावीयााशिवदूतीमहाबला।
माहेश्वरी वृषारूढा कौमारीशिणखवाहना।।१०।।
लक्ष्ममीैः पद्मासना देवीपद्महस्त्ताहररप्रप्रया।
श्वेतरूपिरा देवी ईश्वरीवृषवाहना।।११।।
ब्राह्मी हंससमारूढासवाभारणभूप्रषता।

इत्येता मातरैः सवाैःा सवयाोगसमण्न्वताैः।।१२।।

नानाभरणिोभाढ्या नानारत्नोपिोशभताैः ।
श्ेरेष्ठ श्च मौण्कतक ैः सवााहदव्यहारप्रलण्म्बशभैः।।१३।।
इन्द्नील महाानीलैःपद्मरागैःसिुोभनैः।
दृश्यन्ते रर्मारूढादेव्यैःक्रोिसमाकुलाैः।।१४।।
खिं चक्ंरंगदांण्कतंहलंचमुसलायिुम् ।

खेटकं तोमरंचवपररंिपािमेवच ।।१५।।

कु न्तायिुं बरिूलं च िाङ्गा मायिु मुत्त मम् ।
द त्यानांदेहनिाायभकतानामभयायच।।१६।।

रियन्त्यायिुनीत्रंदेवानांचहहतायव।
नमस्त्तेऽ स्तु महारौरेद्े महाघोरपराक्रमे ।।१७।।
महाबले महोत्साहे महाभयप्रवनाशितन ।
राहह मांदेप्रवदुषुप्रेक्ष्मयिेरूणूांभयवद्धिानी।।१८।।
प्राच्यां रक्षतु मामन्द्री आग्नेय् यामण्नदेवता ।
दज्ञक्षणेऽवतुवाराहीनऋात्यांखड्गिाररणी।।१९।।
प्रतीच्यां वारुणी रक्षेद् वायव्यां मृगृ वाहहनी ।
उदीच्यां पातु कौबेर ी एिन्यां िूल िाररणी ॥२०॥
ऊवं् ंब्रह्माणणमेरक्षेदिस्त्ताद्वष्णवीतऱ्ा।
एवं दि हदिोरक्षेच्चामुण्र्ािविवाहना।।२१।।
यिा मामग्रतैःपातुप्रवियापातुपृषू्ठतैः।
अण्तिा वामपाश्वेतुदज्ञक्षणे ेचापराण्तिा।।२२।।
शिखां मे द्योततनीरक्षेदुमामूण्नाव्यवण्स्त्ता।
मालिारी ललाटेचभ्रुवौरक्षेद्यिण्स्त्वनी॥२३॥
नेर योण्श्वरनेर ा च यमघण्टा तु पाश्वके ।
बरनेरा च बस्र्ूलेनभ्रुवोमा्ये्चचण्ण्किा||२४||
णिखनी चक्षुषोमा्ये्श्रोरयोद्वाारवाशसनी।
कपोलौ काशलकारक्षेत् ्कणमूलेतिुंकरी।।२५।।
नाशसकायां सुग न्िा चि उत्तरोष्ठे च चधचका ा।
अिरे चामृताबालाण्ह्वायांचसरस्त्वती॥२६॥
दन्तान् ् रक्षतु कौमारी कण्ठदिे तु चण्ण्किा।
घण्टकां धचरघण्टाचमहामायाचतालुके॥२७।।

कामाक्षी धचबुकं रक्षेदे् वाचं ंमे सवमाङ्गला ।
ग्रीवायां भर्द्काली च पृषृठवंि िनिुरी ॥२८॥
तनलग्रीवा बहहैःकण्ठे नशलकां नलकूबरी।
स्त्कन्यिैः खड्धगनी रक्षेदे् बाहू मे वज्रिाररणी ॥२९॥
हस्त्तयोदाण्णि्नी रक्षेदण्म्बका चाङ्गुलीषु च ।
नखाञ्छूलेश्वरी रक्षेत् ्कुक्षौ रक्षेन्नरेश्वरी ।।३० ।।
स्त्तनौ रक्षेन्महादेवी मनैः िोकप्रवनाशिनी ।
हृदये लशलता देवी उदरे िूलिाररणी ।।३१ ।।
नाभौ च काशमनी रक्षेदे् गुह्यं गुह्येश्वरी तरा् ।
मेढ्रं रक्षतु दुगुन्िाि पायुं मे गुह्यवाहहनी ।।३२ ।।
कटयां भगवती रक्षेदूरू मे मेघवाहना ।
ङ्घि महाबला रक्षेत् ्िानू मिावनातयका ।।३३ ।।
गुल्फयोनाराशसंही च पादपृषृठे तु कौशिकी
पादाङ्गुलीैः श्रिीरी च तलं पातालवाशसनी ।। ३४ ।।
नखान् ्दंष्रकराली च किांश्च वोव्कोशिनी ।
रोमकूपेषु कौमारी त्वचं योधगश्वरी तरा् ।।३५ ।।
रकतमज्ाविसामांसान्यण्स्त्मेदांशस पावती ।
अन्त्राणण कालराबरश्च प्रपत्तं ंच मुकुटेश्वरी ॥३६॥
पद्मावती पद्मकोिे कफे चूिामणणस्त्तरा् ।
ज्वालामुखी नखज्वालामभेद्या सवसाण्न्षिु ॥३७ ।।
ुक्रिं ब्रह्माणी मे रक्षेच्छायां छरेश्वरी तरा् ।
अहंकारं मनो बुद्धिं ंरक्षेन्मे िमिाररणी ।। ३८ ।।

प्राणापानौ तरा् व्यानमुद ानं च समानकम् ् ।
वज्रहस्ता च मे रक्षेत् ् प्राणान् ् कल्याणिोभना ॥३९॥
रसे रूपे च गन्र्े चि िब्दे स्तिपे च योधगनी ।
सत्त्वं रिस्तमश्चव रक्षेन् नारायणी सदा ॥४० ॥
आयू रक्षतु वाराही िमा रक्षतु पावता ी
यिैः कीततं ंचलक्ष्मर्मीचसदारक्षतुवष्णवी।।४१।।
गोरशमन्द्राणी मे रक्षेत् ् पूिन् ् रक्षेच् च चण्णि्का ।
पुरान् ्रक्षेन्महालक्ष्ममीभायाांरक्षतुभरवी।।४२।।
निेश् वरी िनं रक्षेत् ् कौमारी कन्यकां तरा् ।
पन्त्रानंसुपरा्रक्षेन्ेमागाक्षेमेंकरीतरा्।।४३।।
रिाद्वारे महालक्ष्ममीप्रविा या सततं ण्स्त्रता ।
रक्षाहीनं तु यत् ् स्त्रानं वण्िर्तां कवचेन तु ।। ४४ ।।
तत्सवं ंरक्षमेदेप्रवियन्तीपापनाशिनी।
सवरा क्षाकरं पुण् यं कवचं सवदा ा िपेत् ् ।। ४५ ।।
इदं रहस्त्यं प्रवप्रषे भकत्या तव मयोहदतम् ् ।
पदमेकंनगच्छेत्तु ुयदीच्छेच्छुभमात्मनैः।।४६।।
कवचेनावृतोतनत्यंयरयरवगच्छतत।
तर तरालार्भश्चप्रवियैःसावकाािलकैः।।४७॥
यं यं धचन्तयतेकामंतंतंप्राप्नोततततनण्श्चतम् ्।
परम श्वयमातुलंप्राप्स्त्यतेभूतलेपुमान् ्॥४८॥

तनभयाो ायतेमत्यैःा संग्रामेषेवपराण्तिैः।
र लोकये तु भवेत्पूज्यैःकवचेनोवृतैःपुमान् ्॥४९॥

इदं तु देव्यौः कवचं ं देवानामप्रप दुलु भा म् ् ।
यैः पठेत्प्रयतोतनत्यंबरसन्यंश्रद्यिाण्वतैः॥५०॥
द वीकलाभवेत्तस्त्यरलोकयेचापराण्तिैः।
ीविद् वषिा तं साग्रमपमृत्र युप्र ववण्तिा ैः ।। ५१ ।।
नश्यण्न्त व्यािायैः सवे लूत ाप्रवस्त्फोटकादयैः ।
स्त्र्ावरं िङ्गमंचवकृबरमंचवयद्प्रवषम् ्॥५२॥
अशभचाराणण सवाणा ण मन्त्रयन्त्राणण भूत ले ।
भूचरौः खेचराश्चविलिाश्चौपदेशिकौः॥५३॥
सहिा कुलिा मालिााककर्निााककनीतर्ा।
अन्तररक्षचरा घोरिााककन्यश्चमहारवौः॥५४॥
ग्रहभूतप्रपिाचाश्चयक्षगन्विराक्षसौः।
ब्रह्मराक्षसवेतालौःकूष्माण्िभिरवादयैः॥५५॥
नश्यण्न्त दिनाात्तस्त्यकवचेनोवृतोहहयैः।
मानोन्नततभवो र्द् ाज्ञस्त्तिै ोवृद् धिैः परा भवेत् ् ॥५६ ।।
यिोवृद् धिभवो त् ् पुंस ां कीततवृा द्ा धिश्च ायते ।
तस्त्मात् ्िपेत् ्सदा भकतैःकवचंकामदंमुने॥५७।।
पिेत् ्सप्तितीं चण्र्कित्वातुकवचंपुरा।
तनप्रवघ्नेन भवेत् ्शसद्धिश्चण्र्ीपिसमुद्भवा।।५८।।
यावद्भूमण्लिंत्तिेसिलवनकाननम् ्।
तावप्रत्तष्ठतत मेहदन्यांसन्तततैःपुरपौबरकी।।५९।।
देहान्ते परमंस्त्र्ानंसुररप्रपसुदुलुभाम् ्।
प्राप्नोतत पुरुषोतनत्यंमहामायाप्रसादतैः॥६०॥

तर गच्छतत गत्वासौ पुनश्चागमनं नहह ।

लभते परमं स्त्र्ानं शिवेन समतां व्रित् ्।।६१।।

इतत श्रीमाकाण्र्येयपुराणे हररहरब्रह्मववरधचतं देवीकवचं समाप्तम् ्।

अथ अर्लास्तोत्रम् ्

प्रवतनयोगैः

ॐ अस्य श्रीअर्लास्तोत्रमन्त्रस्य ववष्णुत्रृावषः, अनुष्टुप् ्छन्दः, श्रीमहालक्ष्मीदेवता, श्रीजर्दब्ाप्रीतये सप्तशतीपाठाङ्गत्मवेन जपे ववतनयोर्ः ।।

ॐ नमश्चण्ण्किाय ।

माकाण्र्येय उवाच

ॐ िय त्वं देप्रव चामुण्र्े िय भूतापहाररणण ।
यि सवगाते देप्रव कालराबर नमोऽस्तु ते ॥१ ॥
यिन्ती 'मङ्गला काली भर्द्काली कपाशलनी ।
दुगा ाशिवा क्षमा िारी स्त्वाहा स्त्विा नमोऽस्तु ते॥२॥
मिुक टभप्रवव्ंशस प्रविातृवृरदे नमैः ।
रूपं देहह ियं देहह यिो देहह द्प्रवषो िहह ॥३॥
महहषासुरतनणाशिा भकतानां सुखदे नमैः ।
रूपं देहह िय़ं देहह यिो देहह द्प्रवषो िहह ॥४ ॥
िूम्रनेरविे देप्रव िमकाामादार्ातयनी ।
रूपं देहह िय़ं देहह यिो देहह द्प्रवषो िहह ।। ५।।
रकतबीविे देप्रव चण्मुिण्प्रिवनाशितन ।
रूपं देहह िय़ं देहह यिो देहह द्प्रवषो िहह ॥६॥
तनिुम्भिुम्भतननाशिा र लोकयिुभदे नमैः ।
रूपं देहह िय़ं देहह यिो देहह द्प्रवषो िहह ॥७ ॥

वण्दतांतियुगे देप्रवसवसौभाग्यदातयतन।
रूपं देहह ियं देहह यिोदेहहद्प्रवषिोहह॥८॥

अधचन्त्यरूपचररते सविा रुप्र वनाशितन ।
रूपं देहह ियं देहह यिोदेहहद्प्रवषिोहह।।९।।
नतेभ्यैः सवदाा भकत्याचापणेदुरुरतापहे।
रूपं देहह ियं देहह यिोदेहहद्प्रवषिोहह।।१०।।
स्तुवद्भ्यो भण्कतपूवं ंत्वांचण्ण्किव्याधिनाशितन।
रूपं देहह ियं देहह यिोदेहहद्प्रवषिोहह।।११।।
चण्ण्कि सततं युद्र्यिन्तीपापनाशितन।
रूपं देहह ियं देहह यिोदेहहद्प्रवषिोहह।।१२।।
देहह सौभाग्यमारोग्यंदेहहदेप्रवपरंसुखम् ्।
रूपं देहह ियं देहह यिोदेहहद्प्रवषिोहह।।१३।।
प्रविेहह देप्रव कल्याणंप्रविेहेहप्रवपुलांधश्रयम् ्।
रूपं देहह ियं देहह यिोदेहहद्प्रवषिोहह।।१४।।
प्रविेहह द्प्रवषतां निांप्रविेहेहबलमुच्चकैः।
रूपं देहह ियं देहह यिोदेहहद्प्रवषिोहह।।१५।।
सुर ासुर शिरोरत्नतनघृष्ट्टचरणेऽ ण्म्बके ।
रूपं देहह ियं देहह यिोदेहहद्प्रवषिोहह।।१६।।
प्रवद्यावन्तं यिस्त्वन्तंलक्ष्ममीवन्तञ्चमांकुरु।
रूपं देहह ियं देहह यिोदेहहद्प्रवषिोहह।।१७।।
देप्रव प्रचण्दोदाण्दित्यदपतानषूहदतन।
रूपं देहह ियं देहह यिोदेहहद्प्रवषिोहह।।१८।।

प्रचण्दित्यदपघ्ानेचण्ण्किेप्रणतायमे।

रूपं देहह ियंदेहहयिोदेहहद्प्रवषिोहह।।१९।।

चतुभु ि ो चतुव का रसंस्त् तुते परमेश् वरर ।

रूपं देहह ियंदेहहयिोदेहहद्प्रवषिोहह||२०||

कृष्णेन संस्तुतेदेप्रविश्वद्धकत्यासदाण्म्बके।

रूपं देहह ियंदेहहयिोदेहहद्प्रवषिोहह।।२१।।

हहमाचलसुतानार्संस्तुतेपरमेश्वरर।

रूपं देहह ियं देहह यिोदेहहद्प्रवषिोहह।।२२।।

इन्द्ाणीपततसद्भावपूण् िते परमेश् वरर ।

रूपं देहह ियं देहह यिोदेहहद्प्रवषिोहह।।२३।।

देप्रव भकतिनोद्दामदत्तानन्दोदयेऽण्म्बके।

रूपं देहह ियं देहह यिोदेहहद्प्रवषिोहह।।२४।।

भायां मनोरमां देहहमनोवृत्तानुसाररणीम् ्।

रूपं देहह ियं देहह यिोदेहहद्प्रवषिोहह।।२५।।

तारररणीं दुगुसांसारसागरस्त्याचलोद्भवे।

रूपं देहह ियं देहहयिोदेहहद्प्रवषिोहह॥२६।।

इदं स्त्तोरं पहठत्वातुमहास्त्तोरंपठेन्नरैः।

सप्तितीं समाराय् वरमाप्नोततदुलुभाम्।्।२७॥

।।इतत श्रीमाकाण्येयिपुराणे ेअलार्ास्तोत्रंसमाप्तम्।्।

अथ कीलकस्तोत्रम् ्

प्रवतनयोगैः

ॐ अस्य श्रीकीलकमन्त्रस्य शशव ऋवषः, अनुष्टुप् ्छन्दः, श्रीमहासरस्वतीदेवता, श्रीजर्दब्ाप्रीत्मयथे सप्तशतीपाठाङ्गत्मवेन जपे ववतनयोर्ः ।

ॐ नमश्चण्ण्किाय ।

माकार्ण्येयउवाच

ॐ प्रविुद्ज्ञिानदेहायबरवेदीहदव्यचक्षुषे।
श्रे्रेयैः प्राण्प्ततनशमत्ताय नमैःसोमाद्र्ीारिरणे।।१।।
सवमोतद्प्रविानीयान्मन्त्राणामप्रपकीलकम् ्।
सोऽप्रप क्षेममवाप्नोततसततंप्यितत्परैः॥२॥
शसद्यन्त्युच्चाटनादीतनकमाणाणसकलान्यप्रप।
॥३॥

एतेन स्तुवतां देर्वी स्त्तोरवृन्र्देनभण्कततैः

न मन्रो नौषिं ंतस्त्यनककण्ञ्चदप्रपप्रवद्यते।
प्रवना िप्येन शसद्येत्तु ुसवमुाच्चाटनाहदकम् ्॥४॥
समग्राण्यप्रप सेत्स्त्यण्न्तलोकिंकाशममांहरैः।
कृत्वा तनमन्त्रयामाससवमोवशमदंुभिम् ्।।५।।
स्त्तोरं व चण्ण्कियास्त्तुतच्चगुह्यंचकारसैः।
समाप्नोतत स पुण्येनतांयर्ावण्न्नयन्त्रणाम् ्॥६॥
सोऽप्रप क्षेममवाप्नोततसवमोवेनसंर्यैः।
कृष्णायां वा चतुदाश्यामष्टम्यांवासमाहहतैः॥७॥

ददातत प्रततगृह्य णातत नान्यर्षा प्रसीदतत ।
इत्रं्रू पेण कीलेन महादेवेन कीशलतम् ्॥८ ॥
यो तनष्कीलां प्रवियनां चण्र्डीं िपतत तनत्यैः ।
स शसर्द्धःसिगणैःसोऽर्गन्र्धिवीयतेध्रुवम् ्।।९।।
न चवापाटवं तस्त्य भयं कवाप्रप न िायते ।
नापमृत्र्युवर्ंयाततमृतेचमोक्षमाप्नुयात् ्।।१०।।
ज्ञात्वा प्रारभ्य कुवीत ह्यकुवाणा ो प्रवनश्यतत ।
ततो ज्ञात्ववसम्पूणशामदंप्रारभ्यतेबुिैः।।११।।
सौभाग्याहद च यण्त्कण्ञ्चद् दृश्यते ललनािने ।
तत्सवं ंतत्प्रसादेनतेनिप्यशमदंुभिम् ्।।१२।।
नि स्त्तु िप्यमानेऽण्स्त्मन् ्स्त्तोरेसम्पप्रत्तरुच्चकैः।
भवत्येव समग्राप्रप ततैःप्रारभ्यमेवतत् ्।।१३।।
ऐश्वयं ं तत्प्रसादेन सौभाग्यारोग्यमेव च ।
रिुहातनैः परो मोक्षैः स्त्तूयतेसानककंर्नैः।।१४।।
चण्ण्किां हृदयेनाप्रपयैःस्त्मरेत् ्सततंनरैः।
हृद्यं काममवाप्नोततहृहददेवीसदावसेत् ्।।१५।।
अग्रतोऽमुं महादेवकृतंकीलकवारणम् ्।
तनष्कीलञ्च तर्ा कृत्वा पहठतव्यंसमाहहतैः।।१६।।
इतत श्रीभर्वत्मयाः कीलकस्त्तोत्रंसमाप्तम् ्।

अथ ऋग्वेदोक्तं रात्रत्रसूक्तम् ्

ववतनयोर्:

राबरसूकतस्त्य कुशिक ऋप्रषैः राबरदेवता, गायरी छन्दैः, श्रिीगदम्बाप्रीत्यरे् ेसप्तिती पाठादौ िपे प्रवतनयोगैः ।

ॐ रारी व्यख्यदायती पुरुरा देव्यक्षशभैः ।
प्रवश्वा अधि धश्रयोऽधित ।।१।।
ओवप्राा अमत्या ातनवतो देव्युद्वतैः ।
ज्योततषा बािते तमैः ॥२॥
तनरु स्त्वसारमस्त्कृतोषसं देव्यायती ।
अपेदु ुहासते. तमैः ॥३॥
सा नो अद्य यस्त्या वयं तन ते यामन्नप्रवक्ष्ममहह ।
वृक्षे न वसततं ंवयैः ||४ ॥
तन ग्रामासो अप्रवक्षत तन पद्वन्तो तन पज्ञक्षणैः ।
तन श्येनासण्श्चदधर्नौः ।। ५।।
यावया वृकृयं वृकं यवय स्त्तेनमूम्ये ।
अऱा नैः सुतरा भव ॥६॥
उप मा पेप्रपित्तमैः कृष्णं व्यकतमण्स्त्त ।
उप ऋणेव यातय ॥७ ॥
उप ते गा इवाकरं वृणीष्व दुहुहतहदावैः ।
राबर स्त्तोमं न ण्ग्युिषे ॥८ ॥

इतत ऋग्वेदोक्तं रात्रत्रसूक्तम् ्समाप्तम् ्।

देवीमाहात्मय्

।। ॐ श्रीदुर्गायै नमः ॥

अथ श्री दुर्गासाप्तशती

प्रथमोऽध्यायः

ववतनयोर्ः

ॐ अस्य श्रीप्रथमचररत्रस्य ब्रह्मा ऋवषः, महाकाली देवता, र्ायत्री छन्दः, नन्दा शजक्तः, रक्तदजन्तका बीजम्, ् अजग्नस्तत्त्वम्, ् ऋग्वेदः स्वरूपम्, ् श्रीमहाकालीप्रीत्मयथे प्रथमचररत्रजपे ववतनयोर्ः ।

महाकालीय्ानम् ्

खड्गं चक्रगदेषुचापपररघाञ्छूलं भिुण्र्ीं शिरैः

खिे संदिर्ती कर ण्स्त्रनयनां सवाङ्गगभूषावृताम् ्।

नीलाश्मद्युततमास्त्यपाददिकां सेवे महाकाशलकां

यामस्त्तौत्स्त्वप्रपते हरौ कमलिो हन्तुं मिुं क टभम् ्।।

ॐ नमश्चण्ण्काय

'ॐ ऐं माकाण्र्येय उवाच ॥ १ ॥

सावणणैःा सूयतानयो यो मनुैः कथ्यतेऽष्टमैः ।

तनिामय तदुत्ुपप्रत्तं ंप्रवस्त्तराद् गदतो मम ॥२॥

महामायानुभावेन यर्ा मन्वन्तराधिपैः ।

स बभूव महाभागैः सावणणस्त्ातनयो रवैः ॥३॥

स्त्वारोधचषेऽन्तरे पूवं ंच रवंसिमुद्भवैः ।

सुरर्ो नाम रािाभूत्समस्त्ते ज्ञक्षततमण्लिे ||४ ॥

तस्त्य पालयतैः सम्यक् प्रिौः पुर ातनवौरसान् ् ।
बभूवैुःरिवोभूपौःकोलाप्रवव्ंशसनस्त्तदा||५॥

तस्त्यतरभवद्युद्मिततप्रबलदण्ण्निैः।
न्यून रप्रपसतयुद्ीकिोलाप्रवव्ंशसशभण्तिौः॥६॥

ततैः स्त्वपुर मायातो तनिदिाधिपोऽभवत् ् ।
आक्रान्तैः स महाभागस्त्तस्त्तदा प्रबलाररशभैः ॥७ ॥
अमात्यबशालशभदुाष्टदुाबलास्त्यदुरुात्मशभैः।
किौो बलंचापहृतंतराप्रपस्त्वपुरेततैः॥८॥
ततो मृगृयाव्यिोनहतस्त्वाम्यैःसभूपततैः।
एकाकी हयमारुह्यिगामगहनंवनम् ्।।९।।
स तराश्रममर्द्ाक्षीद्प्रविवयस्त्ायमिसैः।
प्रिान्तश्वापदाकीणं ंमुतनशिष्योपिोशभतम् ्||१०॥
तस्त्रौ कंधचत्स कालंचमुतननातेनसत्कृतैः।
इतश्चेतश्च प्रवचरंस्त्तण्स्त्मन्मुतनवराश्रमे।।११॥
सोऽधचन्तयत्तदा तर ममत्वाकृष्टचेत नैः
मत्पूवैःा पाशलतं पूवं ंमयाहीनंपुरंहहतत् ्।।।१२।।

मद्भृत्् यस्त्तरसद्भृत्ित िमा ता ैः पाल्यते न वा
न िानेसप्रिानोमिूरहस्त्तीसदामदैः।।।१३।।
मम वररविं यातैः कान् ् भोगानुप लप्स्त्यते
ये ममानुगतातनत्यंप्रसादिनभिोनैः।।।१४।।

अनुवृ पूर त्तं ं ध्रुवं तेऽ द्य कु वन्ा त्यन्यमहीभृत् ाम् ्

असम्यग्व्ययिीलस्तैः कुवद्ा शभैः सततं व्ययम् ् ।।। १५ ।।

संधचतैःसोऽततदैुःखेनक्षयंकिोगशमष्यतत

एतच्चान्यच्च सततं धचन्तयामास पाधर्वा ैः । ।।१६ ।।

तर प्रवप्राश्रमाभ्यिो वश्यमेकं ददिा सैः

स पृष्टस्तेनकस्त्वंभोहेतुश्चागमनेऽरकैः।।।१७।।

सिोक इव कस्मात्त्वं दुमु ना ा इव लक्ष्मयसे

इत्याकण्या वचस्तस्त्य भूप तैः प्रणयोहदतम् ् ।।। १८ ।।

प्रत्युवाचसतंवश्यैःप्रश्रयावनतोनृपृम् ्।।१९।।

वश्य उवाच ।। २० ।।

समाधिनामा वश्योऽहमुत्पन्निोतननांकुले।

पुरदार तनरास्तश्चिनलोभादसिुशभैः।।२१।।

प्रवहीनश्च िनदारा ैः पुर रादाय मे िनम् ् ।

वनमभ्यागतो दैुः खी तनरस्तश्चाप्तबन्ुशि भैः ॥२२॥

सोऽहं न वेद्शमपुराणांकिुलाकिुलाण्त्मकाम् ्।

प्रवृपूरत्तं ंस्त्विनानांचदाराणांचारसंणं्स्त्रतैः॥२३॥

ककं नु तेषां गृहेक्षेममक्षेमंककंनुसाम्प्रतम्|्|२४||

करं् ते ककं नु सद्वृतृतादुवृत्ताैःककंनुमेसुतैः।।२५।।

रािोवाच ।। २६ ।।

य तनरास्तो भवाल्ाँलुब्ैःपुरदाराहदशभिनैः||२७||

तेषु ककं भवतैः स्त्नेहमनुबन्ाततमानसम्॥्२८॥

व श्यउवाच।।२९।।

एवमेतद्यर्‌ाप्राहभवानस्त्मद्गतंवचैः।
ककं करोशमनबन्‌ाततममतनष्ठुरतांमनैः॥३०॥
य ्ैः संत्यज्यप्रपतृसूत्नेहंनिलुब्‌तिनरााकृतैः
पततस्त्विनहादं च हाहदा तेष्‌ वेव मे मनैः॥३१ ॥
ककमेतन्नाशभिानाशमिानन्नप्रपमहामते।
यत्प्रेमप्रवणं धचत्तं ंप्रवगुणेष्वप्रपबन्‌षुि॥३२॥
तेषां कृते मे तनैःश्वासोदौमनास्त्यंचािायते॥३३॥
करोशम ककं यन्न मनस्त्तेष्वप्रीततषुतनष्ठुरम्‌|्|३४||

माकार्ण्‌यि उवाच ।। ३५ ।।

ततस्त्तौ सहहतौ प्रवप्रतंमुतनं ंसमुपण्स्त्ती||३६||

समाधिनामा व श्योऽसौसचपाधर्वासत्तमैः||३७||

कृत्वा तु तौ यर्‌ान्यायंयर्‌ाहंतेनसंप्रवदम्‌ ्।
उपप्रवष्टौ कर्‌ाैः काण्श्चच्चक्रतुवैश्यपाधर्वािौ||३८||
रािोवाच ।। ३९ ।।
भगवंस्त्त्वामहं प्रष्टुशमच्छाम्येकंवदस्त्वतत्‌ ्।।४०।।
दैुःखाय यन्मे मनसैःस्त्वधचत्तायत्ततांप्रवना।।४१।।
ममत्वं गतराज्यस्त्यराज्याङ्गेष्वणखलेष्‌ेवप्रप।
ानितोऽप्रप यर्‌ाज्ञस्त्यककमेतन्मुतनसत्तम।।४२।।

अयं च तनकृतैः पुरद ररभृतृयस्त् तर्ोण्ज्तैः ।
स्त्विनेन च संत्यकतस्त्तेषु हादी तर्ाप्यतत ।। ४३ ।।
एवमेष तर्ाहं च द्वावप्यत्यन्तदुःणखतौ ।
दृष्टदोषेऽप्रप प्रवषये ममत्वाकृष्टमानसौ ।।४४ ॥
तण्त्कमेतन्महाभाग यन्मोहो ज्ञातननोरप्रप ।
ममास्त्य च भवत्येषा प्रववेकान्स्त्य मूढता ।।४५ ।।
ऋप्रषरुवाच ।।४६ ।।
ज्ञानमण्स्त्त समस्त्तस्त्य िन्तोप्रवषायगोचरे ।

प्रवषयश्च महाभाग यातत चवं   पृर्क् पृर्क् ।। ४७ ।।

हदवान्ीः प्राणणनैः केधचर्द्ारावन्स्त्तर्ापरे ।
केधचद्हदवा तर्ा रारौ प्राणणनस्त्तुल्यदृष्टयैः ।।४८ ।।
ज्ञातननो मनुैः सत्यं ककं तु ते न हह केवलम् ्।
यतो हह ज्ञातननैः सवे पुिपज्ञक्षमृगृादयैः ।। ४९ ।।
ज्ञानं च तन्मनुष्याणां यत्तेषां मृगृपज्ञक्षणाम् ्।
मनुष्याणां च यत्तेषां तुल्यमन्यत्तर्ोभयौः ।।५० ।।
ज्ञानेऽप्रप सतत पश्य तान् ्पतङ्गाञ्छावचक्षुषु ।
कणमोक्षादृतान्मोहात्पीड्यमानानप्रप क्षुिा ।।५१ ।।
मानुषा मनुव्याि साशभलाषौः सुतान् ्प्रतत ।
लोभात्प्रत्युपकाराय नन्वेतान् ्ककं न पश्यशस ।।५२ ।।
तर्ाप्रप ममतावत्तेमोहगते तनपाततौः
महामायाप्रभावेण संसारण्स्त्ततकाररणा ॥५३ ॥

तन्नार प्रवस्त्मयैः कायो योगतनर्द्ा िगत्पतैः ।
महामाया हरेश्च षा तया सम्मोह्यते िगत् ्॥५४ ॥

ज्ञातननामप्रप चेतांशस देवी भगवती हह सा ।
बलादाकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छतत ॥५५ ॥

तया प्रवसृज्यते प्रवश्वं िगदेतच्चराचरम् ्।
स षा प्रसन्ना वरदा नृणां भवतत मुकतये ॥५६॥
सा प्रवद्या परमा मुकतेहेतुभूता सनातनी ।।५७ ॥

संसारबन्हेतुश्च स व सवेश्वरेश्वरी ॥५८ ।।

रिोवाच ।। ५९ ।।

भगवन् ्का हह सा देवी महामायेतत यां भवान् ्।
ब्रवीतत कर्मुत्पन्ना सा कमास्त्ायाश्च ककं द्प्रवि ॥६०॥
यत्प्रभावा च सा देवी यत्स्वरूपा यदुद्भवा ।।६१।।

तत्सवं ंश्रोतुशमच्छाशम त्वत्तो ब्रह्मप्रवदां वर॥६२॥

ऋप्रषरुवाच ।। ६३ ।।

तनत्य व सा िगन्मूततस्त्ातया सवशामदं ततम् ्||६४||

तराप्रप तत्समुत्पप्रत्तबह्िुा श्रूयतां मम ||६५ ॥

देवानां कायशासद्यर्माप्रवभवातत सा यदा ।
उत्पन्नेतत तदा लोके सा तनत्याप्यशभीयते ॥६६॥
योगतनर्द्ां यदा प्रवष्णिुगात्येकाणवीकृते ।

आस्तीय ि◌ोषमभित्कल्पान्तेभगवान् ◌्प्रभुः॥६७॥

तदा द्वावसुरौघोरौप्रवख्यातौमिुकटभौ।
प्रवष्णुकुणमालोद्भूतौहन्तुंब्रह्माणमुद्यतौ॥६८॥
स नाशभकमले प्रवष्णौःण्स्त्रतोब्रह्माप्रिपततैः।
दृष्टवा तावसुरौ चोग्रौप्रसुप्तंचिनादानम् ◌्।।६९।।
तुष्टाव योगतनर्द्रांतामेकाग्रहृदयण्स्त्रतैः।
प्रवबोनार्ाया हरेहाररनेरकृतालयाम् ◌्॥७०॥
प्रवश्वेश्वर्री ि◌गद्ारीींण्स्त्रततसंहारकाररणीम् ◌्।
तनर्द्रां भगवतीं प्रवष्णोरतुलांतिसैःप्रभुः।।७१।।
ब्रह्मोवाच ।। ७२ ।।
त्वं ◌ंस्त्वाहा त्वं स्त्विात्वंहहवषटकारैःस्त्वराण्त्मका।
स्त्िा त्वमक्षरे तनत्येबरिमाराण्त्मकाण्स्त्रता॥७३॥
अिमााराण्स्त्रतातनत्यायानुच्चायााप्रविषतैः।
त्वमेव सन्ध्यासाप्रवरीत्वंदेविननीपरा।।७४।।

त्वय तद्ायिते प्रवश्वंत्वयतत्स्िृतिेगत् ◌्।
त्वयतत्पाल्यते देप्रवत्वमत्स्त्यन्तेचसवदाा।।७५।।

प्रवसृषृ्टौ सृणृ्ष्टरूपा त्वंण्स्त्रततरूपाचपालने।
तरा् संहततरूपान्ते ि◌गतोऽस्त्यिगन्मये॥७६॥
महाप्रवद्या महामायामहामेिामहास्त्मृतृतैः।
महामोहा च भवतीमहादेवीमहासुरी॥७७॥

प्रकृततस्त्वं च सवस्त्ाय गुणरयप्रवभाप्रवनी ।
कालराबरमहाारााबरमोहराबरश्च दारुणा ।।७८ ।।
त्वं श्रीस्त्वमीश्वरी त्वं हीस्त्वं बुद्धिबिोलक्षणा ।
लज्ाि पुण्टस्त्तर्ा तुण्टस्त्वं िाण्न्तैः क्षाण्न्तरेव च ।। ७९ ।।
खड्धगनी िूशलनी घोरा गहदनी चकक्रणी तर्ा ।
णिखनी चाप्रपनी बाणभिुण्ीिपिरघायुिा ||८०||
सौम्या सौम्यतरीषसौम्येभ्यस्त्वततसुन्दरी ।
परापराणां परमा त्वमेव परमेश्वरी ।।८१ ।।
यच्च ककंधचत्कवधचद्वस्त्तु सदसद्वाणखलाण्त्मके ।
तस्त्य सवस्त्ाय या िण्कतैः सा त्वं ककं स्त्तूयसे मया ॥८२॥
यया त्वया िगत्रष्टा िगत्पाताप्रत्त यो िगत् ्।
सोऽप्रप तनर्द्ाविं नीतैः कस्त्वां स्त्तोतुशमहेश्वरैः ||८३ ॥
प्रवष्णुैः िरीरग्रहणमहमीिान एव च ।
काररतास्त्ते यतोऽतस्त्वां कैः स्त्तोतुं िण्कतमान् ्भवेत् ्॥ ८४ ॥
सा त्वशमत्रं् प्रभाव ैः स्त्व रुदार देप्रव संस्त्तुता ।
मोहय तौ दुरािषावासुरौ मिुकु टभौ ॥८५ ।।
प्रबिों च िगत्स्त्वामी नीयतामच्युतो लघु ।।८६ ।।

बोिश्च कक्रयतामस्त्य हन्तुमेतौ महासुरौ ॥८७॥

ऋप्रषरुवाच ।।८८ ।।

एवं स्त्तुता तदा देवी तामसी तर वेिसा
प्रवष्णोैः प्रबोिनार्ााया तनहन्तुं मिुक टभी।।।८९ ।।

नेरास्त्यनाशसकाबाहुहृदयेभ्यस्त्तरो्रसैः।
तनगम्ाय दिनो तस्त्र्ौ ब्रह्मणोऽव्यकतिन्मनैः।।९०।।
उत्तस्त्र्ौ च िगन्नार्स्त्तयामुकतिोनादानैः।
एकाणवोऽहहियनात्ततैःसदर्दृचतौ।।९१।।
मिुक टभौ दुरुात्मानावततवीयपाराक्रमौ।
क्रोिरकतेक्षणावत्तुं ्ब्रह्माणंतिनतोद्यमौ।।९२।।
समुत्र्ाय ततस्त्ताभ्यांयुयुिे ेभगवान् ्हररैः।
पञ्चवषसाहराणण बाहुप्रहरणोप्रवभुैः॥९३॥
तावप्यततबलोन्मत्तौ महामायाप्रवमोहहतौ।।९४।।
उकतवन्तौ वरोऽस्त्मत्तो कक्रयताशमततकेिवम् ्।।९५।।
श्रीभगवानुवाच।।९६।।
भवेतामद्य मे तुष्टौ ममवय्ावुभावप्रप।।९७।।
ककमन्येन वरेणार एतावद्धिवृतंमम।।९८।।
ऋप्रषरुवाच ।। ९९ ।।

वण्ञ्चताभ्याशमतत तदा सवमा ापोमयं िगत् ् ।
प्रवलोकय ताभ्यां गहदतोभगवान् ्कमलेक्षणैः।।१००।।
प्रीती स्त्वस्त्तव युर्द्निश्लाघ्यस्त्त्वंमृतयुरावयौः।
आवां िहह न यरोवीसशललेनपररप्लुता॥१०१॥
ऋप्रषरुवाच ।। १०२ ॥

तरे्त्युकत्वा भगवता िंखचक्रगदाभृता ।

चके्रेण व ण्च्छरे िघने शिरसी तयौः कृत्वा ।।१०३ ।।

एवमेषा समुत्पन्ना ब्रह्मणा संस्तुता स्त्वयम् ्।

प्रभावमस्त्या देव्यास्त्तु भूयैः िृणु वदाशम ते ।। १०४ ।।

।। ऐं ॐ ।।

इतत श्रीमाकार्ण्येयपुराणे सावणणके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये मिुकैटभविो नाम प्रथमोऽध्यायः ।।१।

दुर्ा ासप्तशती अथवा देवी माहात्म्य

(देवी की महहमा)

प्रथम अध्याय

माकार्ण्र्य ऋवष बोले : अष्टम मनु सूय ाके पुत्र थे ेऔर उनका नाम श्रावणी था। म ैंअब आपको उनका जन्म ककस प्रकार हुआ, वह कथा सुनाता हूाँ। महामाया के अनुग्रह से सूय ाके पुत्र
मन्वंतर के स्वामी सूय ाके पुत्र हुए। पूव ाकाल की बात है; सुरथ नामक एक राजा थे जो पृथ्वी पर राज्य करते थे। एक बार उनके राज्य पर शत्रुओं ने आक्रमण कर हदया और राजा का उनके साथ घनघोर युद् हुआ, जजसमें राजा की पराजय हुई। राजा को बड़ा ही दुःख हुआ और वे एक घोड़े पर सवार हो कर देश छोड़ कर अकेले एक घने जंर्ल में चले र्ए। वहा ाँउन्होंने एक महान ऋवष का आश्रम देखा, वहा ाँमुतन के अनेक शशष्य थे, जो वहा ाँरहकर शास्त्रों का ज्ञान प्राप्त कर रहे थे। ऋवष ने बड़े ही उत्मसाह से राजा का स्वार्त ककया।

राजा इिर-उिर ववचरण करते हुए कुछ काल तक वहा ाँरहे। एक हदन वे मोह के वशीभूत हो कर स्वयं ही ववचार करने लर्े-यह ककतना दुःख का समय है, कक म ैंजजस देश पर शासन करता था, आज उस पर शत्रुओं का शासन है। मेरे मन्त्री जो मेरी ईमानदारी से रक्षा करते थे, वे ही आज शत्रुओं की सेवा कर रहे हैं। मेरी प्रजा जो मेरे शासन में अत्मयंत प्रसन्न थी, अब मुझे ेपता नहीं कक उसके साथ कैसा व्यवहार हो रहा है। वे सभी एक ववदेशी राजा की सेवा कर रहे हैं। शत्रुओं द्वारा मेरा सारा खजाना समाप्त कर हदया जाएर्ा। ऐसी ही अन्य कई बातें राजा तनत्मय ही ववचार करते रहते थे।

आश्रम में राजा ने एक वैश्य को देखा। राजा ने उससे पूछा, “तुम कौन हो ? तुम यहा ाँक्या कर रहे हो? कृपा करके मुझे अपने बारे में सब कुछ बताओ।" वैश्य ने उत्तर हदया, “मेरा नाम समाधि है। मेरा जन्म एक िनी कुल में हुआ है। लेककन मेरे दुष्ट पड़ोशसयों ने मेरी संपूण ास्पवत्त छीन ली और मेरे पररवार तथा पत्मनी और बच्चों ने मुझे ेघर से बाहर कर हदया है। तनिनाता के कारण मनैं वन में शरण ली है। म ैंदुःख से पररपूण ाहूाँ। अब मुझे ेयह ज्ञात नहीं है कक मेरी स्त्री को क्या हुआ और मेरे बच्चे क्या कर रहे हैं? वे जीववत हैं अथवा मृत्मयु को प्राप्त हो र्ए, म ैंतो यह भी नहीं जानता । राजा ने कहा जब तुम्हारे तनिना हो जाने पर तुम्हारी स्त्री तथा पुत्रों ने तुम्हें घर से बाहर तनकाल हदया, तो भी तुम्हारे मन में उनके प्रतत इतना मोह क्यों है? वैश्य ने कहा कक आप जो कह

रहे हैं, वह सवत्रा सत्मय है। म ैंभी यह जानता हूाँ। लेककन क्या कहूाँ ? म ैंअब भी उनसेपे्रम करता हूाँ। मन की प्रकृतत ही ऐसी है। म ैंअब भी उस दुष्ुट पत्मनी तथा बच्चों से पे्रम करता हूाँ जजन्होंने मुझे ेघर सेबाहर तनकाल हदया। म ैंइस ववषय में कुछ भी कर सकनेमें असमथ ाहूाँ।

माकंडेय ऋवष नेकहा : इसके पश्चात वेदोनों आश्रम में तनवास करनेवालेऋवष के पास र्ये। उन दोनों नेऋवष को प्रणाम ककया और बड़ेही आदरपूवका राजा नेऋवष सेप्रश्न ककया, "ऋवषवर, म ैंआपसेएक प्रश्न पूछना चाहता हूाँ; म ैंअपना राज्य खो बैठा हूाँ। मेरे पास अब कुछ भी शेष नहींहै। लेककन अब भी मुझे ेअपने खोयेहुए राज्य, अपनी स्त्री और बच्चों के प्रतत बड़ा ही मोह है। ऐसा क्यों है ? यह एक वैश्य है। इसेइसके सबंधियों नेतनिनाता के कारण घर सेबाहर तनकाल हदया है, लेककन कफर भी इसेअपनी स्त्री और बच्चों सेबड़ा ही मोह है। हम दोनों ही दुःख सेपररपूण ा हैं। हम दोनों ही भ्रशमत हैं। कृपा करके अपनेज्ञान द्वारा हमारी अज्ञानता को दूरू करें।"

ऋवष नेकहा : हे राजन! ववषय मार् ाका ज्ञान प्रत्मयेक जीव को होता है। सभी के पास समान ही ज्ञान होता है। लेककन कुछ प्राणी रात्रत्र में नहींदेख पातेऔर कुछ हदन में नहींदेख पाते। कुछ जीव ऐसेहैं जो हदन तथा रात में बराबर देखतेहैं। मनुष्य मात्र हदन में ही देख सकता है। यह सब क्या है ? यह अन्तर क्यों है ? अजग्न पर धर्र रहे पतंर्ों की ओर देखो! इंहिय ववषयों की अजग्न में धर्रतेहुए मनुष्यों की ओर देखो! प्राणणयों में यह अन्तर क्यों है ? बुद्धि स्पन्न होनेके बाद भी सभी प्राणी पेट के शलए संघष ाकर रहे हैं। महाशजक्त ववष्णु ुकी महामाया के द्वारा सभी तनयंत्रत्रत और मोहहत हैं। उनकी शजक्त के कारण यह संपूण ाजर्त काय ाकर रहा है। उनके कारण ही सभी कष्ट पा रहे हैं। उन्हींके कारण सभी प्रसन्न हैं। इसमें आश्चय ाकी कोई बात नहींहै। यहााँतक कक ज्ञानी भी इस माया के कारण बलपूवका खींचेजाते हैं और पूण ामोहहत हो जातेहैं। वे ही इस चर-अचर जर्त की सृजृक हैं। वेप्रसन्न होनेपर अन्त में मोक्ष प्रदान करती हैं। वेही बंिन तथा मोक्ष का कारण हैं। वेअकेली ही सब-कुछ हैं। वेदेवताओंपर शासन करती हैं!

राजा नेकहा ऋवषवर, वे देवी माया कौन है? उनका आववभावा कैसे हुआ? म ैंउनके बारे में सब कुछ जानना चाहता हूाँ, जो इस जर्त में ऐसेअद्भुत काय ाकरती हैं।

ऋवष नेकहा : वे ेतनत्मयस्वरूपा हैं। संपूण ाजर्त उन्हीं का रूप है। उन्होंने समस्त ववश्व को व्याप्त ककया है। तथावप उनका प्राकट्य अनेक प्रकार सेहोता है। जब वेदेवताओंका काय ाशसद्ि करने के शलए प्रकट होती हैं तो वेलोक में उत्मपन्न हुई कहलाती हैं। देवी का जब प्रथम बार प्रादुभुावा हुआ, उसकी कहानी इस प्रकार है। महाप्रलय के समय जब महाववष्णुयोर्तनिा में लीन थे, उस समय उनके कानों के मैल से दो भयंकर असुरों मिु ुऔर कैटभ का जन्म हुआ। वेदोनों भर्वान् ्के नाशभ

कमल में ववराजमान ब्रह्मा जी, जजनका उसी समय प्राकट्य हुआ था, का वि करनेके शलए तैयार हो ई। उन असुरों को अपने समीप देख तथा भर्वान् ्ववष्णु ुको योर्तनिा में ववलीन देख कर ब्रह्मा जी नेववश्व की आिार, जर्त की परम देवी, प्रत्मयेक वस्तुकी सृजृक, संरक्षक और संहारक आहद माया का स्तवन प्रारंभ ककया। ब्रह्मा जी नेकहा, "देवी तुम स्वाहा, स्वाि और वषटकार हो। तुम नाद और अि ामात्रा हो, सावविी तुम इस जर्त का आिार हो। तुम ही एकमात्र इस ववश्व की सृजृष्ट करनेवाली हो। तुम्हींनेइसेव्याप्त ककया है। तुम्हींमहाववद्या, महामाया, महामेिा, महास्मृतृत और महामोहा हो। आप महाववष्णुको जर्ा कर मेरी रक्षा करें। आप ही तीनों र्ुणों को उत्मपन्न करनेवाली सबकी प्रकृतत हैं। आप ही समृद्धि हैं। आप ही शांतत और करुणा हैं। आप असंख्य शस्त्र िाररणी हैं, आप सुंदरी और भयंकर हैं। आप महान सेभी अधिक महानतम हैं। हे देवव, जो भी यहााँहै वह सब आपका ही है। अब और अधिक म ैंक्या कह सकता हूाँ ववष्णुभर्वान् ्मेरी सहायता कर सकते हैं। वे मेरी रक्षा कर सकतेहैं। कृपा करके उन्हें जर्ा दीजजए और इन असुरों को मोहहत कर दीजजए, मेरा जीवन संकट में है।"

ऋवष नेकहा : इस प्रकार स्तुतत करनेपर देवी प्रसन्न हो र्यींऔर महामाया नेसभी ओर सेववष्णु ुभर्वान् ्के शरीर में प्रवेश ककया। देवी नेउनके नेत्रों को खोला, उनके मन को खोला, उनके हाथों को खोला और प्रत्मयेक अंर् को खोला। जर्त के स्वामी महाववष्णुजो अवणनीय सौंदय ाके स्वामी थे, वे ेशजक्तशाली अस्त्र-शस्त्रों के साथ उठ बैठे। उन्होंनेअपनेसमक्ष दो भयंकर दैत्मयों को देखा। वे ेक्रोिपूवका ब्रह्मा जी को खा जाने का उद्योर् कर रहे थे। भर्वान् ्हरर नेउनके साथ पााँच हजार वषों तक युद्ि ककया। महामाया अपनी माया सेउन राक्षसों को मोहहत कर रही थीं। अपनी अज्ञानता में उन दोनों ने भर्वान् ्ववष्णु ुसेकहा, "हरर तुम हमसे कोई भी वरदान मार्ो।" भर्वान् ्ने कहा, "तुम दोनों तत्मकाल मेरे हाथों सेमारे जाओ।"

ऋवष कहतेहैंकक उन दोनों असुरों नेदेखा कक यहााँऐसा कोई स्थान नहींहै जहा ाँजल न हो, तो वेदोनों बोलेकक 'तुम हमें ऐसेस्थान पर मार सकतेहो जहााँज न हो।' ववष्णुभर्वान् ्नेउन दोनों के शसरों को अपनी जाघों पर रखा जहााँजल नहींथ और अपनेभयंकर सुदशना चक्र सेकाट डाला। यह कहानी थी कक माया का प्रथम ब कैसेआववभावा हुआ। अब उनकी अन्य कथाएंसुनो।

अथ मध्यमचररतम् ्

द्ववतीयोऽध्यायः

प्रवतनयोगैः

ॐअस्य श्रीमध्यमचररत्रस्य ववष्णुऋृावषः, महालक्ष्मीदेवता, उजष्णक् छन्द शाक्भरी शजक्तः, दुगा् ा बीजम्, ् वायुस्तत्त्वम्, ् यजुवेदः स्वरूपम्, ् श्रीमहालक्ष्मीप्रीत्मयथे मध्यमचररत्रजपे ववतनयोर्ः ।

महालक्ष्ममीया्नम् ्

ॐ अक्षरकपररं गदेषुकुशलिं पद्मं िनुष्कुण्किां
दण् िंिण्कतमशसं ंच चम िालिं घण्टां सुराभिानम् ्।
लिू पिासुदिनो च दिर्ती हस्त ैः प्रसन्नाननां
सेवे स ररभमहदानीशमह महालक्ष्मर्मी सरिोण्स्त्ताम् ्।।

'ॐ ह्रीं' ऋप्रषरुवाच ॥ १ ॥

देवासुरमभूद्युदं् पूणमाब्दितं पुरा ।
महहषेऽसुराणामधिपे देवानां च पुरन्दरे ॥२ ॥
तरासुर महाावीयैदेवस न्यं पराण्तिम् ्।
ण्त्वा च सकलान् ्देवातनन्द्रोऽभून्महहषासुरैः॥३॥
ततैः पराण्ता देवौः पद्मयोतनं ंप्रापततम् ्।
पुरस्त्कृत्य गतास्त्तर यरिगरुिव्ाँ॥४ ॥
यरा्वृतूतं ंतयोस्त्तद्वन्महहषासुरचेण्ष्टतम् ्।
बरदिौः कर्यामासुदेवाशभभवप्रवस्त्तरम् ्।। ५।।

सूये न्द्राग्न्यतनलेन् दूनू ां 'यमस्त्य वरुणस्त्य च ।
अन्येषां चाधिकारान् ् स स्त्वयमेव ाधिततष्ठतत ॥६॥
स्त्वगाण्ा न्नराकृतौः सवे तेन देवगणा भुप्र व ।
प्रवचरण्न्त यर्ा मत्याा महहषेण दुरु ात्मना॥७ ॥
एदद्वैः कधर्तं सवमा मराररप्रवचेण् ष्टतम् ् ।
रिणं वैःप्रपन्नौःस्त्मोविस्त्तस्त्यप्रवधचन्त्यताम् ्॥८॥
इत्रं् तनिम्य देवानां वचांश स मिुसू द नैः ।
चकारकोपंम्भिुश्चभुरुकुटीकुहटलाननी।।९।।
ततोऽततकोपपूणस्त्ायचकक्रणोवदनात्ततैः।
तनश्चक्राम महते्तिो ब्रह्मणैः िंक रस्त्य च ।। १० ।।
अन्येषां चव देवानां िक्रादीनां िरीरतैः ।

तनगतांसुमहते्तिस्त्तच्चकयंसमगच्छत।।११।।

अतीवतिसैःकूटंज्वलन्तशमवपवताम् ्।
ददृिुस्त्तेसुरास्त्तरज्वालाव्याप्तहदगन्तरम् ्।।१२।।
अतुलंतरतते्तिःसवदोविरीरिम् ्।
एकस्त्रं् तदभून् नारी व्याप्तलोकरयं ण्त्वषा ॥१३॥
यदभूच् छाम्भवं ति स्त्तेन िाायत तन्मुख म् ् ।
याम्येनचाभवन् ्किाबाहवोप्रवष्णुतिसा॥१४॥
सौम्येन स्त्तनयोयुग्ा मं मयं् चन्र्देण चाभवत् ् ।
वारुणेन च िङ्घोरू तनतम्बस्त्ति सा भुव ैः ।।१५।।
ब्रह्मणस्त्तिसापादौतदङ्गुल्योऽकातिसा।
वसूनांचकराङ्गुल्यैःकौबेरेणचनाशसका।।१६।।

तस्त्यास्त्तु दन्तौः सम्भूतौः प्रािापत्येन तेिसा ।
नयनबरतयं िज्ञे ेतरा् पावकतेिसा ॥१७॥
भ्रुवौ च सन्ध्योस्त्तेिः श्रवणावतनलस्त्य च ।
अन्येषां च व देवानां सम्भवस्त्तेिसां शिवा ||१८||

ततैः समस्त्तदेवानां तेिोराशिसमुद्भवाम् ्
तां प्रवलोकय मुदं प्रापुरमरा महहषाहदातौः ॥१९॥
िूलि िूलाद्प्रवतनष्कृष्य ददौ तस्त्य प्रपनाकिृक् ।
चक्रं च दत्तवान् ्कृष्णौः समुत्पाद्य स्त्वचक्रतैः॥२०॥
िंखं च वरुणौः िण्कतं ददौ तस्त्य हुतािनैः ।
मारुतो दत्तवांश्चापं बाणपूणे तरेषुिी ।।२१ ॥
वज्रशमन्द्रैः समुत्पाद्य कुशलिादमराधिपैः ।
ददौ तस्त्य सहराक्षो घण्टामर ावताद् गिात्।्। २२ ।।
कालदण्ाद्यमो दण्ं पािं चाम्बुपततदादौ ।
प्रिापतताश्चाक्षमालां ददौ ब्रह्मा कमण्लुम् ्||२३ ।।
समस्त्तरोमकूपेषु तनिरश्मीन् ्हदवाकरैः ।
कालश्च दत्तवान् ्खड्गं तस्त्याश्चम ाच तनमलाम् ्॥२४॥
क्षीरोदश्चामलं हारमिरे च तरा्म्बरे ।
चूिामणण तरा् हदव्यं कुण्लिे कटकातन च ।।२५।।
अिचान्द्रं तरा् िुभ्रं केयूरान् ्सवबााहुषु ।
नूपुरौ प्रवमलौ तद्वद् ग्र वेयकमनुत्तमम् ्॥२६ ।।
अङ्गुलीयकरत्नातन समस्त्तास्त्वङ्गुलीषु च ।
प्रवश्वकमा ाददौ तस्त्य परिुं चातततनमलाम् ्॥२७॥

अस्त्राण्यनेकरूपाणणतर्‌ाभेद्यंचदंनिम् ्।
अम्लानपंकिां मालांशिरस्त्युरशसचापराम् ्।।२८॥

अददज्‌लिधिस्त्तस्त्य पंक ि चाततिोभनम् ् ।
हहमवान् ् वाहनं शसंहं रत्नातन प्रवप्रवितन च ।।२९ ।।
ददाविून्यंसुरयापानपारंनिाधिपैः।
षि श्च सवना ािगे ो महामणणप्रवभूप्र षतम् ्॥३० ।।

नागहारं ददौ तस्त्य ित्‌ते यैः पृधृ वींशममाम् ् ।
अन्य रप्रपसुरदेवीभूषणरायिुस्त्तर्‌ा।।३१।।
सम्मातनता ननादोच्चैः साटटहासं मुहु मुहु ैः ।
तस्त्या नादेनघोरेणकृत्स्त्नमापूररतंनभैः।।३२।।
अमायताततमहता प्रततिब्दो महानभूत् ् ।
चुक्षुभुैः सकलालोकौःसमुर्द्ाश्चचकण्म्परे॥३३॥
चचाल वसुिाचेलुैःसकलाश्चमहीिरौः।
यितत देवाश्चमुदातामूचुैःशसंहंवाहहनीम् ्॥३४॥
तुष्टुवुमुनायश्चनांभण्कतनम्रात्ममूतयौः।
दृष्टवा समस्त्तं संक्‌षुब्ि िरलोकयममरारयैः।।३५।।
सन्नर्द्ाणिखलसन्यास्त्तेसमुत्तस्त्रुरुदायुिौः।
आ ैः ककमेतहदततक्रिोदाभाष्यमहहषासुरैः।।३६।।
अभ्यिावत तं िब्दमिेष रसुर वृता ैः ।
स ददि ाततो देवींव्याप्तलोकरयांण्त्वषा॥३७॥
पादाक्रान्त्या नतभुवंककरीटोण्ल्लणखताम्बराम् ्।
क्षोशभतिोषपातालांनिुज्यातानैःस्त्वनेनताम् ्॥३८॥

हदिो भिुसहरेण समन्ताद्व्याप्यसंण्स्त्ताम् ्।
ततैः प्रववृते युद्ितियादेव्यासुरद्प्रवषाम् ्।।३९।।
स्त्रिास्त्र बह्विा मुकतरादीप्रपतहदगन्तरम् ्।
महहषासुर सेन ानीण्श्वक्षुर ाख्यो महासुर ैः||४०||
युयिु चामरश्चान्य श्चतुरङ्गबलाण्न्वतैः।
रर्ानामयुत ैः षड्शभरुदग्राख्योमहासुरैः।।४१।।
अयु य्तायुत ानां च सहरेण महाहनुैः ।
पञ्चािद्शभश्च तनयुतरशसलोमामहासुरैः।।४२।।
अयुतानां ितैःषड्शभबाष्ाकलोयुयिुेरणे।
गिवाण्सिहरौघरनेक ैः पररवाररतैः ।।४३ ।।
वृतो रर्ानां कोटयाचयुद्िेतण्स्त्मन्नयुय्त।
बबिालाख्योऽयुतानांचपञ्चािद्शभरर्ायुतैः।।४४।।
युयिु संयुगेतरस्त्र्ानांपररवाररतैः।
अन्ये च तरायुतिोरर्नागहयवृतौैः।।४५।।
युयिुैः संयुगेदेवायसहतरमहासुरौैः।
कोहटकोहटसहरेस्त्तुरर्ानांदण्न्तनांतर्ा।।४६॥
हयानां च वृतोयुद्िेतराभून्महहषासुरैः।
तोमर शभण्ान्दपालश्चिण्कतशभमुसालस्त्तर्ा॥४७॥
युयिुैः संयुगेदेव्याखड्गैःपरिुपटहटटैः।
केधचच्च धचज्ञक्षपैुःकितीैःकेधचत्पािांस्त्तर्ापरे।।४८।।
देवीं खड्गप्रहारस्त्तुतेतांहन्तुंप्रचक्रमुैः।
साप्रप देवी ततस्त्तातनिस्त्राण्यस्त्राणणचण्ण्किा।।४९।।

लीलय व प्रधचच्छेद तर्निस्त्रास्त्रवप्रषणाी ।
अनायस्त्तानना देवी स्त्तूयमाना सुरप्रषशाभैः ।।५० ॥
मुमोचासुरदेहेषु िस्त्राण्यस्त्राणण चेश्वरी ।
सोऽप्रप कुरुद्र्धी ि ितसटो देव्या वाहनकेसरी ।।५१ ॥
चचारासुरस न्येषु वनेण्ष्वव हुतिानैः ।
तनैःश्वासान् ्मुमुचे ेयांश्च युय्माना रणेऽण्म्बका ||५२॥
स एव सद्यैः सम्भूता गणौः ितसहरिैः ।
युयिुस्त्ते परिुशभशभणा्न्दपालाशसपटहटि ैः॥५३॥
नियन्तोऽसुरगणान् ्देविीकत्युपबृंहहतौः ।
अवादयन्त पटहान् ्गणौः िंखांस्त्तर्ापरे ॥५४॥
मृदृङ्गांश्च तर् वान्ये तण्स्त्मन् ्युद्मिहोत्सवे ।
ततो देवी बस्त्रिूलेन गदया िण्कतवृणूष्टशभैः ॥५५॥
खड्गाहदशभश्च िितो तनिघान महासुरान् ्।
पातयामास च वान्यान् ्घण्टास्त्वनप्रवमोहहतान् ्॥५६॥
असुरान् ्भुप्रव पिोन बद्वा चान्यानकषयात् ्।
केधचद् द्प्रविा कृतास्त्तीक्ष्मण ैः खड्गपात स्त्तर्ापरे॥५७॥
प्रवपोधर्ता तनपातेन गदया भुप्रव िेरते ।
वेमुश्च केधचर्दुधिुरं मुसलेन भिृं हतौः॥५८ ॥
केधचण्न्नपतततता भूमौ शभन्नौः िूलेन वक्षशस ।
तनरन्तरौः िरौघेण कृतौः केधचर्द्णाण्रि ॥५९ ॥
श्येनानुकाररणैः प्राणान् ्मुमुचुण्स्त्रदिदानौः ।
केषांधचद् बाहवण्श्छन्नाण्श्छन्नग्रीवास्त्तर्ापरे ।।६० ॥

शिरांशस पेतुरन्येषामन्ये मये् प्रवदाररतौः।
प्रवण्च्छन्निंघास्त्वपरे पेतुरुव्यां महासुरौः ।।६१॥

एकबाह्ज्ञक्षचरणौः केधचद्देव्या द्प्रविा कृतौः।
तछरेऽप्रप चान्ये शिरशस पतततौः पुनरुण्त्रतौः।।६२॥

कबन्ाि युयुिदेव्या गृह्नीतपरमायुिौः।
ननृतुश्चापरे तर युर्दे तूयलायाधश्रतौः॥६३॥

कबन्ण्शिछन्नशिरसैः खड्गिकत्यृणष्टपाणयैः।
ततष्ठ ततष्ठेतत भाषन्तो देवीमन्ये महासुरौः||६४॥

पाततत रर्नागाश्च रसुर श्च वसुन्रिा।
अगम्या साभवत्तर यराभूत्स महारण:।।६५।।

णिणतौघा महानद्यौः सद्यस्त्तर प्रसुखुवुैः।
मये् चासुरस न्यस्त्य वारणासुरवाण्निाम् ्॥६६॥

क्षणेने तन्महासन् यमसुराणांतराण्म्बका।
तनन्ये क्षयं यरा वण्ह्नस्त्तृणदारुमहाचयम् ्॥६७॥
स च शसंही महानादमुत्सिृनुतिकैसरैः।
रिीरेभ्योऽमरारीणामसूतनवप्रवधचन्वतत।।६८॥
देव्या गण श्च तस्त् तरकृतंयुद्मिहासुरैः।
यर् षां तुतुषुदेवौः पुष्पवृणष्टमुचोहदप्रव।।६९।।
।। ॐ ।।

इतत श्रीमाकार्ण्यिपुराणे सावणणको मन्वन्तरे देवीमाहात्म्येमहहषासुरसैन्यविोनाम द्ववतीयोऽध्यायः॥२॥

मध्यम चररतम् ्

द्ववतीय अध्याय

ऋवष कहतेहैं : पूवकााल में देवताओंतथा असुरों में पूरे सौ वषों तक घोर संग्राम हुआ। असुरों का नायक महहषासुर था और देवताओंके नायक इंि थे। शजक्तशाली राक्षसों सेदेवता र्ण पराजजत हो र्ये तथा महहषासुर स्वर् ा का राजा बन र्या। पराजजत देवता र्ण ब्रह्मा जी के पास र्ए। ब्रह्मा जी के साथ सभी देवता र्ण ववष्णुभर्वान् ्और शशव जी के पास र्ए तथा उन्हें सारी बातें कह सुनाईं। उन्होंनेकहा— "भर्वन्! ्महहषासुर सूय, ा अजग्न, इंि, वायु, चंिमा, यम, वरुण तथा अन्य देवताओंका अधिकार छीन कर स्वयंसबका अधिष्ठाता बन बैठा है। उसनेसमस्त देवताओंको स्वर् ा सेतनकाल हदया है। अब सभी देवता र्ण मनुष्यों की भाताँत पृथ्वी पर ववचरण कर रहे हैं। हम आपके पास सहायता हेतुआए हैं। कृपा करके उसके वि का कोई उपाय सोधचए। हम आपकी शरण में आए हैं।"

इस प्रकार देवताओंकी बातें सुन कर भर्वान् ्ववष्णु ुऔर शशव जी को बड़ा ही क्रोि आया। भर्वान् ्ववष्णुके मस्तक सेएक महान तेज प्रर्ट हुआ। शशव जी के तीसरे नेत्र सेभी तेज प्रर्ट हुआ तथा अन्य सभी देवता र्णों के मस्तक सेभी बड़ा भारी तेज प्रर्ट हुआ। यह स्पूण ातेज शमलकर एक हो र्या। महान तेज का वह पुंज जाज्वल्यमान पवता के समान प्रतीत हुआ। इस प्रकाश सेजो कक देवताओंके शरीर सेप्रर्ट हुआ था समस्त लोक प्रकाशमान हो र्ए। इस प्रकाश नेएक स्त्री का रूप ले शलया। भर्वान् ्शशव के तेज सेदेवी के मुख का तनमाणा हुआ । यम की शजक्त से उनके केशों का तनमाणा हुआ। भर्वान् ्ववष्णु ुकी शजक्त से उनके हाथों का तनमाणा हुआ। ब्रह्मा की शजक्त सेउनके पैरों का तनमाणा हुआ। इस प्रकार अन्य देवताओंके द्वारा उनके ककसी न ककसी अंर् का तनमाणा हुआ। वह सभी देवताओंका सार तत्मव थी। सभी देवता र्ण उसेदेख कर बड़ेही प्रसन्न थे।

सभी देवता र्णों ने उसे असुरों सेयुद्ि के शलए अपने-अपनेअस्त्र प्रदान ककये। शशव जी ने उसेअपना त्रत्रशूल प्रदान ककया, भर्वान् ्ववष्णुनेउसेअपना सुदशना चक्र प्रदान ककया। वरुण नेउसे े अपना शंख प्रदान ककया, अजग्न नेउसेअपनी शजक्त प्रदान की, वायुने उसे िनुष-बाण प्रदान ककया, इंि नेउसेवज्र, घंटा तथा एरावत प्रदान ककया, ब्रह्मा जी नेउसेअपना कमंलु प्रदान ककया, यम ने उसेअपनी तलवार प्रदान की, ववशभन्न देवताओंनेउसेअपनी मालाएं, बहुमूल्य आभूषण, कर अंरूहठयों, आयुि, खड्र्, कमल, शेर, मणणया, ाँ जवाहरात आहद प्रदान ककए। इसी प्रकार अन्य

देवताओंनेभी देवी को अस्त्र-शस्त्र प्रदान कर देवी का आदर ककय तत्मपश्चात देवी नेअट्टहास करके उच्च स्वर सेर्जनाा की, जजससेसपूण ाआकाश और पृथ्वी र्ुंजायमान हो उठे और क्पन करनेलर्े। उसकी प्रततध्वतन से लोकों में हलचल मच ई और समुि दोलायमान हो उठे। स्वर् ाऔर नका हहलने लर्े। देवताओंनेकहा, "हे शजक्तशाली शसंहंवाहहनी, तु्हारी जय हो ।" सभी ऋवष र्ण देवी का स्तवन ककया।

असुरों नेदेखा कक एक भयंकर देवी उनकी ओर आ रही है, ककंतुवे यह नहींजान पा रहे थे े कक वह कौन है। उन्होंने तत्मकाल अपनी सेना एकत्र की और देवी के ववरुि में खड़ेहो ए। महहषासुर नेभयभीत हो कर कहा कक यह क्या है? और अपनेसेना सहहत देवी पर आक्रमण कर हदया। देवी ने तीनों लोकों को आवृत्त ककया हुआ था। देवी के िनुष और बाण इतनी भयंकर आवाज करतेथेकक समस्त आसुरी सेना भयभीत हो कर अपना बल खो बैठी। देवी के सहस्रों हाथ थेजजनमें असंख्य अस्त्र थे। इसके बाद देवी और असुरों के मध्य भयंकर संग्राम प्रारंभ हो र्या। प्रारंभ में आसुरी सेना के सेनानायक धचक्षुर और चामर ने हजारों रधथयों के साथ युद् किरना प्रारंभ ककया। तत्मपश्चात एक अन्य शजक्तशाली राक्षस उदग्र अपने शमत्र अशसलोमा तथा करोड़ों योद्िाओंके साथ देवी सेयुद् ि करनेके शलए आया और उसनेदेवी को चारों ओर सेघेर शलया। बक्षल हजारों हाधथयों और घोड़ों की सेना के साथ आया। ववाल असुर पंहि सौ आयुिों के साथ देवी का नाश करनेके शलए आया। महहषासुर के द्वारा लाए ए रथों, घोड़ों तथा पैदल योद्िाओंकी संख्या की तो कोई धर्नती ही न थी। वे। इतनेअधिक थेकक सारा संसार उनको सभाँल पानेहेतुपयाप्ात न था। लेककन देवी अपने शेर के साथ अकेली युद् किर रही थी।

तत्मपश्चात महहषासुर स्वयंकरोड़ों हाधथयों, घोड़ों, आयुिों तथा योद्िाओंके सहहत देवी को समाप्त करनेके शलए आया। उनमें सेकुछ नेदेवी के ऊपर आग्नेयास्त्र छोड़े, कुछ नेखड्ग से, कुछ नेतलवार सेआक्रमण ककया तथा कुछ नेदेवी पर पाश छोड़े। देवी ने उन सबको खेल ही खेल में एक क्षण में ही नष्ट कर हदया। देवी ने असुरों के ऊपर हदव्यास्त्र छोड़ेजजससेकक बहुत बड़ी राक्षस सेना पलक झपकतेही भूशम पर धर्र ई। जजस प्रकार वन में अजग्नदेव होते हैं, उसी प्रकार महहषासुर अपनेसभी अस्त्र-शस्त्रों सहहत देवी के शेर पर टूट पड़ा। देवी की प्रत्मयेक श्वास सेअसंख्य योद्िा बाहर आतेथेऔर असुरों के ऊपर टूट पड़तेथेऔर उन्हें भूशम पर धचर तनिा में सुला देतेथे। देवी ने अपना शंख बजाया जजसकी ध्वतन सेककतनेही असुरों के हृदय ववदीण ाहो ए। त्रत्रशूलों, चक्रों, भाले तथा अन्य हदव्यास्त्रों के द्वारा देवी ने सभी असुरों को तनदायतापूवका मार कर फेंक हदया। वहााँभूशम पर असुरों के मृत शरीरों के अनेक पहाड़ पड़े थे ेऔर इन पहाड़ों में सेरक्त की नहदया ाँबह रही थीं। कुछ असुर दो भार्ों में कट ए थे ेतथा कुछ के शसर फूट ए थे। कुछ असुर संज्ञाशून्य हो ए थे े तथा कुछ के टुकड़े-टुकड़ेहो ए थे। जजनको बुरी तरह मार पड़ी थी, वेरक्त वमन कर रहे थे। असुरों

केअसंख्यशसरत्रबखरे पड़े थे, जजनमें से कुछ के नेत्र थे तथा कुछ नेत्रववहीन थे। देवी के भयंकर शसंहं नेअसुरोंकीजंघाऐें चीर कर उनका जी भर कर रक्त वपया। असुरों के सेनानायक मारे एं। सभी हाथी,घोड़ेऔररथ टुकड़े-टुकड़े हो एं थे। देवी असुरों के पवता के मध्य सूय ाके समान देदीप्यमान होरहीथीऔरदेवताओं ने आकाश से पुष्प वषा ाकी।

तृतीयोऽध्यायः

य्ानम् ्

ॐ उद्यद्भानुसहरकाण्न्तमरुणक्षौमां शिरोमाशलकां
रकताशलप्तपयोिरां ि पवटीं प्रवद्यामभीततं ंवरम् ्।
हस्ताब्ि दितीं बरनेरप्रवलसद्वकरारप्रवन्दधश्रयं
देवीं बद्हिहमांिुरत्िमुकुटां वन्देऽरप्रवन्दण्स्त्रताम् ्।।

'ॐ' ऋप्रषरुवाच ॥ १ ॥

तनहन्यमानं तत्स न्यमवलोकय महासुरैः ।
सेनानीण्श्चक्षुरैः कोपाद्ययौ योदिुमिर्ण्म्बकाम् ् ॥२ ॥
स देवीं िरवषेण ववष ासमरेऽसुरैः ।
यरा मेरुधगरैः ृिङ्गं तोयवषेण तोयदैः ॥३॥
तस्त्यण्च्छत्वा ततो देवी लीलय व िरोत्करान् ्।
घिान तुरगान् ्बाण यन्तारं च व वाण्निाम् ्॥४ ॥
धचच्छेद च िनुैः सद्यो व्िचोततसमुण्च्तिम् ्।
प्रवव्यािा च व गारेषु तच्छन्निन्वानमिुग ैः ।। ५।।
सण्च्छन्निन्वा प्रवररो हताश्वो हतसारधरैः ।
अभ्यािावत तां देवीं खड्गचमािरोऽसुरैः ॥६॥
शसंहंमाहत्य खड्गेन तीक्ष्णिारेण मूितान ।
आिघान भुिे सव्ये देवीमप्यततवेगवान् ्॥७॥
तस्त्यौः खड्गो भुिं प्राप्य पफाल नृपृनन्दन ।
ततो िग्राह ूिलं स कोपादरुणलोचनैः ॥८ ॥

धचक्षेप च ततस्त्तत्तु ु भर्द्काल्यां महासुर ैः ।

ाज्विल्यमानं ति ोभी रप्रवबबम्बशमवाम्बरात् ् ।।९ ।।

दृष्टवा तदापतच्छूलं देवी िूल ममुञ् चत ।

। तच्छूलंितितेननीतंसचमहासुरैः।।१०।।

हते तण्स्त्मन्महावीये महहषस्त्य चमूप तौ ।

िओगाम गिारूढश्चामरण्स्त्रदिदानैः ।। ११ ।।

सोऽप्रप िण्कतंमुमोचार्देव्यास्त्तामण्म्बकार्द्तुम् ्।

हुंकाराशभहतां भूम ौ पातयामास तनष्प्रभाम् ् ।।१२ ।।

भग्नां िण्कतंतनपतततांदृष्टवाक्रिोसमण्न्वतैः।

धचक्षेप चामरैःूलिबाणस्त्तदप्रपसाण्च्छनत् ्।।१३।।

ततैः शसंहैंःसमुत्पत्यगिकुम्भान्तरेण्स्त्तैः।

बाहुयुर्द्ेनियुयुितेनोच्चण्स्त्रदिररणा।।१४।।

युद्यमानौततस्त्तौतुतस्त्मान्नागान्महींगतौ।

युयुिातेऽततसंरबं्िप्रहाररततदारुणैः।।१५।।

ततो वेगात् ्खमुत्पत्यतनपत्यचमृगृाररणा।

करप्रहारेण शिरश्चामरस्त्यपृरूककृतम् ्।।१६।।

उदग्रश्च रणे देव्याशिलावृकूषाहदशभहातैः।

दन्तमुण्ष्टतल श्च व करालश्चतनपातततैः।।१७।।

देवी कुरुद्ा गदापात श्चूणूयाामासचोद्तिम् ्।

वाष्कलं शभण्न्दपालेन बाणस्त्ताम्रंतर्ान्किम् ्।।१८।।

उग्रास्त्यमुग्र वीयं ं च तर्व च महाहनुम् ् ।

बरनेरा च बस्त्रिूलेनिघानपरमेश्वरी।।१९।।

बबिालस्त्याशसना कायात्पातयामास व शिरैः ।
दुिरं दुमुखं चोभौ िर तनन्ाये यमक्षयम्॥्२०॥
एवं संक्षीयमाणे तु स्त्वसन् ये महहषासुरैः ।
माहहषेण स्त्वरूपेण रासयामास तान् ्गणान्।्।२१॥
कांण्श्चत्तुण्डिप्रहारेण खुरक्षेप स्त्तर्ापरान् ्।
लाङ्गूलताडितांश्चान्याञ्छृङ्गाभ्यां च प्रवदाररतान् ्।।२२ ॥
वेगेन कांण्श्चदपरान्नादेन भ्रमणेन च ।
तनैःश्वासपवनेनान्यान् ्पातयामास भूतले ।।२३॥
तनपात्य प्रमर्ानीकमभ्यिावत सोऽसुरैः ।
शसंहं हन्तुं महादेव्यौः कोपं चक्रे ततोऽण्म्बका ||२४||
सोऽप्रप कोपान्महावीयैःा खुरक्षुण्णमहीतलैः ।
िृङ्गाभ्यां पवतानुच्चांण्श्चक्षेपे च ननाद च ।।२५ ॥
वेगभ्रमणप्रवक्षुण्णा मही तस्त्य व्यिीयता ।
लाङ्गूलेनाहतश्चाण्बिःः प्लावयामास सवतौः ।।२६।।
िुतिृङ्गप्रवशभन्नाश्च खण्िं खण्िं ययुघनौः ।
श्वासातनलास्त्तौः िितो तनपेतुनभासोऽचलौः ।।२७।।
इतत क्रोसमाम्ातमापतन्तं महासुरम् ्।
दृष्टवा सा चण्ण्िका कोपं तद्विाय तदाकरोत् ्||२८ ॥
साज्ञक्षप्त्वा तस्त्य व पािं तं बबन्ि महासुरम् ्।
तत्याि माहहषं रूपं सोऽप्रप बद्िो महामृिे ।।२९।।
ततैः शसंहीऽभवत्सद्यो यावत्तस्त्याण्म्बका शिरैः ।
तछनप्रत्त तावत्पुरुषैः खड्गपाणणरदृश्यत ||३० ।।

तत एवािुपुरुषंदेवीधचच्छेदसायकैः।
तं खड्गचमणाािसिां ःततैःसोऽभून्महाग़ैः।।३१।।
करेण च महाशसंहं तं चकषा ििगा च ।
कषतास्तुकरंदेवीखड्गेनतनरकृन्तत।।३२।।
ततोमहासुरोभूयोमाहहषंवपुराण्स्त्रतैः।
तर् वक्षोभयामासरलोकयंसचराचरम् ्।।३३।।
ततैः कुरुद्ाा िगन्माता चण्ण्किा पानमुत्त मम् ् ।
पपौपुनैःपुनश्चविहासारुणलोचना||३४।।
ननदा चासुर ैः सोऽप्रप बलवीयमा दोद्तैः ।
प्रवषाणाभ्यां च धचक्षेप चण्ण्किां प्रतत भिू रान् ् ।।३५ ।।
साचतान् ्प्रहहतांस्तेनचूणूयान्न्तीरोत्करैः।
उवाच तं महोद्धूत मुख रागाकुलाक्षरम् ् ।।३६ ॥
देव्युवाच।।३७।।
गि ागि ाक्षणं मूढमिु ुयावण्त्पबाम्यहम् ्।
मया त्वतय हतेऽर व गण्षि्यन्न्त्याुदेवतौः।।३८।।
ऋप्रषरुवाच ।। ३९ ।।
एवमुकत्वा समुत्पत्यसाऽऽरूढातंमहासुरम् ्।
पादेनाक्रम्य कण्ठेचिूलेननमतियत् ्||४०।।
ततैः सोऽप्रप पदाऽऽक्रान्तस्तयातनिमुखात्ततैः।
अितानष्क्रान्तं एवासीद् देव्यावीयेणसंवृतैः।।४१।।

अितानष्क्रान्त एवासौ युय्मानो महासुरैः ।
तया महाशसना देव्या शिरण्च्छत्त्वा तनपाततततैः।। ४२ ।।
ततो हाहाकृतं सवं ंद त्यस न्यं ननिा तत् ्।

प्रहष ाच परं िग्मुैः सकला देवतागणौः ||४३ ॥

तुष्टुवुस्त्तां सुरा देवीं सह हदव्य महाप्रषशाभैः ।
गिुगन्ािवपातयो ननृतुश्चाप्सरोगणौः ||४४ ॥

इतत श्रीमाकाण्र्ियिपुराणे सावणणके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये महहषासुरवो नाम तृतीयोऽध्यायः ।।३।।

तृतीय अध्याय

महहषासुर के सेनापतत ने यथासंभव देवी को सताया और देवी के शसंहं को मारने का प्रयास ककया। देवी इस कारण उस पर क्रोधित हो ईं और उन्होंने अपने त्रत्रशूल के एक ही वार से उसका शसर काट हदया और मीलों दूरू फेंक हदया। यह देख कर महहष का साथी चामर अपने अत्मयंत शजक्तशाली आग्नेयास्त्र के साथ आया। लेककन देवी के मुहाँ से तनकली एक ही हुंकार ने उस
आग्नेयास्त्र को भस्मीभूत कर हदया। देवी उछल कर आकाश में चली र्यीं और उसके शसर को एक ही वार में िड़ सेअलर् कर हदया। उसके बाद उदग्र अपने हाथों में अनेक वृक्ूष ले कर आया, देवी को मारने के शलए। देवी क्रिो में भर उठी और तत्मक्षण ही उस दैत्मय को मार िाला। कराल, बक्षल, दुिरा, दुमुखा, वविाल सभी महादेवी के हाथों यमलोक भेज हदए ए।

महहषासुर के सभी सहयोर्ी मारे जा चुकुे थे ेऔर उसके पास देवी के सामने आने के शसवा अन्य कोई सहारा न था। उसने एक भयंकर बैल का रूप िारण कर शलया और देवी को परेशान करने लर्ा। अपनी पूछाँ, सींर्ों तथा खुरों के शजक्तशाली प्रहार के द्वारा उसने भयंकर ध्वतन उत्मपन्न की जजससे कक पृथ्ूवी कापाँ उठी। वह देवी के शसंहं के ऊपर एक ववशाल तलवार ले कर टूट पड़ा और उसे घायल कर हदया। शसंहं भयंकर रूप से दहाड़ा और क्षण भर में महहषासुर ने देखा कक उसके पैरों को शेर ने चीर िाला है। महहष की पूछाँ के एक वार से समिु आकाश में तछतर जाते थे और ऐसा प्रतीत होता था जैसे कक इस संसार का अब अन्त होने ही वाला है। उसके सींर्ों के वार से बादलों के टुकड़े-टुकड़े हो जाते थे और वे चारों हदशाओं में तछतर जाते थे। पृथ्ूवी उसके खुरुों से टुकड़ों में ववभक्त हो ई थी और यह दृश्य अत्मयंत भयावना था। जब देवी उसको मारने के शलए आई तो उसने शसंहं का रूप िारण कर शलया और देवी के ऊपर टूट पड़ा। तत्मक्षण ही उसने रूप बदल कर राक्षस का रूप िारण कर शलया और तलवार ले कर देवी के ऊपर टूट पड़ा। देवी ने उस के ऊपर अस्त्रों से प्रहार ककया; ककंतु उसने तत्मक्षण हाथी का रूप िारण कर शलया और देवी के ऊपर टूट पड़ा। लेककन देवी के शसंहं ने हाथी के ऊपर आक्रमण कर हदया और तत्मक्षण उस असुर ने भसैं का रूप िारण कर शलया। उसके बाद तीनों लोकों की माता ने उसकी ओर अपनी लाल-लाल आखाँों से देखा और एक बार कफर दहाड़ीं और बोली, "अरे दुषुट असुर, तेरा अन्त अब तनकट है। म ैंआनंदपूवका तेरा रक्त वपऊाँर्ी। आ! अब म ैंदेवों को प्रसन्न करूाँर्ी।"

ऋवष कहते हैं: ऐसा कह कर देवी ने उसका र्ला पकड़ा और उसके पैरों को पकड़ कर दो भार्ों में चीर िाला। महहषासुर के मारे जाने पर असुर सेना में हाहाकार मच र्या। देवताओं में बड़ा ही आनंद हुआ। देवताओं ने देवी की ववजय तथा यश की प्रशंसा की। र्ंवि ार्ने लर्े और अप्सराएं ं नृत्ूमय करने लर्ीं।

चतुथोऽध्यायः

य्ानम् ्

ॐ कालाभ्राभां कटाक्षरररकुलभयदां मौशलबर्दन्दुिरेखां
खिं चक्ंरं कृपाणं बरशिखमप्रप कर रुद्वहन्तीं बरनेराम् ्।
शसंहंस्त्कन््ाधिरूढां बरभुवनमणखलं तिेसा पूरयन्तीं
य्ायेद् दुगुां ियाख्यां बरदिपररवृतां सेप्रवतां शसद्धिकामैः।।

'ॐ' ऋप्रषरुवाच ॥ १ ॥

क्रिादयैः सुर गणा तनहतेऽ ततवीये
तण्स्त्मन्दुरुात्मतनसुराररबलेचदेव्या।
तां तुष्टुवुैःप्रणततनप्रशिरिोरांसा
वाण्भैः प्रहषपुालकोद्गमचारुदेहौः॥२॥
देव्या यया ततशमदंगिदात्मिकत्या
तनर्शेषिदैवगणिण्कतसमूहमूत्याा।
तामण्म्बकामणखलदेवमहप्रषपूज्यां

भकत्या नतौः स्त्म प्रवदिातु िुभातनसानैः॥३॥

यस्त्यौः प्रभवमतुलं भगवानननन्तो
ब्रह्मा हरश्च न हह वकतुमलं बलंच।
सा चण्ण्किाणखलिगत्पररपालनाय
नािाय चिािुभभयस्त्य मततं ्करोतु||४॥

या श्रीः स्त्वयं सुकृततनां भवनेष्वलक्ष्ममीः
पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः।
श्रद्ा सितां कुलिनप्रभवस्त्य लज्ाा
तां त्वां नतौः स्त्म पररपालय देप्रव प्रवश्वम् ्।।५।।

ककं वणया ाम तव रूपमधचन्त्यमेत त् ्
ककंचाततवीयमासुरक्षयकाररभूरर।
ककं चाहवेषु चररतातन तवाद्भुत ातन
सवेषुदेव्यसुरदेवगणाहदकेषु॥६॥
हेतुः समस्तिगतां बरगुण ाप्रप दोप-
ना ज्ञायसे हररहराहदशभरप्यपारा ।
सवाश्रायाणखलशमदंगिदंभूत-
मव्याकृता हह परमा प्रकृततस्त्वमाद्या ।। ५।।
यस्त्यौः समस्तसुर ता समुद ीरणेन
तृणॢ प्तं प्रयातत सकलेषु मखेषु देप्रव ।
स्त्वाहाशस व प्रपतृगृ णस्त्य च तृणॢ प्तहेतु-

रुच्चायसो त्वमतएविनैःस्त्विाच॥८॥

या मुण् कतहेतुर प्रवधचन्त्यमहाव्रता त्व-
मभ्यस्त्यसे सुत नयतेण् न्द्र्यतत्त्वसारैः ।
मोक्षाधर्शाभमुतानशभरस्तसमस्तदोप-
प्रवद्याशस साभगवतीपरमाहहदेप्रव।।९।।
ब्दिाण्त्मकासुप्रवमलग्यिुाषांतनिान-
मुद्गीर्रम्यपदपाठवतांचसाम्नाम् ्।
देवी रयी भगवती भवभावनाय
वाताा च सविा गतां परमाततहा न्त्री ||१० ॥
मेिाशसदेप्रवप्रवहदताणखलिास्त्रसारा
दुगुाशासदुगुभावसागरनौरसंगा।
श्रीः कटभाररहृदयककृताधिवासा
गौरी त्वमेविशिमौशलकृतप्रततष्ठा।।११।।
ईपत्सहासममलं पररपूण चा न्द्-
बबम्बानुकारर कनकोत्तमकाण्न्तकान्तम् ्।

अत्यद्भुतंप्रहृतमात्तरुपातरा्प्रप
वकरं प्रवलोकयसहसामहहषासुरेण।।१२।।
दृष्टवा तु देप्रव कुप्रपतं भ्रुकु टीकराल-
मुद् यच्छिांक सदृिच्छप्रव यन्न सद्यैः ।

प्राणान्मुम ोच महहषस्त्तदतीव धचरं ं
क िीव्यतेहहकुप्रपतान्तकदिनोन॥१३॥
देप्रव प्रसीद परमा भवती भवाय
सद्यो प्रविनायशस कोपवती कुलातन ।
प्रवज्ञातमेतदुिनवयदस्त्तमेत-
न् नीतंबलंसुप्रवपुलंमहहषासुरस्त्य।।१४।।
ते सम्मता िनपदेषु िनातन तेष ां

तेषांयिांशसनचसीदततिमवागैःा ।
न्यिास्त्त एव तनभृत ात्मिभृत् यदारा
येषां सदाभ्युद यदा भवती प्रसन्ना ।।१५।।
म्यिाणा ण देप्रव सकलातन सदव कमाा-
ण्यत्यादृतैः प्रततहदनं सुकृ ती करोतत ।
स्त्वगा प्रयातत च ततो भवतीप्रसादा-
लोकरयेऽप्रप फलदा ननु देप्रव तेन ।।१६ ।।
दुगे स्त्मृताहरशसभीततमिेषिन्तोः
स्त्वस्त्र् : स्त्मृतामततमतीविुभांददाशस।
दाररद्र्यदुःु खभयहाररणण का त्वदन्या
सवोपकारकरणाय सदाऽऽर्द्ाधचत्ता ।।१७।।
एशभहात िगादुपुततसुखंतर्ते
कुवन्ातु नाम नरकायधचरायपापम् ्।
संग्र ाममृत् युम धिगम्य हदवं प्रयान्तु
मत्वेतत नूनमहहतान् ्प्रवतनहंशसदेप्रव।।१८।।

दृष्टव व ककं न भवतीप्रकरोततभस्त्म
सवासुरानररषु यत्प्रहहणोप्रषिस्त्रम् ्।
लोकान् ्प्रयान्तु ररपवोऽप्रपहहिस्त्रपूता
इत्रं् मततभवातत तेष्वप्रप तेऽततसाव्ी।।१९।

खड्गप्रभातनकरप्रवस्त्फुरण स्त्तर्ोग्रैः
र्ूलाग्रकाण्न्ततनवहेन दृर्ोऽसुराणाम् ्।
यन्नागता प्रवलयमंर्ुमहदन्दुखण्र्-
योग्याननं तव प्रवलोकयतां तदेतत् ्॥२०॥

दुवृत्तावृत्तर्मनं तव देप्रव र्ीलं
रूपं तर् तदप्रवधचन्त्यमतुल्यमन्यैः।
वीयं च हन्तृ ृहृतदेवपराक्रमाणां
व ररष्वप्रप प्रकहटत वदयात्वयेत्र्म् ्।।२१।।
केनोपमा भवतुतेऽस्त्यपराक्रमस्त्य
रूपं च र्रुभयकायतातहाररकुर।
धचत्ते कृपा समरतनष्ठुरताचदृष्टा
त्वय्येव देप्रव वरदेभुवनरयेऽप्रप।।२२।।
र लोकयमेतदणखलंररपुनार्नेन
रातं त्वया समरमूर्तानतेऽप्रपहत्वा।
नीता हदवं ररपुगणाभयमप्यपास्त्त-
मस्त्माकमुन् मदसुर ाररभवं नमस्त्ते ।।२३ ।।
र्ूलेन पाहह नो देप्रव पाहह खड्गेन चाण्म्बके ।
घण्टास्त्वनेन नैःपाहह चापज्यातनैःस्त्वनेन च।।२४।।
प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च चण्र्के रक्ष दक्षक्षणे ।
भ्रामणेन ात्मर्ूल स्त्य उत्तरस्त्यां तर्ेश् वरर ।।२५ ॥

सौम्यातन यातनरूपाणणरलोकयेप्रवचरण्न्तते।
यातन चात्यघोोराणणतरक्षास्त्मांस्त्तर्ाभुवम् ्||२६||

खड्गूिल गदादीतन यातन चास्त्राणण तेऽ ण्म्बके ।
करपल्लवसङ्गीतन तरस्त्मान् ् रक्ष सवता ैः ।।२७ ।।
ऋप्रषरुवाच ।। २८ ।।

एवं स्त्तुता सुर हदाव्यैःकुसुमनन्ादनोद्भवैः।
अधचताा िगतां िारी तर्ागन्ानुिलेपनैः।।२९।।
भकत्या समस्त्त ण्स्त्रदिहदाव्यूिपौःस्तुिपूरपता।
प्राह प्रसादसुमुखी समस्त्तान् ्प्रणतान् ्सुरान् ्||३०||
देव्युवाच।।३१।।

प्रव्रयतां बरदिौःसवेयदस्त्मत्तोऽशभवाण्ञ्छतम् ्
(ददाम्यहमततप्रीत्या स्त्तवरेशभैः सुपू ण् िता ।) ।।३२ ।।
देवा ऊचुैः ।। ३३ ।।

भगवत्या कृतं सवं ं न ककंधचदवशिष्यते ।
यदयं तनहतैःरिुरस्त्माकंमहहषासुरैः||३४।।
यहद चाप्रपवरोदेयस्त्त्वयास्त्माकंमहेश्वरर।
संस्त्मृता संस्त्मृतात्वंनोहहंसेर्ौःपरमापदैः।।३५।।

यश्च मत्यैः‌ा स्त्तवरेशभस्त्त्वांस्त्तोष्यत्यमलानने।
तस्त्य प्रवत्तद्धिाप्रवभविनादाराहदसम्पदाम् ्।।३६।।
वृद्धियेऽस्त्मत्प्रसन्ना त्वंभवेर्ौःसवदााण्म्बके।।३७।।

ऋप्रषरुवाच ।। ३८ ।।

इतत प्रसाहदता देविगातोऽरे् ेतरा्ऽऽत्मनैः।

तरे्त्युकत्वा भर्द्कालीबभूवान्तहहताानृपृ।।३९।।

इत्येतत्कधर्तंभूपसम्भूतासायरा्पुरा।

देवी देविरीरेभ्योिगत्रयहहतप्रषणी||४०।।

पुनश्च गौरीदेहासासमुद्भूतायरा्भवत् ्।

विाय दुषुटदत्यानांतरािुम्भतनिुम्भयोः।।४१।।

रक्षणाय च लोकानां देवानामुप काररणी ।

तच्छृणुष्व मयाऽऽख्यातंयरा्वत्कर्याशमते।।४२॥

।। ह्रीं ॐ ।।

इतत श्रीमाकार्ण्ेयिपुराणे सावणणके मन्वन्तरेदेवीमाहात्म्येशक्राहदस्तुततनामा चतुथोऽध्यायः।।४।।

चतुथ ाअध्याय

जब असुर मारे ये तो ब्रह्मा सहहत सभी देव देवी के पास ए और तनन् वचनों में उनका स्तवन ककया:

''उन अंत्र बका को जो संपू ण ा जर्त की आत्ममा की भाताँ त हैं, जो सवव्ा यापक शजक्त हैं, जो सभी का संर क्षण करती हैं तथा जो सभी ऋवषयों और देवताओं के द्वारा पूज जत हैं, उनको हम प्रणाम करते हैं। वे हम सभी पर अपने आशीवादा की वषाा करें। जजनके अनुप म प्रभाव का वणना करने में ब्रह्मा, ववष्णु ु तथा शशव भी समथा नहीं हैं। उन चंडंकिा देवी को जो समस्त जर्त की माता हैं, जो पुण् यात्ममाओं के घर में स्वयं ही लक्ष्मी रूप से, पावपयों के घर में दररिता रूप में तनवास करती हैं, हम प्रणाम करते हैं।''

''उन जन्माता, देवी माँ को हम भजक्तपूव का प्रणाम करते हैं। हे देवव, हम आपको कैसे प्रसन्न कर सकते हैं? परा प्रकृतत, सवव्ा यापक देवी आप तीनों जर्त का कारण हैं। आप मोक्ष हैं। आप ववद्या हैं, जो मोक्ष प्रदान करती हैं। आप ऋक्, यजु और साम हैं। आप दुुःखों का नाश करने वाली हैं। हे देवव, आप बुद् धि हैं। आप सभी शास्त्रों का सार हैं। आप दुर् ाा हैं जो इस संस ार सार्र को पार करने के शलए एक नाव हैं। आप र्ौरी, लक्ष्मी, सरस्वती हैं! आप ककतनी सुंद र और ककतनी भयंक र हैं। आप िन्य हैं। वास्तव में वे भक्त ककतने भाग्यशाली हैं जजनके ऊपर सदा आपकी कृपावृजृ ष्ट होती रहती है, और उन्हें क्या चाहहए। आपके स्मरण मात्र से हे दुर् ाा!ा आप भक्त को मोक्ष प्रदान करती हैं। आप उनके भय का नाश करती हैं, उन्हें बुद् धि प्रदान करती हैं, उनकी तनिना ता का उन्मूलनकरतीहैं।आपइतनीदयालुहैं,ककहेदेवीआपजीवोंकोस्वर्ादेतीहैं।हेदेवी,आपको बारंबार प्रणाम है। आपने असुर ों का नाश ककया है तथा संपू ण ा जर्त के शलए शांत त लाई हैं। इतने महान काया करना आसान नहीं है। हे देवव, हमारी रक्षा करें, आप हमारी चारों ओर से, आर्े से, पीछे से, दायें से, बायें से, ऊपर से, नीचे से रक्षा करें।"

इस प्रकार देवों के स्तवन तथा षिोशोपचार पूज ा से प्रसन्न कर देवी ने मुस् कराते हुए कहा, “हे देवताओ! मैं प्रसन्न हूाँ, आप मुझ से एक वरदान मार्ाँ ें, मैं आप को प्रदान करूंर्ी।" देवताओं ने कहा, “हे देवव, ऐसा कोई काया नहीं है जो आपने हमारे शलए नहीं ककया। आपने महहषासुर को मारा। यहद आप हमें वरदान देना चाहती हैं तो यह दीजजए कक जब-जब हम आपका स्मरण करें, तब आप यहााँ आ कर हमारे कष्टों का तनवारण करें। जो भी उपरोक्त प्रकार से आपकी स्तुत त करें वह सदा समृद् धिशाली रहें।" ऋवष बोले : देवताओं के द्वारा स्तोत्रों से इस प्रकार देवी प्रसन्न हुई और उन्होंने

तथास्तुकहाऔर वे अन्तिाना हो ईं। इस प्रकार मनैं तीनों लोकों की वप्रय माता की महहमामय कथातुहेंसुनाई। पुनः उन्होंने ऱ्ौरी के रूप में शुभ और तनशुंभ के वि के शलए, पृथ्वूी पर िम ाकी
स्थापनाकेशलए और देवताओं की सहायता के शलए जन्म शलया। अब मुझसे वे कहातनया ाँसुनो।

अथ उत्तरचररतम् ्

पञ्चमोऽध्यायः

प्रवतनयोगैः

ॐ अस्त्य श्रीउत्तरचरररस्त्य रुर्द्ऋप्रषैः, महासरस्त्वतीदेवता, अनुष्टुप् ्छन्दैः, भीमा िण्कतैः, भ्रामरी बिीम्, ् सूयस्त्ातत्त्वम्, ् सामवेदैः स्त्वरूपम्, ् महासरस्त्वतीप्रीत्यरे् उत्तरचरररपाठे प्रवतनयोगैः।

य्ानम् ्

ॐ घण्टिूलहलातन िंखमुसले चक्रंं िनुैः सायकं
हस्त्ताब्र्दिाती घनान्तप्रवलसच्छीतांितुल्यिप्रभाम् ्।
गौरीदेहसमुद्भवां बरिगतामिाारभूतां महा-
पूवामार सरस्त्वतीमनुर्भिेम्भाहदद त्याहदानीम् ्।।
'ॐ कलीं'ऋप्रषरुवाच॥।१॥

पुरा िुम्भतनुिम्भाभ्यामसुराभ्यांिचीपतैः।
रलोकयं यज्ञभागाश्चहृतामदबलाश्रयात् ्॥२॥
तावेव सूयतांांतद्वदधिकारंतन्र्दवम् ्।
कौबेरमर् याम्यंचचक्रातेवरुणस्त्यच॥३॥
तावेव पवनद्धिं ंचचक्रतुवण्ाह्नकमाच।
ततो देवा प्रवतनूतााभ्रष्टराज्यौःपराण्तिौः॥।४॥
हृताधिकाराण्स्त्रदिास्त्ताभ्यां सवे तनराकृतौः ।
महासुराभ्यां तां देवींसंस्त्मरन्त्यपराण्तिाम् ्।।५।।

तयास्त्माकं वरो दत्तोयरा्ऽऽपत्सुस्त्मृताणखलौः।
भवतां नितयष्याशमतत्क्षणात्परमापदैः॥६॥
इतत कृत्वा मततं ंदेवाहहमवन्तंनगेश्वरम् ्।
ग्मिुस्त्तर ततो देवींप्रवष्णुमुायांप्रतुष्टुवुः॥७॥
देवा ऊचुः ॥८ ॥
नमो देव्य महादेव्य शिवाय सततं नमैः ।
नमैः प्रकृत्यभर्द्ायतनयतौःप्रणतौःस्त्मताम् ्।।९।।
रौर्द्ाय नमो तनत्याय गौयै ि ात्र्य नमो नमैः ।
ज्योत्स्त्नायचेन्दुरूप्रपण्यसुखायसततंनमैः||१०||
कल्याण्य प्रणतां वृद्ध्य शसद्य कुमो नमो नमैः ।
न ऋात्यभूभृतांलक्ष्मम्यिवाण्ायतेनमोनमैः।।११।।

दुगु ाया दुगु पा ाराय साराय सवका ाररण्य ।
ख्यात्य तर्व कृष्णाय ि ूम्र ाय सततं नमैः ।।१२।।
अततसौम्याततरौर्द्ाय नतास्त्तस्त्य नमो नमैः ।
नमो ि गत्प्रततष्ठायदेव्यकृत्यनमोनमैः।।१३।।
या देवी सवभूातेषुप्रवष्णुमायेततिण्ब्दता।
नमस्त्तस्त्य , नमस्त्तस्त्य,नमस्त्तस्त्यनमोनमैः।।१४-१६।।
या देवी सवभूातेषुचेतनेत्यशभीयते।
नमस्त्तस्त्य , नमस्त्तस्त्य,नमस्त्तस्त्यनमोनमैः।।१७-१९।।।
या देवी सवभूातेषुबुद्धिरूपेणसंण्स्त्र्ता।
नमस्त्तस्त्य , नमस्त्तस्त्य,नमस्त्तस्त्यनमोनमैः।।२०-२२।।

या देवी सवभूातेषुतनर्द्ारूपेण संण्स्त्रता ।

नमस्त्तस्त्य , नमस्त्तस्त्य , नमस्त्तस्त्य नमो नमैः ।।२३-२५ ।।

या देवी सवभूातेषुक्षिुारूपेण संण्स्त्रता ।

नमस्त्तस्त्य , नमस्त्तस्त्य,नमस्त्तस्त्य नमो नमैः ।।२६-२८ ।।

या देवी सवभूातेषुछायारूपेण संण्स्त्रता ।

नमस्त्तस्त्य , नमस्त्तस्त्य,नमस्त्तस्त्य नमो नमैः ।।२९-३१।।

या देवी सवभूातेषिुण्कतरूपेण संण्स्त्रता ।

नमस्त्तस्त्य , नमस्त्तस्त्य,नमस्त्तस्त्य नमो नमैः ।।३२-३४।।

या देवी सवभूातेषुतृष्र्णारूपेण संण्स्त्रता ।

नमस्त्तस्त्य , नमस्त्तस्त्य,नमस्त्तस्त्य नमो नमैः ।।३५-३७।।

या देवी सवभूातेषुक्षाण्न्तरूपेण संण्स्त्रता ।

नमस्त्तस्त्य , नमस्त्तस्त्य,नमस्त्तस्त्य नमो नमैः ।।३८-४० ।।

या देवी सवभूातेषिुाततरूपेण संण्स्त्रता ।

नमस्त्तस्त्य , नमस्त्तस्त्य,नमस्त्तस्त्य नमो नमैः ।।४१-४३ ।।

या देवी सवभूातेषुलज्ारूिपेण संण्स्त्रता ।

नमस्त्तस्त्य , नमस्त्तस्त्य,नमस्त्तस्त्य नमो नमैः ।।४४-४६ ।।

या देवी सवभूातेषिुाण्न्तरूपेण संण्स्त्रता ।

नमस्त्तस्त्य , नमस्त्तस्त्य,नमस्त्तस्त्य नमो नमैः ।।४७-४९।।

या देवी सवभूातेषुश्रद्ारूिपेण संण्स्त्रता ।

नमस्त्तस्त्य , नमस्त्तस्त्य,नमस्त्तस्त्य नमो नमैः ।।५०-५२।।

या देवी सवभूातेषुकाण्न्तरूपेण संण्स्त्रता ।

नमस्त्तस्त्य , नमस्त्तस्त्य,नमस्त्तस्त्य नमो नमैः ।।५३-५५।।

या देवी सवभूातेषुलक्ष्ममीरूपेणसंण्स्त्रता।
नमस्त्तस्त्य , नमस्त्तस्त्य,नमस्त्तस्त्यनमोनमैः।।५६-५८।।

या देवी सवभूातेषुवृपूरत्तरूपेणसंण्स्त्रता।
नमस्त्तस्त्य , नमस्त्तस्त्य,नमस्त्तस्त्यनमोनमैः।।५९-६१।।

या देवी सवभूातेषुस्त्मृतृतरूपेणसंण्स्त्रता।
नमस्त्तस्त्य , नमस्त्तस्त्य,नमस्त्तस्त्यनमोनमैः।।६२-६४।।

या देवी सवभूातेषुदयारूपेणसंण्स्त्रता।
नमस्त्तस्त्य , नमस्त्तस्त्य,नमस्त्तस्त्यनमोनमैः।।६५-६७।।

या देवी सवभूातेषुतुण्ष्टरूपेणसंण्स्त्रता।
नमस्त्तस्त्य , नमस्त्तस्त्य,नमस्त्तस्त्यनमोनमैः।।६८-७०।।

या देवी सवभूातेषुमातृरूपेणसंण्स्त्रता।
नमस्त्तस्त्य , नमस्त्तस्त्य,नमस्त्तस्त्यनमोनमैः।।७१-७३।।

या देवी सवभूातेषुभ्राण्न्तरूपेणसंण्स्त्रता।
नमस्त्तस्त्य , नमस्त्तस्त्य,नमस्त्तस्त्यनमोनमैः।।७४-७६।।

इण्न्द्र्याणामधिष्ठारी भूत ानां चाणखलेषु या ।
भूतेषु सततं तस्त्य व्याण्प्तदेव्यनमोनमैः॥७७॥

धचततरूपेण या कृत्स्त्नमेतद्व्याप्यण्स्त्रितागत् ्।
नमस्त्तस्त्य , नमस्त्तस्त्य , नमस्त्तस्त्यनमोनमैः।।७८-८०।।

स्त्तुता सुर ैः पूवमाभीष्टसंश्रयात्तर्ासुरेन्रे्देणहदनेषुसेप्रवता।
करोतु सा नैः िुभहेतुरीश्वरी िुभातनभर्द्ाण्यशभहन्तुचापदैः।।८१।।

या साम्प्रतं चोद्तिद त्यताप्रपतरस्त्माशभरीषाचसुरनमास्त्यते।
या च स्त्मृतृा तत्क्षणमेव हण्न्त नैःसवाापदोभण्कतप्रवनप्रमूततशाभैः।।८२।।

ऋप्रषरुवाच ।।८३।।

एवं स्त्तवाहदयुकतानां देवानांतरपावती।
स्त्नातुमभ्याययी तोये िाह्नव्यानृपृनन्दन||८४॥

साब्रवीत्तान् ् सुर ान् ् सुभूरू भ वा द्शभैः स्तूय तेऽ र का ।
र्ीरकिोतश्चास्त्यौः समुद्भूताब्रवीण्च्छवा।।८५।।
स्त्तोरं मम तत् ्कक्रयतुिम्भदत्यतनराकृतैः।
देव ैः समेत ैः समरेतनुिम्भेनपराण्तैः॥८६॥
र्ीरकिोद्यत्तस्त्यौः पावत्ा या तनैःसृतृ ाण्म्बका ।
कौशिकीतत समस्त्तेषु ततो लोकेषु गीयते ॥ ८७ ॥
तस्त्यांप्रवतनगताायांतुकृष्णाभूत्साप्रपपावती।
काशलकेततसमाख्याताहहमाचलकृताश्रया॥८८॥
ततोऽण्म्बकां परं रूपं बबभ्राणां सुम नोहरम् ् ।
ददि ाचण्ामुिण्श्चभृत्यािुम्भतनुिम्भयो।८९॥
ताभ्यांिुम्भायचाख्याताअतीवसुमनोहरा।
काप्यास्त्ते स्त्री महारिा भासयन्ती हहमाचलम् ् ॥९० ॥
न वतादृक्कवधचर्दूपूंदृष्टंकेनधचदुत्तमम् ्।
ज्ञायतां ं काप्यसौ देवी गृह्य यतां चासुरे श्वर ।।९१ ।।
स्त्रीरत्नमततचावङ्ग गी द्योतयन्ती हदिण्स्त्त्वषा ।
सा तु ततष्ठतत द त्येन्र्द्तांभवान् ्र्द्ष्टुमहातत।।९२।
यातन रत्नातनमणयोगिाश्चादीतनवप्रभो
र लोकये तु समस्त्तातनसाम्प्रतंभाण्न्ततेगृहे।।९३॥

ऐरावतैः समानीतोगिरत्नंपुरन्दरात् ्।
पाररिततरुश्चायं तर्वोच्चैःश्रवा हयैः।।९४।।
प्रवमानं हंससंयुकतमेतप्रत्तष्ठतततेऽङ्गणे।
रत्नभूतशमहानीतंयदासीद्विसोऽद्भुतम् ्।।९५।।

तनधिरेष महापरौः समानीतो िनेश् वरात् ् ।
ककञ्ण्ल्किर्नी ददौ चाण्ब्मिाला ाम्म्लानपंक िाम् ् ।।९६ ।।
छरं ते वारुणं गेहे काञ्चनराप्रव ततष्ठतत ।
तर्ायं स्त्यन्दनवरो यैः पुर ाऽऽसीत्प्रिापतैः ।। ९७ ।।
मृत्ु योरुत्क्राण्न्तदा नाम िण्कतर्री त्वया हृता ।
पिौः सशललरिास्त्यभ्रातुस्त्तवपररग्रहे||९८||
तनिुम्भस्त्याण्ब्धीतिाश्चसमस्त्तारत्निातयैः।
वण्ह्नरप्रप ददौ तुभ्यमण्ग्निौचेचवाससी||९९||
एवं द त्येन्द्द् रत्नातनसमस्त्तान्याहृतातनते।
स्त्रीरत्नमेषा कल्याणी त्वयाकस्त्मान्नगृह्यते।।१००।
ऋप्रषरुवाच ।। १०१ ।
तनिम्येतत वचैः िुम् भैः स तदा चण्मिुण् ियौः ।
प्रेष यामास सुग्र ीवं दूतूं देव्या महासुर म् ् ।। १०२ ।।
इतत चेततचवकतव्यासागत्वावचनान्मम।
यर्ा चाभ्येततसम्प्रीत्यातर्ाकायात्वयालघु।।१०३।।
स तरगत्वायरास्त्तिलोद्दिऽततिोभने।
सा देवी तांततैःप्राहश्लक्ष्मणंमिुरयाधगरा।।१०४।।

दूतूउवाच।।१०५॥

देप्रव द त्येश्वरैःुम्भिस्त्रलोकयेपरमेश्वरैः।

दूतूोऽहं पे्रेप्रषतस्त्तेनत्वत्सकािशमहागतैः।।१०६।।

अव्याहताज्ञैः सवासुा यैः सदा देवयोतनषु ।

तनण्तिा ाणखलदत्याररैः स यदाह िृणुु ष् व तत् ् ।।१०७ ।।

मम रलोकयमणखलं मम देवा विानुग ौः ।

यज्ञभागानहंसवानुापाश्नाशमपृ्रृक्पृ्रृक्।।१०८।।

र लोकयेवररत्नातनममवश्यान्यैषतैः।

तर् व गिरत्नंचहृत्वादेवेन्द्राहनम् ्।।१०९।।

क्षीरोदमर्नोद्धूतमश्वरत्नंममामरैः।

उच्च ैःश्रवससंज्ञं तत्प्रणणपत्यसमप्रपताम् ्।।११०।।

यातन चान्यातनदेवेषुगन्विेषूरगेषुच।

रत्नभूतातन भूतातनतातनमय्येविोभने।।१११।।

स्त्रीरत्नभूतां त्वांदेप्रवलोकेमन्यामहेवयम् ्।

सा त्वमस्मानुपागच्छयतोरत्नभिुोवयम् ्।।११२।।

मां वा ममानिुंवाप्रपतनिुम्भमुरुप्रवक्रमम् ्।

भि त्वं चञ्चलापाङ्धगरत्नभूताशसवयतैः।।११३।।

परम श्वयमातुलंप्राप्स्त्यसेमत्पररग्रहात् ्।

एतद् बुद्‌या समालोच्यमत्पररग्रहतांव्रि।।११४।।

ऋप्रषरुवाच ।। ११५ ।

इत्युकता सा तदादेवीगम्भीरान्तैःण्स्त्मतिागौ।
दुगुा ाभगवती भर्द्ाययेदंयितो गित्।्।११६।।

देव्युवाच।।११७।।

सत्यमुकतं त्वया नारशमथ्याककंधचत्त्वयोहदतम् ्।
र लोकयाधिपततैः िुम्भोतनिुम्भश्चाप्रपतादिृः।।११८।।
ककं त्वर यत्प्रततज्ञातंशमथ्यातण्त्क्रयतेकर्म् ्।
श्रूयतामल्पबुद्धित्वात्प्रततज्ञायाकृतापुरा।।११९।।
यो मां ियततसंग्रामेयोमे ेदपाव्यपोहतत।
यो मे प्रततबलोलोकेसमेभतााभप्रवष्यतत।।१२०।।
तदागच्छतुिम्भोऽरतनिुम्भोवामहासुरैः।
मां ण्त्विा ककंधचरेणारपाणणं ंगृह्णातुमेलघु।।१२१।।
दूतूउवाच।।१२२।।

अवशलप्ताशस मवं त्वं देप्रव बूरूह ह ममाग्रतैः ।
र लोकये कैः पुमांण्स्त्तष्ठेदग्ेरुिम्भतनिुम्भयौः।।१२३।।

अन्येषामप्रप दत्यानां सवे देवा न व युध ि ।
ततष्ठण्न्त सम्मुखेदेप्रवककंपुनैःस्त्रीत्वमेकतका।।१२४।।
इन्र्द्ाद्यौः सकला देवास्त्तस्त्रुये षां न संयु गे ।
ुम्भादीनां कर्ंतेषांस्त्रीप्रयास्त्यशससम्मुखम् ्।।१२५।।
सा त्वं ंगच्छमयवोकतापाश्विुम्भतनिुम्भयौः।
केिाकषणातनूतिागौरवामागशमष्यशस।।१२६।।

देव्युवाच।।१२७।।

एवमेतद् बलिीुम्भोतनिुम्भश्चाततवीयवाान् ्।
ककं करोशम प्रततज्ञामेयदनालोधचतापुरा ।।१२८ ।।
सत्वं गच्छमयोकतंतेयदेतत्सवमाादृतैः ।

तदाचक्ष्मवासुरेन्द्ायसचयुकतंकरोतुतत् ्।। १२९ ।।

।। ॐ ।।

इतत श्रीमाकाण्र्येयिपुराणे सावणणके मन्वन्तरेदेवीमाहात्म्येदेव्या दूतूसंवादो नाम पञ्चमोऽध्यायः

।। ५।।

उत्तर चररतम् ्

पंचमअध्याय

ऋवष कहते हैं : पूव का ाल में शुंभ तथा तनशुंभ ने कठोर तपस्या करके ब्रह्मा जी से वरदान प्राप्तकरशलयाऔरइंकिहाथोंसेस्वर्ाकाराज्यछीनशलयाऔरतीनोंलोकोंकेस्वामीबनबैठे। उन्होंने सूय , ा यम, वरुण, अजग्न तथा अन्य देवताओं के स्थानों पर तनयंत्र ण कर शलया। वे तो यहााँ तक कक वायु का भी काया करने लर्े, इस कारण देवताओं के पास कोई काया न रहा। असुर तीनों लोकों के रहवाशसयों को परेशान करने लर्े और चारों ओर बेचै न ी हो ई। देवता र्ण बहुत दुःखी हो ए और उन्हें महामाया के वचन का स्मरण हुआ कक उन्होंने देवताओं को वचन हदया था कक जब भी वे आपवत्त में होंर्े और देवी का भजक्तपूव का स्मरण करेंर्े तो वे उनकी सहायता के शलए आएंर्ेर् ी। इस तथ्य का स्मरण करके सभी देवता हहमवान के पास ए और महामाया ववष्णुम ाया से सच्चे हृदय से प्राथना ा की।

देवताओं ने कहा, "देवी मााँ को प्रणाम है। उस महादेवी प्रकृतत, मंर् लमयी मााँ को बारंबार प्रणाम है। रौिा को प्रणाम है। तनत्मया, र्ौरी, ज्योत्मसनामयी देवी को प्रणाम है। उस दुर् ाा को प्रणाम है जोसारा,सवकाारररणी,सवासौंदयमायी,सवारौिस्वरूवपणीहैं।उसदेवीकोप्रणामहैजोसभीप्राणणयों मेंववष्णुमायाकहलातीहै।उसेबारंबारप्रणामहैजोसभीप्राणणयोंमेंचेतनाकेरूपमें,बुद्धिकेरूप में, तनिा के रूप में, क्षुि ा के रूप में, छाया रूप में, प्यास रूप में, शजक्त के रूप में, तृष् णा के रूप में, क्षमा रूप में, जातत के रूप में, लज्जा के रूप में, शांतं त के रूप में, ववश्वास के रूप में, सौंदया के रूप में, समृद् धि के रूप में, प्रयत्मन के रूप में, स्मृतृ त के रूप में, करुणा के रूप में, संत ोष के रूप में, मााँ के रूप में, मोह के रूप में जस्थत हैं। जो देवी इस जर्त को व्याप्त करके जस्थत हैं, उनको बारंबार प्रणाम है। वे देवी हम असहाय देवों पर अपने आशीवादा की वृजृ ष्ट करें।

ऋवष ने कहा : जब देवता स्तुत त कर रहे थे, उसी समय पावता ी जी र्ंर् ाजी के जल में स्नान के शलए वहााँ आईं। उन्होंने देखा कक देवता र्ण स्तुतत कर रहे हैं, तो उन्होंने प्रश्न ककया कक आप ककसकी स्तुत त कर रहे हैं ? जब वे इस प्रकार प्रश्न कर रही थीं ं कक उनके शरीर में से एक अत्मयंत अदभुतआकृततजजसकीकांततअवणनीयथी.प्रर्टहुईऔरउसनेपावतीदेवीसेकहा,"मैंदुर्ााहूाँ, इस जर्त की शजक्त। ये देवता शुंभ -तनशुंभ से पराजजत हो ए हैं और मुझ से सहायता के शलए प्राथना ा कर रहे हैं।" चूाँकक वह पावता ी के कोश से उत्मपन्न हुई थी इसशलए वह कौशशकी कहलाई। महामाया को अपनी सुर क्षा के शलए आयी देख कर देवता र्ण बड़े ही प्रसन्न हुए और उन्होंने देवी को

हाथ जोड़ कर प्रणाम ककया। कल्याणमयी मा ाँने कहा, "आप सभी देवता र्ण अपने-अपने स्थानों को लौट जाय, ें म ैंसब देख लूाँर्ी।" देवता र्ण वापस चले र्ये। और देवी हहमालय पवता पर एक वृकूष के ऊपर बैठी रहीं।

उसके पश्चात संयोर्वश शुंभ-तनशुंभ के भृतूमय चंि तथा मुंि वहा ाँभ्रमण करते. हुए आए, उन्होंने एक परम मनोहर रूप िाररणी स्त्री को वृकूष पर बैठे देखा। वे तत्मकाल अपने स्वामी शुंभ-तनशुंभ के पास दौड़ेचले र्ए और उन्हें बताया कक हहमालय में एक अत्मयंत सुंदर स्त्री है। उसके सौंदय ाका वणना कोई भी नहीं कर सकता है। वह इतनी सुंदर है कक आपके महल की सारी रातनया ाँउसके समक्ष तुच्छ हैं। आपकी समस्त संपवत्त उसके समक्ष कुछ भी नहीं है। आपका र्ौरव उसकी तुलना में कुछ नहीं है। आपकी वीरता उसके सामने कुछ भी नहीं है। आपका राज्य उसके समक्ष कुछ भी नहीं है, आपका अशभमान उसके सामने कुछ भी नहीं है।

वह इन सबसे कहीं अधिक है। वहा ाँजाइये और उसे ले आइये। वही सच्ची संपवत्त है। वह समस्त हहमालय को प्रकाशशत कर रही है। वह स्वर् ाकी समस्त जस्त्रयों के मध्य रत्मन स्वरूप है। हे राक्षसराज! आप स्वयं उसे ेएक बार जा कर देणखये। हे राजन आपने इंिसे ऐरावत हाथी, पाररजात वृकूष, उच्चैश्रैवा अश्व, पुष्पक ववमान तथा तीनों लोकों की समस्त स्पवत्त ले ली है। आप सोम रस, महापद्म तनधि, अमल पंकज की माला जजसके पुष्प कभी मुरझाते नहीं हैं तथा स्वण ातथा रत्मनों से जडड़त छत्र ले आए हैं। आपने ब्रह्मा की शजक्त, वरुण का अख, अजग्न का तेजे छीन शलया है। आप हर एक चीज ले ेआए हैं, लेककन आप इन सब का जो सार है उसे नहीं ंला सके हैं। और वह सार है, हहमालय में वह सुंदर स्त्री।

ऋवष ने कहा : चंि-मुंि के इन शब्दों को सुन कर शुंभ ने अपने महादैत्मय दूतू सुग्रीव को देवी दुर्ा ाको शुंभ की रानी बनने के शलए प्रसन्न करने के शलए भेजा। सुग्रीव ने तत्मकाल हहमालय में देवी के तनवास स्थल हेतु प्रस्थान कर हदया और हहमालय में जहा ाँदुर्ा ाअत्मयंत रमणीय स्थल में जस्थत थीं, वहा ाँजा कर वह देवी से अत्मयंत मिुर तथा कोमल वचन बोला।

दूतू ने कहा, "देवव! असुरों के राजा शुंभ तीनों लोकों के स्वामी हैं। म ैंउनका दूतू उनके द्वारा आपके पास भेजा र्या हूाँ। उन्होंने मेरे द्वारा आपके शलए यह संदेश शभजवाया है कक 'सभी तीनों लोक मेरे हैं। मनैं देवताओं पर ववजय प्राप्त कर ली है। स्पूण ायज्ञों के भार् को म ैंही भोर्ता हूाँ। तीनों लोकों की स्पवत्त मेरी है। म ैंसबका इंि हूाँ। मनैं समिु राज को ववजजत कर शलया है और उसकी संपवत्त छीन ली है। र्ंिवों, देवों, नार्ों, शसद्िों, चारणों की जो भी सप्वत्त है, वह सब मेरी है। मुझे ववश्वास है। कक तुम स्वर् ामें सवाधिक सुंदर स्त्री हो। कृपया मेरे साथ आओ; क्योंकक समस्त स्पदा

और समृद्धिकास्वामीमैंहीहूाँ।तुममेरेसाथअथवामेरेभाईतनशुंभजोककमेरेबराबरही शजक्तशाली है, के साथ वववाह कर सकती हो। इससे तुम तीनों लोकों का स्वाशमत्मव प्राप्त करोर्ी। इस
पर ववचारकरोऔरशीघ्रहीमुझेउत्तरदो'।'

ऋवष बोले : सुग्र ीव की ये बातें सुन कर जर्न्माता, समस्त लोकों का आिार कल्याणमयी देवी मााँ ने मुस् करा कर रं्भ ीर शब्दों में तन्न बातें कहीं, "हा, ाँ हा, ाँ तुम सत्मय कह रहे हो, इसमें कोई संदे ह नहीं है कक शुंभ तीनों लोकों का स्वामी है और तनशुंभ भी उसके समान ही शजक्तशाली है, लेक कन ककया क्या जाए? अज्ञानतावश मनैं एक शपथ ली है, अब मैं उसे कैसे तोड़ सकती हूाँ? जो भी मुझे युद् ि में पराजजत करेर्ा, वही मेर ा पतत होर्ा। इसशलए शुंभ -तनशुंभ यहााँ आयें और मुझे पराजजत करें और सरलतापूव का मेर ा पाणणग्रहण कर लें।" दूतू ने कहा, " अरे मूख ा लड़की! तुम र्लती कर रही हो। तीनों लोकों में ऐसा कौन है जो भयंक र शुंभ -तनशुंभ का सामना करने का साहस भी कर सके ? सभीअसंख्यदेवतार्णभीशुंभकीशजक्तके सामनेठहरनहींपायेतोतुमअकेलीस्त्रीहोकर कैसे ठहर सकती हो। जब इंिशुंभ से युद् ि में पराजजत हो र्या तो तुम एक अनुभ वहीन कन्या क्या कर सकोर्ी? मेरे साथ शुंभ -तनशुंभ के महल चलो, अन्यथा अततशीघ्र तु हें केश पकड़ कर बलपूव का घसीट कर ले जाया जायेर्ा।"

देवी ने कहा, "मैं इस बात से सहमत हूाँ कक शुंभ और तनशुंभ शजक्तशाली हैं। लेक कन मैं अब कुछ नहीं कर सकती। मनैं यह अज्ञानतापूण ा शपथ लंबे समय पहले ले ली थी। अब मैं इसी के अनुसारकायाकरूाँर्ी।कृपाकरकेवापसजाओऔरउनकोयेबातेंबताओ।कफरजैसावेचाहें,उन्हें करने दो।"

षष्ठोऽध्यायः

य्ानम् ्

ॐ नागिीश्वरप्रवष्टरां फणणफणोत्तंसीरुरत्नावली-
भास्त्वद्देहलतां हदवाकरतनभां नेररयोद्धाशसताम् ्।
मालाकुम्भकपालनीरिकरां चन्द्ाधिचूिाांपरां
सवज्ञेश्वरभ रवांकतनलयां पद्मावतीं धचन्तये।।

'ॐ' ऋप्रषरुवाच ।। १ ॥

इत्याकण्या वचो देव्यौः स दूतू ोऽमषपूा र रतैः ।
समाचष्ट समागम्य दत्यराििाय प्रवस्तरात् ् ॥२॥
तस्त्यदूतूस्त्यतद्वाकयमाकण्यासुरराटततैः।
सक्रोिौः प्राह दत्यानामधिपं िूम्र लोचनम् ् ॥३ ॥
हे िूम्र लोचनिु त्वं स्त्वसन्यपररवाररतैः ।
तामानाय बलाद् दुषु टां के िाकषणा प्रवह्वलाम् ् ॥। ४ ॥
तत्पररराणदैः कण्श्चद्यहद वोप्रत्तष्ठतेऽ परैः ।
स हन्तव्योऽमरोवाप्रपयक्षोगन्धिाएववा।।५।।

ऋप्रषरुवाच ।। ६ ।।

तेनाज्ञप्तस्त्ततैःशिीघ्रंसिदत्यिोिूम्रलोचनैः।
वृतैः पष्टयासहराणामसुराणांर्दुतुंययौ॥७॥
स दृष्टवातांततोदेवींतुहहनाचलसंण्स्त्र्ताम् ्।
गिादोच्चैः प्रयाहीतत मूलं िुम् भतनिुम् भयौः ॥८ ॥

न चेत्प्रीत्याद्य भवतीमद्भतारामुपष्यतत।
ततो बलान्नयाम्येष कैाकषणाप्रवह्वलाम् ्।।९।।

देव्युवाच॥१०॥

द त्येश्वरेण प्रहहतोबलवान् ्बलसंवृतृः।
बलान्नयशस मामेवं ततैःककंतेकरोम्यहम् ्।।११।।
ऋप्रषरुवाच ।। १२ ।।

इत्युकतैः सोऽभ्यािवत्तामसुरिूम्रलोचनैः।
हुंकारेण व तं भस्त्म सा चकाराण्म्बकाततैः।।१३।।
अर् कुरुद्मिहास न्यमसुराणांतर्ाण्म्बका।
ववष ासायक स्त्तीक्ष्मण स्त्तर्ाण्कतपरश्वैः।।१४।।
ततो ्िुतसटैः कोपात्कृत्वानादंसुभरवम् ्।
पपातासुरसेनायां शसंहीदेव्यौःस्त्ववाहनैः।।१५।।

कांण् श्चत् ् करप्रहारेण दत्यानास्त्येन चापरान् ् ।
आक्रम्य चािरेणान्यान् ्सिघानमहासुरान् ्।।१६।।
केषांधचत्पाटयामासनखैःकोष्ठातनकेसरी।
तर्ा तलप्रहारेण शिरांशसकृतवान् ्पृर्क्।।१७।।
प्रवण्च्छन्नबाहुशिरसैः कृतास्त्तेन तर्ापरे ।
पपौ च रुधिरं कोष्ठादन्येषांतिकैसरैः।।१८।।
क्षणेन तद्बलं सवं ंक्षयंनीतंमहात्मना।
तेन केसररणा देव्यावाहनेनाततकोप्रपना।।१९।।
श्रुत्वा तमसुरं देव्यातनहतंिम्रलोचनम् ्।
बलं च क्षतयतं कृत्स्त्नंदेवीकेसररणाततैः||२०||

चुकोप द त्याधिपततैः िुम्भैः प्रस्त्फुररतिारैः ।
आज्ञापयामास च तौ चण्मुिण्ड्ि महासुरौ ।। २१ ।।

हे चण्ि हे मुण्ि बिल बह्ुाशभैः पररवाररतौ ।
तर गच्छत गत्वा च सा समानीयतां लघु ।। २२ ।।
किष्वाकृष्य बद्वा वा यहद वैः संयिो युधि ।
तदिोषायिु ैः सवैरसुर प्रवतानहन्यताम् ्।।२३।।
तस्त्यां हतायां दुषुटायां शसंहें च प्रवतनपातततेे ।
शीघ्रमागम्यतां बद्वा गृहीत्वा तामर्ण्म्बकाम् ्।। २४ ।।
।।ॐ ।।

इतत श्रीमाकाण्ड्येयपुराणे सावणणके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये शुभतनशुभसेनानिधूम्रलोचनविो नाम

षष्ठोऽध्यायः ।। ६।।

षष्ठ अध्याय

ऋवष ने कहा : इन शब्दों को सुन कर दूतू को बड़ा ही क्रिो आया। उसने दैत्मयराज के पास जा कर हर बात को बढ़ा-चढ़ा कर कह सुन ाया। असुर राज क्रिो में भर उठा और उसके शलए इसे तनयंत्र त्रत करना कहठन था, उसने तत्मकाल ही अपने सेन ापतत िूम्र लोचन को बुल ाया और कहा, “हे
िूम्रलोचन, तुम अपनी सेन ा सहहत जाओ और उस दुष्ु ट स्त्री को घसीटते हुए खींच कर ले कर आओ। उसकी रक्षा करने के शलए यहद वहााँ कोई र्ंिवि,ा यक्ष अथवा देव हो, जो उसकी रक्षा करने का प्रयत्मन करे, उसे तत्मक्षण मार िालना। "

ऋवषनेकहा:शुंभकेआदेशसेअसुरसेनापततसाठहजारअसुरोंकीसेनालेकरहहमालय
की ओर चल पड़ा। उसने वहााँ देवी को देख कर कहा, “तुम तुरं त शुंभ -तनशुंभ के पास चलो। यहद तुम सरलता से नहीं आओर्ी तो मैं तु् हें केश पकड़ कर घसीटते हुए . ले जाऊाँ र्ा।" देवी ने कहा, "यहद तुम असुर सेन ा के सेन ापतत हो और तु् हारे राजा ने मुझे केश पकड़ कर बलपूव का खींच कर लाने के शलए भेज ा है तो मैं क्या कर सकती हूाँ?"

ऋवष ने कहा : देवी के इन शब्दों को सुन कर असुर िूम्र लोचन उनकी ओर दौड़ा और देवी की हुंकार मात्र से ही वह भस्म में बदल र्या। देवी ने असुर सेन ा पर तीरों की वषाा की। इतने में देवी कावाहनशसंहंजजसप्रकारप्रज्वशलतअजग्नसूखे ेवनमेंफैलतीहैउसीप्रकारवहराक्षसोंकेऊपर
टूट पड़ा। असुर ों के शीश देवी के खड्ग से कट-कट कर धर्र ए और उनके शसंहं के द्वारा ककए र्ए ववनाश की तो कोई सीमा ही नहीं थी, भूशम पर मृत् धर्रे हुए असुर ों के रक्त का उसने पान ककया। एक ही क्षण में वहााँ पूर ी असुर सेन ा नष्ट हो र्ई।

यहसमाचारशुंभकेकानोंतकपहुाँचाऔरउसकेक्रिोकीकोईसीमानरही।वहअपनेहोंठ
काटने लर्ा और उसने अपने ववश्वसनीय सहयोधर्यों चंि-मुंि को इस प्रकार आदेश हदया, "हे चंि! हे मुंि! एक बड़ी सेन ा एकत्रत्रत करके तत्मकाल वहााँ जाओ। उसे मेरे पास ले कर आओ। अधिक देरी मत करो। जल्दी करो। उसको केश से पकड़ कर घसीटते हुए अथवा रजस्सयों से बााँि कर यहााँ ले कर आओ।यहदऐसासंभवनहोतोउसेयुद्िमेंमारिालो।जैसाभीतु्हेंठीकलर्े,वैसाकरना।
उसकेभयंकरशसंहंकोमारदेनाऔरउसे ेबााँि करमेरेपासले ेआना।साराकामबड़ीहीहोशशयारी
से करना। "

सप्तमोऽध्यायः

य्ानम् ्

ॐ य्ायेयं रत्नपीठे ि ुककलपहठतं ि ृणूवर्ती श्यामलाङ्गीं
न्यस्त्त कांति सरिो ि ीशिकलिरां वल्लकीं वादयन्तीम् ्।
कहाराबद्मिालां तनयशमतप्रवलसच्चोशलकां रकतवस्त्रां
मातङ्गीं ि ंखपारां मिुरमिुमदां धचरकोद्भाशसभालाम् ्।।
'ॐ' ऋप्रषरुवाच॥१॥

आज्ञप्तास्त्ते ततो द त्याश्चण्मिुण्पिुरोगमौः ।
चतुरङ्गबलोपेता ययुरभ्युद्यतायुिौः॥२ ॥
ददृिुस्त्ते ततो देवीमीषद्ासिां व्यवण्स्त्ताम् ्।
शसंहंस्त्योपरर ि लेन्द्रृङ्गिे महतत काञ्चने ॥३ ॥
ते दृष्टवा तां ंसमादातुमुद्यमं चकुरुरुद्यतौः ।
आकृष्टचापाशससिरास्त्तर्ान्ये सत्समीपगौः ॥। ४ ॥
ततैः कोपं चकारोच्च रण्म्बका तानरीन् ्प्रतत ।
कोपेन चास्त्या वदनं मषीवणमाभूत्तदा ॥५॥
भ्रुकुटीकुहटलात्तस्त्या ललाटफलकाद्भुतम् ्।
काली करालवदना प्रवतनष्क्रान्ताशसपाशिनी ||६ ॥
प्रवधचरखटवाङ्गिरा नरमालाप्रवभूषणा ।

द्वीप्रपचमपारिीना ि ुष्कमांसाततभ रवा ॥७ ॥

अततप्रवस्त्तारवदना ण्ह्वाललनभीषणा ।
तनमनारकतनयना नादापूररतहदङ्मुखा ॥८ ॥

सा वेगेनाशभपतततााघातयन्तीमहासुरान् ्।
स न्ये तरसुरारीणामभक्षयततद्बलम् ्।।९।।
पाण्ष्णग्राााहांकुिग्राहहयोिघण्टासमण्न्वतान् ्।
समादायकहस्त्तेन मुखे धचक्षेपे वारणान् ् ।।१०।।
तर्व योिं तुर ग रर् सारधर्ना सह ।
तनज्ञक्षप्य वकरे दिनश्चवया न्त्यततभरवम् ् ।। ११ ।।
एकं िग्राह किेषु ग्रीवायामर् चापरम् ् ।
पादेनाक्रम्यचवान्यमुरसान्यमपोर्यत् ्।।१२।।
त मुकातातनचिस्त्राणणमहास्त्राणणतर्ासुरैः।
मुखेनिग्राहरुपादिनमधार्तान्यप्रप।।१३।।
बशलनां तद् बलं सवमा सुर ाणां दुरु ात्मनाम् ् ।
ममदभक्षयच्चान्यानन्यांश्चातियत्तर्ा।।१४।।
अशसना तनहतौः केधचत्केधचत्खटवाङ्गताडितौः ।
ग्मिुप्रवनिाामसुरादन्तााग्राशभहतास्त्तर्ा।।१५।।
क्षणेनतद्बलंसवमासुराणांतनपातततम् ्।
दृष्टवा चण्डिशभदुरुद्ावतांकालीमततभीषणाम् ्॥१६॥
रिवषैमहााभीमभीमाक्षींतांमहासुरौः।
छादयामास चक्रेरेश्च मुण् िैः ज्ञक्षप्तैः सहरैः ।।१७।।
तातन चक्राण्यनेक ातन प्रविमानातन तन्मुख म् ् ।
बभुयर्ााकाप्रवम्बातनसुबहूतनघनोदरम् ्।।१८।।
ततो िहासाततरुपाभीमंभरवनाहदनी।
काली करालवकरान्तदुादिदिनोज्ज्वला।।१९।।

उत्ऱाय च महाशसं ं हं देवी चण्ड्मिावत ।

गृह्यीत्वा चास्त्यकेिषुशिरस्त्तेनाशसनाण्च्छनत् ्||२०||

अर् मुण्डीऽभ्यिावत्तांदृष्टवाचण्तिनिपातततम् ्।

तमप्यपातयद्भूम ौ सा खड्गाशभहतं रुपा ।।२१ ।।

हतिेषं ततैःसन्यंदृष्टवाचण्तिनिपातततम् ्।

मुण्ड् चि सुमहावीयं ंहदिोभिेभयातुरम् ्।।२२।।

शिरश्चण्स्त्यि काली च गृह्य ीत्वा मुण् िमेव च ।

प्राह प्रचण्डाटिटहासशमश्रमभ्येत्यचण्ण्किाम् ्।।२३।।

मया तवारोपहृतौचण्मुिण्ड्मिहापिू।

युद्यिज्ञे स्त्वयंुम्भिंतनिुम्भंचहतनष्यशस।।२४।।

ऋप्रषरुवाच ।। २५ ।।

तावानीतौ ततो दृष्टवा चण्मुिण् िौ महासुर ौ ।

उवाच कालीकल्याणीलशलतंचण्ण्किावचैः।।२६।।

यस्त्माच्चण्ड् चि मुण् िं च गृह्य ीत्वा त्वमुप ागता ।

चामुण्डेति ततोलोकेख्यातादेप्रवभप्रवष्यशस।।२७।।

।।ॐ ।।

इतत श्रीमाकाण्डेयिपुराणे सावणणको मन्वन्तरेदेवीमाहात्म्येचण्मुिण्ड्विोनामसप्तमोऽध्यायः

।।७।।

सप्तम अध्याय

ऋवष कहते है : असुरराज की आज्ञा पा कर चंि-मुंिु के नेतृतूमव में चतुरंधर्नी असुर सेना हहमवान की ओर चल पड़ी। वहा ाँपहुाँच कर उन्होंने शसंहं पर सवार देवी का मंद-मंदं इस प्रकार मुस्कराते देखा जैसे वह उनकी ओर देख कर वं ासे मुस्का रही हो। उन्होंने देवी को तत्मपरता से पकड़ने का उद्योर् ककया। वे देवी के पास आने के शलए तीरों, तलवारों का प्रयोर् करने लरे्। अज्बका उन पर बहुत क्रोधित हो र्यी और उनका वण ास्याही की भाताँत काला पड़ र्या। उसके मस्तक के मध्य से एक ववकराल काली प्रर्ट हुई जो भयंकर अस्त्र िारण ककए थी। देवी का मुख भयंकर था और उनके र्ले में राक्षसों के मुंिों की माला थी। देवी के पास अद्भुत अस्त्र थे और उनका रूप राक्षसों के हृदय को भी ववदीण ाकर देता था। अरे देवी का रूप अत्मयंत भयंकर और कठोर था। कोई भी उसका वणना करने में समथ ानहीं है। देवी ने संपूण ाब्रह्मांि को आवृतूत कर रखा था। देवी के मुख ने पूरे आकाश को आवृतूत कर शलया था और उससे अजग्न की ज्वाला तनकल रही थी। उनकी आखेँ लाल थीं। देवी ने र्जनाा की जजससे असुर कापाँने लरे्। वे असुरों पर टूट पड़ीं और एक-एक बार में हजारों की संख्या में असुरों को नष्ट करने लर्ीं। वे असुरों को अपने भोजन की भाताँत खाने लर्ीं ंऔर वे भी देवी के शलए पयाप्ात न थे। वे ेएक ही बार में हजारों राक्षसों को पकड़ कर उन्हें अपने बृहत मुख में िाल लेती थीं। सेना के नायकों, अनेक अहंकारी रथी तथा महान असुर योद्ाओं को काली ने चबा शलया। रथ के बाद रथ देवी के मुख में प्रवेश करते जा रह थे। उनके दाताँों के द्वारा हाधथयों के बाद हाधथयों का चूण ाहोता जा रहा था। कुछ उन्होंने कंठ से तथा कुछ को केशों के द्वारा पकड़ कर और कुछ को पैरों के द्वारा ठोकर को लर्ा कर पैरों तले रौंद हदया। असुरों के द्वारा छोड़े हुए अस्त्र-शस्त्रों को वे खेल ही खेल में टुकड़े कर िालती थीं। कुछ असुर उनके हाथों से बुरी तरह से पीटें र्ए तथा कुछ उनका भोजन बन र्ए। कुछ उनकी तलवार द्वारा काट िाले र्ए तथा कुछ देवी की दृजष्ट मात्र से ही संज्ञा शून्य हो र्ए। पलक झपकते ही देवी ने राक्षस सेना का नाम कर हदया।

इस भयंकर सेना को देख कर चंि काली की ओर तेजी से दौड़ा। उसने हजारो चक्रों, भाला, तलवारों, पाशों और त्रत्रशूलों से देवी पर आक्रमण ककया। मुंिु ने भी देवी पर चारों ओर से हजारों तीरों की वषा ाकी। ऐसा प्रतीत हो रहा था, जैसे तीरों के बादलों ने सूय ाको आवृतूत कर शलया हो। असुरों के ये काय ादेख कर देवी ने अत्मयंत क्रोि में आ कर भयंकर अट्टहास ककया और चंि की ओर तेजी से े दौड़ीं और उसके केश पकड़ कर अपनी तलवार से उसकी र्दान काट दी । अपने भाई को युद् में मारा र्या देख कर मुंिु अत्मयंत क्रोधित हो कर देवी की ओर दौड़ा। देवी ने उसे भूशम पर धर्रा हदया और उसका शसर काट कर फेंक हदया। चंि तथा मुंिु को भूशम पर मरा देख कर शेष असुर सेना उल्टे

पैरों चारोंहदशाओंमेंभार्खड़ीहुुई।चंतिथा मुंुके शीश अपने हाथों में ले कर दुर्ा ासे कहा, “मनैं चंतिथामुंुकीयुद्मेंबशलदानककया है। अब तुम स्वयं ही शुंभ और तनशुंभ का वि करना।'

ऋवषनेकहा:इसप्रकारचंि-मुंुके शसर लाए जाने पर कल्याणी मा ाँने कहा कक चूाँकक तुम चंि-मुंुकेशसरलाईहो,इसकारणतुम जर्त में चामुंुिा कहलाओर्ी।”

अष्टमोऽध्यायः

य्ानम् ्

ॐ अरुणां करुणातरङ्धगताक्षीं ितृपिाांकिुबाणचापहस्ताम् ्।
अणणमाहदशभरावृतां मयूखरहशमत्येव प्रवभावये भवानीम् ्।।

'ॐ' ऋप्रषरुवाच।।१।।

चर्ण्ो च तनहते दत्येमुर्ण्ोचिप्रवतनपाततते ।
बहुलेषु च स न्येषुक्षतयतेष्वसुरेश्वरैः॥२॥
ततैः कोपपरिीनचेतौःुम्भिैःप्रतापवान् ्।
उद्योगं सवसा न्यानांदत्यानामाहददिे ह ॥३ ॥
अद्य सवबाल दैत्यौःषिीततरुदायुिौः ।
कम्बूनां चतुरीततनयाान्ातुस्त्वबलवृताौः ॥। ४ ॥
कोहटवीयाणाण पञ्चिादसुराणांकुलातन व ।
तिं कुलातन िौम्राणांतनगच्ाछन्तुममाज्ञया ॥५॥

कालका दौहृदाा मौयौःा कालकेयास्त्तर्ासुरौः ।
युद्ायि सज्ाि तिनयान्ातुआज्ञयात्वररता मम ॥६॥
इत्याज्ञाप्यासुरपततैःुम्भिोभरविासनैः ।
तनिगाम महासन्यसहरबहुाशभवृतौः ॥७ ॥
आयान्तं चण्ण्कि दृष्टवातत्सन्यमततभीषणम् ्।
ज्यास्त्वन ैः पूरयामासिरणीगगनान्तरम् ्॥८॥
ततैः शसंही महानादमतीवकृतवान् ्नृपृ ।
घण्टास्त्वनेन तन्नादमण्म्वकाचोपबृंहयत् ्।।९ ।।

निज्याशासंहंघण्टानांनादापूररतहदङ्कुखा।
तननाद भीषणैःकालीण्ग्यिेप्रवस्तारारतानना।।१०।।

तं तननादमुपश्रुत्यदत्यसन्यश्चतुहदिाम् ्।
देवी शसंहंस्त्तरा् कालीसरोषैःपररवाररतौः।।११।।

एतण्स्मन्नन्तरे भूप प्रवनिााय सुर द्प्रवषाम् ् ।
भवायामरशसंहांनामततवीयबालाण्वतौः।।१२।।
ब्रह्मेीगुहप्रवष्णूनांतरे्न्द्रस्त्यचिकतयैः।
रीरेभ्यो प्रवतनष्क्रम्यतर्दूपूश्चण्ण्किांययैुः।।१३।।
यस्त्य देवस्त्ययर्दूपूंयरा्भूषणवाहनम् ्।
तद्वदेव हह तच्छण्कतरसुरान् ्योद्धुमिाययौ।।१४।।
हंसयुकतप्रवमानाग्रेसाक्षसूरकमण्लुिैः।
आयाता ब्रह्मणैःण्कितब्रह्माणीसाशभिीयते।।१५।।
माहेश्वरी वृषृ ारूढा बररूिल वरिाररणी ।
महाहहवलया प्राप्ता चन्द्रेखाप्रवभूष णा ।।१६ ।।
कौमाररीण्कतहस्त्ताचमयूरवरवाहना।
योद्धुमभ्याययौदत्यानण्म्बकागुहरूप्रपणी।।१७।।
तर् व व ष्णवीण्कतगरुिोपररसंण्स्त्रता।
खिचक्रगदिााङ्गाखड्गहस्त्ताभ्युपाययो।।१८।।
यज्ञवाराहमतुलंरूपंयाप्रवभ्रतोहरैः।
ण्कितैः साप्यााययौ तरवाराहींप्रवभ्रतीतनुम् ्।।१९।।
नारशसंही नृशृसंहंस्त्यबबभ्रतीसदृिंवपुैः।
प्राप्मा तर सटाक्षेपेज्ञक्षमनक्षरसंहततैः||२०||

वज्रहस्ता तर् वन्द्रीगिरिोपररणस्त्रता।
प्राप्ता सहरनयनायरि्रक्रस्त्तर्वसा.॥२१॥
ततैः पररवृतृस्त्ताशभरिीनोदेविण्कतशभैः।
हन्यन्तामसुरौः िर्िा ममप्रीत्याऽऽहचण्ण्किाम् ्॥२२॥
ततो देवीीरात्तु ुप्रवतनष्क्रान्ताततभीषणा।
चण्ण्र्किाण्कतरत्युग्र ा शिवितततननाहदनी ॥२३॥
सा चाह िूम्र िहटलमीीनमपराण्तिा ।
दूतू त्वंगच्छभगवन् ्पाश्विुम्भतनिुम्भयौः॥२४॥
बू्रूह ह िुम् भं तनिुम् भं च दानवावततगप्रवता ौ ।
ये चान्ये दानवास्त्तर युद् िाय समुप ण्स्त्रतौः॥२५॥
रलोकयशमन्त्द्रो लभतां देवौः सन्तु हप्रवभिुा ैः ।
यूयंप्रयातपातालंयहर्दिप्रवतुशमच्छर्।२६।।
बलावलेपादर्थेद्धवन्तोयुद्किांज्ञक्षणैः।
तदागच्छत तृप्यन्तुमण्च्छवौःप्रपशितेनवैः॥२७॥
यतो तनयुकतो दौत्येनतयादेव्याशिवैःस्त्वयम् ्।
शिवदूतीतत लोकेऽण्स्त्मंस्त्ततैःसाख्याततमागता।।२८॥
तेऽप्रप श्रुत्वा वचोदेव्यौःविाख्यातंमहासुरौः।

अमषापूाररता िग्मुयराकात्यायनीण्स्त्रता ।।२९॥

ततैः प्रर्ममेवाग्ेरिरिकत्यृणष्ृटवृणष्ृटशभैः।
ववरुद्तिामषास्त्ातांदेवीममरारयैः।।३०।।
सा च तान् ्प्रहहतान् ्वाणाञ्छूलिण्कतपरश्विान् ्।
धचच्छेद लीलयाऽऽम्ातिनुमुकातमहेषुशभैः।।३१।।

तस्त्याग्रतस्त्तर्ा कालिीूलपातप्रवदाररतान् ्।
खटवाङ्गपोधर्तांश् चारीन् ् कुवता ी व्यचरत्तदा ।।३२ ।।

कमण्िलिुलाक्षेपहतवीयान्् ्हतिौसैः।
ब्रह्माणी चाकरोच्छरून् ्येनयेनस्त्मिावतत।।३३।।
माहेश्वरी बस्त्रिूलेनतर्ाचक्रेरेणवष्णवी।
द त्याञ्घिान कौमारी तर्ाकत्याततकोपना।।३४।।
ऐन्द्रीकुशलिपातेनितिोदत्यदानवौः।
पेतुप्रवदाररतौः पृथ्व्यांरुधिरौघप्रवप्रषणौः।।।३५।।
तुण्प्रिहारप्रवव्स्त्तादंष्राग्रक्षतवक्षसैः।
वाराहमूत्या ान्यपतंश्चक्रेरेणचप्रवदाररतौः।।३६॥
नख प्रवदाररतांश्चान्यान् ्भक्षयन्तीमहासुरान् ्।
नारशसंही चचारिौनादापूणहादगम्बरा।।३७।।
चण्ाटिटहास रसुरौःशिवदूतूयशभदूपूरषतौः।
पेतुैः पृधृव्यां पतततांस्त्तांश्चखादार्सातदा।।३८।।
इतत मातृगृणं कुरुद्ि िमदायन्त्तंमहासुरान् ्।
दृष्टवाभ्युपाय प्रवप्राविनिुदेवाररसतनकौः।।३९।।
पलायनपरान् ् दृष्टवा दत्यान् ् मातृगृ णाहदातान् ् ।

योद्धुमिभ्याययौकुरुद्िरिकतर्बीमहासुरैः॥४०।।
रकतबबन्दुयुदााभूमौपतत्यस्त्यिरीरतैः।
समुत्पततत मेहदन्यांतत्प्रमाणस्त्तदासुरैः।।४१।।
युयुिे स गदापाणणररन्द्रकित्यामहासुरैः।
ततश्च न्द्री स्त्ववज्रेणे रकतबीमतायत् ्।।४२।।

कुशलिनाहतस्त्यिुबह्नुसुराविोणणतम् ्।
समुत्तस्त्रुसुत्ततो यिोास्त्तर्दूपूास्त्तत्पराक्रमौः॥४३॥
यावन्तैः पततताास्त्तस्त्यिरीरार्द्कतबबन्दवैः।
तावन्तैः पुरुषा िातास्त्तद्द्वीयबालप्रवक्रमौः॥४४॥
ते चाप्रप युयिुसुत्तरपुरुषारकतसम्भवौः।
समं मातृशृभरत्युग्रिस्त्रपातााततभीषणम् ्॥४५॥
पुनश्च वज्रपातेनक्षतमस्त्यशिरोयदा।
ववाह रकतं पुरुषास्त्ततिोातौःसहरिैः||४६||
व ष्णवी समरे च नंचक्रेरेणाशभिघानह।
गदया तिायामास ऐन्द्रीतमसुरेश्वरम् ्॥४७॥
व ष्णवीचक्रशभन्नस्त्यरुधिररावसम्भवैः।
सहरिो िगद्व्याप्तंतत्प्रमाणमहाासुरैः।।४८।।
कित्या िघानकौमारीवाराहीचतर्ाशसना।
माहेश्वरी बक्रिूलेनरकतर्बिीं ंमहासुरम् ्।।४९।।
स चाप्रप गदयादत्यैःसवााएवाहनत् ्पृर्क्।
मातृैः कोपसमाप्रवष्टोरकतर्बिीीमहासुरैः॥५०॥
तस्त्याहतस्त्य बहिुाण्कतूिलाहदशभभुप्राव।
पपात यो व रकतौघस्त्तेनासञ्छतिोऽसुरौः॥५१॥
त श्चासुरासृकृसम्भूतरसुरैःसकलंगित् ्।
व्याप्तमासीत्ततो देवा भयमिाग्मुरुत्तमम् ्॥५२॥
तान् ् प्रवषण्णान् ् सुर ान् ् दृष्टवा चण्ि्का प्राह सत्वरा ।
उवाच कालीं चामुर्णे प्रिवस्त्तीणं ंवदनंकुरु॥५३॥

मच्छस्त्रपातसम्भूतान् ्रकतबबन्दूनूमहासुरान् ्।
रकतबबन्दौः प्रतीच्छ त्वं वकरेणानेन वेधगना ।।५४ ।।

भक्षयन्ती चर रणे तदुतुपन्नान्महासुरान् ्।
एवमेष क्षयंद त्यैः क्षीणरकतो गशमष्यतत ।।५५ ।।
भक्ष्मयमाणास्त्त्वया चोग्रा न चोत्पतस्त्यण्न्त चापरे ।
इत्युकत्वा तां ततो देवी िूलेनाशभिघान तम् ्।।५६ ।।
मुखेन काली िगृहृे रकतबीस्त्य िोणणतम् ्।
ततोऽसाविाघानार् गदया तर चण्ण्किाम् ्।।५७ ।।
न चास्त्या वेदनां ंचक्रे गदापातोण्ल्पकामप्रप ।
तस्त्याहतस्त्य देहात्तु ुबहु सुराव िोणणतम् ्।।५८ ।।
यतस्त्ततस्त्तद्वकरेणे चामुण्िा सिम्प्रतीच्छतत ।
मुखे समुद्गता येऽस्त्या रकतपातान्महासुरौः ।।५९ ।।
तांश्चखादार् चामुण्िा पिपौ तस्त्य च िोणणतम् ्।
देवी िूलेन वज्रेणे बाण रशसशभरृण्ष्टशभैः ||६० ||
घिान रकतबिीं ंतं चामुण्िापिीतोिणतम् ्।
स पपात महीपृषृठे िस्त्रसङ्घसमाहतैः ।।६१ ।।
नीरकतश्च महीपाल रकतबिीो महासुरैः ।
ततस्त्ते हषमातुलमवापुण्स्त्रदिा नृपृ ।।६२ ।।
तेषां मातृगृणो िातो ननतासृाङ्गमदोद्तिैः ।। ६३ ।।
।।ॐ ।।

इतत श्रीमाकार्ण्येयपुराणे सावणणको मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये रक्तबीजविो नाम अष्टमोऽध्यायः

अष्टम अध्याय

ऋवषनेकहा:चंऔरमुंकिोविहोजानेपरतथाउसकीसेनाकेशजक्तहीनहोजाने पर असुर राज शुंभ को शांत त न रही। उसने समस्त दैत्मय सेन ा को एकत्र होने का आदेश हदया और कहा, "मेर ी समस्त सेन ा अपने अस्त्र-शस्त्रों सहहत हहमालय में जो स्त्री है उसकी ओर प्रस्थान करे। मेरे समस्त चौरासी दैत्मय सेन ापतत अपनी हाथी सेन ाओं सहहत युद् ि हेतु प्रस्थान करें तथा चौरासी दैत्मयसेनापततअपनीअश्वारोहहणीसेनाके साथयुद्हेतुप्रस्थानकरें।पचासकोहटशजक्तशाली योद्ाऔरूम्रासुरकेसौअसुरसेनापततअपनीसेनासहहतकूचकरें।कालक,दौहृदा,मौयाऔर कालकेय अन्य असुर ों के साथ उस स्त्री के ववरुद् युद् ि हेतु प्रस्थान करें।"

इस प्रकार आदेश दे कर भयंक र शुंभ इस प्रकार चला जैसे कक वह अपने क्रोि में संपू ण ा ववश्व को उखाड़ फें केर्ा। उसकी अत्मयंत भयंक र सेन ा को आते देख कर देवी माया ने अपने तीरों की वषाा से े संपूणापृथ्वीतथाआकाशकोआवृतूतकरशलयाऔरजजसकेकारणदेखनाअसंभवहोर्या।उनका शसंहं इस प्रकार दहाड़ने लर्ा जैसे कक कल्प का अन्त आ र्या हो। देवी के अस्त्रों, तीरों तथा शसंहं की आवाज,उनकेघंटों,शंखोंतथिानुषकीटंकारसेऔरभीअधिकबढ़ई।इनध्वतनयोंकोसुनकर असुर देवी, शसंहं तथा काली को घेरने लर्े। इसी स्मरणीय अवधि में जर्त के कल्याण तथा असुर ों के नाश के शलए ब्रह्मा, ववष्णु, ु शशव तथा स्कंद और इंकिी शजक्तयााँ जो अत्मयंत पराक्रम तथा बल से े स्पन्न थीं, दुर् ाा देवी के शरीर में प्रववष्ट हो ईं। जजस देवता का जैस ा रूप था, ठीक वैसे ही शस्त्रों से स्पन्न हो कर उसकी शजक्त असुर ों से "युद् ि करने के शलए आई।

ब्रह्मा जी की शजक्त हंस के ववमान पर सवार कमण्लि शलए हुए आई, महादेव की शजक्त वृषृ भ पर आरूढ़ हो कर त्रत्रशूल शलए, नार् तथा मस्तक पर चंमिा से ववभूव षत हो कर आई, कातततको य जीकीशजक्तमयूरपरआरूढ़होकरहाथमेंशजक्तशलएआई।ववष्णु ुभर्वान् ्कीशजक्तर्रुड़पर आरूढ़होकरशंख,चक्र,र्दा,श्रृंर्औरखड्र्हाथमेंलेकरआई।इसीप्रकारवराहऔरनरशसंहं भर्वान् ् की शजक्त भी आई और इंकिी शजक्त हाथी पर आरूढ़ हो कर तथा वज्र हाथ में ले कर आई। उनके सहस्र नेत्र थे।े उसके बाद देवी के शरीर में से े उनकी शजक्त का शजक्तशाली स्वरूप (काली) प्रर्ट हुआ जो कक अपने रूप से समस्त जर्त को भयभीत करने वाला था। देवी ने अपने दूतू शशव की शजक्त को बुल ाया और कहा, "असुर ों के पास जाओ और कहो कक इंस्विर् पर राज्य करेंर्े, देवता यज्ञ भार् का उपभोर् करेंर्े। दैत्मय यहद जीववत रहना चाहते हैं तो पाताल लौट जाऐं। यहद वे े मुझ से युद् ि करने आना चाहते हैं, तो उन्हें आने दो, मैं उनके रक्त का आनंद पूव का पान करूाँर्ी।" चूाँक क वे काली का संदे श ले कर ई थीं, इसशलए उन्हें शशवदूतू ी कहा र्या।

काली का र्वपूाण ासंदेश सुन कर असुर क्रोधित हो उठे और देवी को मारने के शलए दौड़े। दैत्मयों ने कात्मयातयनी के ऊपर चारों ओर से सभी प्रकार के अस्त्रों से प्रहार ककया। लेककन कात्मयातयनी ने उनके ऊपर अधिक शजक्तशाली तीरों तथा हदव्यास्त्रों की वषा ाकी। जजसने कक असुरों को अपने अस्त्रों का प्रहार करने से रोक हदया। इसके बाद काली ने अपनी अभेद्य शजक्त से तूफानी हवा की भाताँत असुरों को खदेड़ हदया तथा उन्हें अपने पैरों तले रौंद िाला। ब्रह्माणी ने अपने कमंलि से जल तछड़क कर असुरों की शजक्त खींच ली। चक्र और त्रत्रशूल से देवी ने ककतने असुरों का संहार ककया, उन्हें धर्नना संभव नहीं है। वज्र और शजक्त के साथ देवी उसी प्रकार असुरों पर टूट पड़ी जजस प्रकार र्रुड़ सपों पर टूट पड़ते ह।ैं उनके वज्र के प्रहार से हजारों की संख्या में दैत्मय रक्त वमन करते हुए तथा अंर्-भंर् हो कर भूशम पर धर्र पड़े। देवी ने अपने वाराह रूप से उन्हें अपने थूथन की मार से इिर से उिर फेंका और मार िाला। नरशसंहं रूप के द्वारा वे दहाड़ती हुई राक्षसों को खाने लर्ीं। देवी के द्वारा तनशमता दूतूतया ाँअसुर सेना में भय उत्मपन्न करने लर्ीं तथा उन्हें िरा कर अपना ग्रास बनाने लर्ीं। मा ाँकी शजक्तयों द्वारा (सेना का नाश होते देख कर सेना नायक रक्तबीज अत्मयंत क्रोि में भर कर युद्ि के असुर शलए आया। उसके शरीर से धर्रने वाली प्रत्मयेक बूंद से उसके ही समान शजक्तशाली दूसूरा दैत्मय उत्मपन्न हो जाता था।

रक्तबीज अपने मारक अस्त्रों के साथ इंणिी के साथ युद्ि करने लर्ा। इंणिी ने अपने वज्र से उसके हाथ काट हदये, जजससे उसका बहुत सा रक्त बहा और पृथूवी पर धर्रा जजससे कक रक्तबीज के ही समान शजक्तशाली अनेक राक्षस उत्मपन्न हो र्ए। जजतना रक्त उसके शरीर से धर्रता था उतने ही राक्षस उत्मपन्न हो जाते थे और ये सभी चारों ओर से देवी के साथ युद्ि करने लर्े। जब देवी ने वज्र से रक्तबीज के शसर पर प्रहार ककया तो उसके शसर से रक्त की एक तीव्र िार बही और उसके पृथूवी पर धर्रने से हजारों हजार राक्षस उत्मपन्न हो र्ए और वे सभी देवी से युद्ि करने लर्े। युद्ि करते-करते अचानक देवी की र्दा से रक्तबीज के शसर पर चोट लर्ी जजससे ेकक रक्त की मोटी िार पृथूवी पर धर्रने से असंख्य राक्षस उत्मपन्न हो र्ये और देवी से युद्ि करने लर्े। इसी समय देवी ने अपने चक्र से उसे घायल कर हदया जजससे कक उसके शरीर से रक्त की मोटी िारा पृथूवी पर धर्री जजससे कक असंख्य राक्षस उत्मपन्न हो र्ए और संपूण ापृथूवी और आकाश भयंकर राक्षसों से पररपूण ा हो र्या। जब देवताओं ने देखा कक संपूण ाजर्त राक्षसों से भर र्या है और ये ककसी भी तरह मारे नहीं जा रहे हैं, वरन संख्या में बढ़तेही जा रहे हैं, तो देवता भी भयभीत हो र्ए।

देवताओं को तनराश देख कर, देवी ने काली को अपने मुंह को बड़ा करके अपनी बड़ी जीभ बाहर तनकालने के शलए कहा और कहा, "हे काली, जब म ैंअपने अस्त्रों से इन राक्षसों का नाश करूाँ तो रक्त की एक बूदाँू भी नीचे मत धर्रने देना। अपनी लंबी जजह्वा से उनका रक्त पी जाओ। रक्तबीज के रक्त से उत्मपन्न सभी राक्षसों को तुम खा जाओ। ऐसा करने पर वह असुर पूणताया नष्ट

होजाएर्[।"ऐसाकहकरदेवीनेरक्तबीजपरअपनेत्रत्रशूलसेप्रहारककया। काली ने अपना मुख फैलाकरउसकेरक्तकापानककया।देवीकेत्रत्रशूलकेप्रहारसे े रक्तबीजअंतंतम बार जोर से दहाड़ा अत्मयंतबलपूवकादेवीकेऊपरधर्रपड़ा।देवीनेचक्रकेप्रहारसेउसकेजीवन का और अन्त कर हदया,इससमयजोरक्ततनकलाउसे ेभीकालीनेपीशलया।कालीनेरक्तबीज से ेउत्मपन्न सभी राक्षसोंकोखाशलयाऔररक्तबीजकेरक्तकोपीशलया।रक्तबीजपवताकी भाताँत पृथ्ूवी को कंपाते हुएभूशमपरधर्रपड़ा।सभीदेवताअत्मयंतप्रसन्नहोर्ए।स्वर्ाकीअप्सराऐं नृत्ूमय करने लर्ीं और र्ीत र्ाने लर्ीं।

नवमोऽध्यायः

य्ानम् ्

ॐ बन्ूकिकाञ्चनतनभंरुधचराक्षमालां

पिाांकिुी च वरदांतनिबाहुदर्ण्ैः ि

बबभ्राणशमन्दिुकलाभरणंबरनेर-

मिाण्ाम्बकिमतनिंवपुराश्रयाशम।।

'ॐ' रिोवाच॥१॥

प्रवधचरशमदमाख्यातं भगवन् ् भवता मम ।

देव्याश्चररतमाहात्म्यंरकतबीिविाधश्रतम् ्॥२॥

भूयश्चेच्छाम्यहंश्रोतुंरकतबीतनपातितते।

चकार ि्ुम्भो यत्कमातनुम्भश्चाततकोपनैः॥३॥

ऋप्रषरुवाच ॥४॥

चकार कोपमतुलंरकतबीतनपातितते।

ि्ुम्भासुरो तनिुम्भश्चहतेष्वन्येषुचाहवे॥५॥

हन्यमानं महास न्यंप्रवलोकयामषमुाद्वहन् ्।

अभ्यिावत्न्नुम्भोऽर्मुख्ययासुरसेनया॥६॥

तस्त्याग्रतस्त्तर्ा पृष्ठेपाश्वयाोश्चमहासुरौः।

संदष्टौष्ठपुटौः कुरुद्िहिन्तुंदेवीमुपाययुैः॥७॥

अिागाम महावीयैःिुम्भोऽप्रपस्त्वबलवृतौः।

तनहन्तुं चण्णि्का कोपात्कृत्वायुद्तुिमातृशभैः॥८॥

ततो युद्मितीवासीद्देव्याििुम्भतनिुम्भयौः।

रिवषमातीवोग्ं्रं मेघयोररववषताौः।।९।।

धचच्छेदास्ताञ्छरांस्ताभ्यांचण्ण्किास्त्विरोत्करैः।
तियामास चाङ्गेषु िस्त्रौघरसुरे श्वरौ ।।१०।।
तनिुम्भोतनशितंखड्गंचमाचादायसुप्रभम् ्।
अतियन्मूण् ना शसंहं देव्या वाहनमुत्त मम् ् ।। ११ ।।

ताडिते वाहने देवी क्षुरपे्रेण ाशसमुत्त मम् ् ।
तनिुम्भस्त्यिाुधचच्छेदचमाचाप्यष्टचन्द्कम् ्।।१२।।
तछन्नेचमणाणखड्गेचिण्कतंधचक्षेपसोऽसुरैः।
तामप्यस्त्य द्प्रविा चक्रे चक्रेणाशभमुख ागताम् ् ।।१३ ।।
कोपाम्ातो तनिुम् भोऽर् िूलं िग्राह दानवैः ।
आयान्तं मुण् ष्टपातेन देवी तच्चाप्यचूणू या त् ् ।। १४ ।।
आप्रवय्ार् गदां सोऽप्रप धचक्षेप चण्ण्किां प्रतत ।
साप्रप देव्याबस्त्रिूलेनशभन्नाभस्त्मत्वमागता।।१५।।
ततैः परिुह स्त्तं तमायान्तं दत्यपुङ् गवम् ् ।
आहत्य देवी बाणौघरपातयत भूत ले ।।१६।।
तण्स्त्मण्न्नपतततते भूम ौ तनिुम् भे भीमप्रवक्रमे
भ्रातयतीव संक्रुरुद्धःप्रययौहन्तुमण्म्बकाम् ्।।१७।।
स रस्त्र्तस्त्तराुत्युच्चगृहीतपरमायिुैः।
भिु रष्टाशभरतुल व्याप्ायिोषंबभौनभैः।।१८।।
तमायान्तं समालोकयदेर्वीखमवादयत् ्।
ज्यिाब्दं चाप्रप िनुषश्चकारातीवदुैःसहम् ्।।१९।।
पूरयामास ककुभोतनिघण्टास्त्वनेनच।
समस्त्तद त्यस न्यानांतिेोविप्रवितयना||२०||

ततैः शसंही महानादस्त्त्याण्तिभमहामदैः।
पूरयामास गगनं गांतर्वहदिोदि।।२१।।

ततैः काली समुत्पत्यगगनंक्ष्ममामतिायत् ्।
कराभ्यां तण्न्ननादेन प्राकस्त्वनास्त्तेततरोहहतौः।।२२।।
अटटाटटहासमशिवं शिवदूतू ी चकार ह।
त ैः िब्द रसुरास्त्रेसुैः िुम्भैःकोपंपरंययौ।।२३।।
दुरुात्मंण्स्त्तष्ठ ततष्ठेततव्यािाहाराण्म्बकायदा।
तदा िियेत्यशभहहतंदेवराकािसंण्स्त्रतैः।।२४।।
ुम्भिनागत्य यािण्कतमुकाताज्वालाततभीषणा।
आयान्ती वण्ह्नकूटाभासातनरस्त्तामहोल्कया।।२५।।
शसंहंनादेन िुम्भस्त्यव्याप्तंलोकरयान्तरम् ्।
तनघाताततनैःस्त्वनो घोरोण्तिवानवनीपते॥२६॥
ुम्भिमुकताञ्छरान्देविाुम्भस्त्तत्प्रहहताञ्छरान् ्।
धचच्छेद स्त्विररुग्रैःितिोऽर्सहरिैः||२७||
ततैः सा चण्ण्किाकुरुद्धािूलेनाशभिघानतम् ्।
स तदाशभहतोभूमौमूण्च्छातोतनपपातह।।२८।।
ततो तनिुम्भैःसम्प्राप्यचेतनामात्तकामुकौः।
आिघान िर देवींकालीकेसररणंतरा।।२९।।
पुनश्च कृत्वाबाहूनामयुतंदनिुेश्वरैः।
चक्रायिुेन हदततिश्छादयामासचण्ण्किाम् ्।।३०॥
ततो भगवतीकुरुद्धादिुगाादुगातातनााशिनी।
धचच्छेद तातन चक्राणणस्त्विरैःसायकांश्चतान् ्।।३१।।

ततो तनिुम्भो वेगेन गदामादाय चण्ण्किाम् ्।
अभ्यिावत व हन्तुं द त्यसेनासमावृतृः ।। ३२ ।।
तस्त्यापतत एवाि गदां धचच्छेद चण्ण्किा।
खड्गेन शितिारेण स च िूलं समाददे ॥३३॥
िूलिहस्त्तं समायान्तं तनिुम्भममरादानम् ्।
हृहद प्रवव्यिा िूलेन वेगाप्रवद्नि चण्ण्किा ॥३४॥
शभन्नस्त्य तस्त्य िूलेन हृदयाण्न्नःसृतृोऽपरैः ।
महाबलो महावीयण्ास्त्तष्ठेतत पुरुषो वदन् ्।।३५ ।।
तस्त्य तनष्क्रामतो देवी प्रहस्त्य स्त्वनवत्ततैः ।
शिरण्श्चच्छेद खड्गेन ततोऽसावद्धप्रव ||३६||
ततैः शसंहंश्चखादोग्रं दंष्ट्राक्षुण्णशिरोिरान् ्।

असुरांस्त्तांस्त्तर्ा काली शिवदूती तर्ापरान् ् ॥३७॥
कौमारीण्कततनशभन्ानैः केधचरिमहाासुरैः ।
ब्रह्माणीमन्त्रपूतेन तोयेनान्ये तनराकृतैः ॥३८ ॥
माहेश्वरीबरििूलेन शभन्नैः पेतुस्त्तर्ापरे ।
वाराहीतुण्घातेन केधचच्चूण्ीकृता भुप्रव ।।३९ ।।
खण् खण्चि चक्रेण वष् णव्या दानवैः कृतैः ।
वज्रेण च न्द्रीहस्त्ताग्रप्रवमुकतेन तर्ापरे ॥४०॥
केधचद्प्रवनेिुरसुरैः केधचन्नष्टा महाहवात् ्।
भक्षक्षताश्चापरे कालीशिवदूतीमृगाधिप ैः ।। ४१ ।।
।। ॐ ।।

तत श्रीमाकाण्ेयिपुराणे सावणणके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये तनशुम्भविो नाम नवमोऽध्यायः ।। ९।।

नवम अध्याय

राजा ने कहा, “हे ऋवष! यह अद्भुत कहानी आपने मुझे सुन ाई है। देवी की महहमा अद्भुत है औररक्तबीजकीमृतूमयुअद्भुतहै।मैंअबयहसुननाचाहताहूाँककरक्तबीजकीमृतूमयुकेबादशुंभ-तनशुंभतथाअन्यमहाअसुरोंनेक्याककया?'

ऋवषनेकहा:रक्तबीजकीमृतूमयुतथासमस्तअसुरसेनाकेनाशकेबारेमेंसुनकर असुरराजतनशुंभबड़ाहीक्रोधितहोउठाऔरउसनेसशस्त्रसेनाकोलेकरदेवीपरआक्रमणककया। सभी दसों हदशाओं से असुर ों ने ववष-बुझे अस्त्रों, मायावी अस्त्रों, अभेद् य आग्नेय ास्त्रों से देवी पर प्रहार ककया। शुंभ भी देवी को पकड़ने के शलए बड़ी सेन ा ले कर आया। उसने देवी के अनेक रूपों जैसे काली, वैष् णवी, रौंी, ब्राह्मी, नारशसंहं ी आहद के साथ युद् ि ककया। देवी और शुंभ -तनशुंभ के मध्य अववस्मरणीय युद् ि हुआ। यह युद् ि अद्भुत और भयंक र था। देव र्ण कापाँ ने लर्े। आकाश बाणों से आच्छाहदत हो र्या। देवी अत्मयंत साहसपूव का असुर ों पर टूट पड़ी। तनशुंभ ने एक तेज िार वाली तलवार ले कर देवी के शेर पर आक्रमण कर हदया और उस पर कई वार ककए। देवी ने तत्मकाल अपने चक्र से उसकी तलवार के टुकड़े-टुकड़े कर हदए। तनशुंभ अत्मयंत क्रोधित हो उठा और उसने अपनी शजक्त,शूलऔरखड्र्काप्रयोर्ककया;ककंतुदेवीऔरअधिकक्रोधितहोईऔरउसनेतनशुंभको घायल करके भूश म पर पटक हदया।

अपने भाई को भूश म पर धर्रा हुआ देख कर शुंभ अज्बका को मारने दौड़ा। वह एक रथ पर सवार हो कर युद् ि कर रहा था। उसने आठ हाथों में अस्त्र िारण कर रखे थे े और स्पूण ा आकाश को आवृतूत कर रखा था। देवी ने शुंभ को अपनी ओर आते देख कर शंख नाद ककया और संपू ण ा आकाश को भयंक र ध्वतन से र्ुंज ायमान कर हदया और अपने िनुष • और बाणों से े भयंक र ध्वतन उत्मपन्न की। देवी का शेर अत्मयंत उग्र रूप से दहाड़ा और सवत्रा भयंक र भूच ाल आ र्या। देवी ने पृथ्ू वी पर अपने पैर को जोर से मारा और आकाश को भयंक र ध्वतन से र्ुंज ायमान कर हदया। इस भयंक र ध्वतन ने पूव ा की समस्त ध्वतनयों को तनर्ल शलया। शशवदूत ी और काली बड़े ही जोर से और तनष्ठुरतापूवका कूदीं।इनध्वतनयोंसेअसुरबड़ेहीक्रोधितहोउठे।अज्बकानेजोरसे कहा,'अरे दुष्ु ट असुर ! तू कहााँ भार्ा जा रहा है। ठहर, ठहर जा! वहीं खड़ा रह। देवताओं ने आकाश से कहा, "ववजय, ववजय।" शुंभ की रोने की आवाज से संपू ण ा स्थान भर र्या। शुंभ ने देवी के ऊपर हजारों-करोड़ोंअत्रछोड़े।लेककनवेसभीदेवीकेसमक्षएकसूखेतृणकेसमानथे।उसनेइनसबकोजला कर राख कर हदया। देवी ने अपने त्रत्रशूल से शुंभ के वक्षस्थल को बीिं हदया। वह तनश्चेष् ट हो कर भूश म पर धर्र पड़ा। इसी समय तनशुंभ को पुन ः चेत ना आ र्यी और वह देवी के साथ अपने चक्र,

दर्ा, शूल और तलवार ले कर युद् किरने लर्ा।देवीनेपुनःत्रत्रशूलसेउसकीछातीकोछेद हदया और उसके वक्ष में से पुनः एक भयंकर राक्षस प्रर्टहोर्याजजसनेदेवीकोपुनःललकारा।दुर्ाा उस
पर हाँसी और एक ही वार में उसका शसर काट करअलर्करहदया।कुछअसुरोंकोशेरनेखा शलया तथा कुछ को काली ने खा शलया। कुछ को कौमारीनेटुकड़े-टुकड़ेकरहदयातथाकुछब्राह्मी के
कमंलि से ववदीण ाहो र्ए। कुछ माहेश्वरी के त्रत्रशूलसेर्बींि ेर्एतथावाराहीकेथूथनसेचूर-चूर हो
र्ए, कुछ वैष्णवी के चक्र से टुकड़े-टुकड़े हो र्ए।कुछइंर्ाणीकेवज्रसेमारेर्ए।इसप्रकार सभी असुर देवी माता के ककसी न ककसी रूप द्वारा मृतूमयुकोप्राप्तहोर्ए।

दशमोऽध्यायः

य्ानम् ्

ॐ उत्तप्तहेमरुधचरां रप्रवचन्द्रण्ह्न-

नेरां िनुश्रियुतांकिुिपिूलम् ्।

रम्य भिुा श्च दिर्ती शिविण्कतरूपां

कामेश्वरीं ह्हद भिाशम िृतेन्दुलुेखाम् ्।।

'ॐ' ऋप्रषरुवाच ।।१ ॥

तनिुम्भं तनहतं दृष्टवा भ्रातरं प्राणसण्म्मतम् ्।
हन्यमानं बलं च व िुम्भैः कुरुद्ीऽब्रवीद्वचैः ॥२॥

बलावलेपाद्दुषुटे त्वं मा दुगु गवमाावह ।
अन्यासां बलमाधश्रत्य युद्यसे याततमातननी ॥३ ॥

देव्युवाच ॥४ ॥

एक वाहं िगत्यर द्प्रवतीया का ममापरा ।
पश्य ता दुषुट मय्येव प्रविन्त्यो मद्प्रवभूतयैः ॥५॥
ततैः समस्त्तास्त्ता देव्यो ब्रह्माणीप्रमुखा लयम् ्।
तस्त्या देव्यास्त्तनौ िग्मुरेक वासीत्तदाण्म्बका ॥६॥

देव्युवाच ॥७ ॥

अहं प्रवभूत्या बहुुशभररह रूपय दााण्स्त्रता ।
सत्संहृतं मय क व ततष्ठाम्यिाि ण्स्त्रो भव ॥८ ॥
ऋप्रषरुवाच ।।९।।

ततैः प्रववृतेृ युद् देव्यौः िुम्भस्त्य चोभयौः ।
पश्यतां सवदोवानामसुराणां च दारुणम् ्।। १० ।।
रिवषैः शितैः िस्त्र स्त्तर्ास्त्रश् च व दारुण ैः ।

तयोयुद्दा िमभूद् भूय ैः सवला ोकभयंक रम् ्‌ ।।११।।

हदव्यान्यस्त्राणण िितो मुमु चे यान्यराण्म्बका ।

बभञ्ज् तातनदत्येन्द्स्तत्प्रतीघातकतृशाभैः।।१२।।

मुकतातनतेनचास्त्राणणहदव्यातनपरमेश्वरी।

बभञ्ज् लीलायवोग्रहुंकारोच्चारणाहदशभैः।।१३ ।।

ततैः िरितदेवीमाच्छादयत सोऽसुर ैः ।

साप्रप तत्कु प्रपता देवी िनुण् श्चच्छेद चेषुे श भैः ।। १४ ।।

तछन्ने िनुप्र ष दत्येन्द्स्तरा िण्कतमरादद्दे ।

धचच्छेद देवी चक्रेरे ण तामप्यस्त्य करे ण्स्त्ताम् ्‌ ।।१५ ।।

ततैःखड्गमुपादायितचन्द्रंद्‌चभानुमत् ्‌।

अभ्यिावत्तदा देवीं दत्यानामधिपेश् वरैः ।।१६ ।।

तस्त्यापतत एवािु खड्गं धचच्छेद चण्ण्किा ।

निुमुकातैःशितबाणाश्चमाचाकाकरामलम् ्‌।।१७।।

हताश्वैः स तदा दत्यण्श्छन्निन्वा प्रवसारधरैः ।

ग्रािह मुद् गरं घोरमण्म्बकातनिनोद्यतैः ।।१८ ।।

धचच्छेदापततस्त्तस्त्य मुद् गरं तनशितैः िरैः ।

तराप्रप सोऽभ्यिावत्तां मुण्ष्टमुद्यम्यवेगवान् ्‌।।१९।।

समुण्ष्टं पातयामासहृदयेदत्यपुङ्गवैः।

देव्यास्त्तं चाप्रप सादेवीतलेनोरस्त्यतिायत् ्‌॥२०॥

तलप्रहाराशभहतो तनपपात महीतले ।

स द त्यरािैः सहसापुनरेवतरोण्त्त्तैः।।२१।।

उत्पत्य च प्रगृह्ययोच्चदेवींगगनमाण्स्त्तैः।

तराप्रप सा तनराािारा युयुिेतेनचण्ण्किा।।२२।।

तनयुद्खितेदादत्यश्वण्ण्किाचपरस्त्परम् ्।

चक्रतुःप्रर्मंशसद्मिुतनप्रवस्त्मयकारकम् ्।।२३।।

ततो तनयुद् ि सुध चरं कृत्वा तेन ाण्म्बका सह ।

उत्पात्य भ्रामयामास धचक्षेप िरणीतले ।।२४ ।।

सज्ञक्षप्तो िरणीं प्राप्य मुण् ष्टमुद् यम्य वेध गतैः ।

अभ्यिावतदुषुटात्माचण्ण्कितनिनेच्छया।।२५।।

तमायान्तं ततो देवी सवदा त्यिनेश् वरम् ् ।

गित्यां पातयामासशभक्त्विूलेनवक्षशस।।२६।।

स गतासुैः पपातोयदेविूलाग्रप्रवक्षतैः।

चालयन् ्सकलां पृथ्वींसाण्ब्द्विीपांसपवताम् ्।।२७।।

ततैः प्रसन्नमणखलंहतेतण्स्त्मन् ्दुरुात्मतन।

गित्स्त्वास्त्थ्यमतीवाप तनमलां चाभवन्नभैः ।।२८ ।।

उत्पातमेघौः सोल्कायेप्रागासंस्त्तैमंययुैः

सररतो मागवाहहन्यस्त्तर्ासंस्ंत्तरपातततते।।२९।।

ततो देवगणौः सवेहषतानभरामानसौः।

बभूवुतनहाते तण्स्त्मन् ्गन्विाालशलतंगिुैः॥३०॥

अवादयंस्त्तर्व ान्येननृतुश्चाप्सरोगणौः।

ववुैः पुण्यस्त्तर्ा वातौःसुप्रभोऽभूद्हदवाकरैः।।३१।।

ज्विलुश्चाग्नयैः िान्तौःान्तिाहदग्तिनतस्त्वनौः।।३२।।

।।ॐ ।।

इतत श्रीमाकाण्र्येयपुराणे सावणणको मन्वन्तरेदेवीमाहात्म्येशुभविोनामदशमोऽध्यायः ।।१०।।

दशम अध्याय

ऋवष कहते हैं : तनशुंभ मारा र्या और शुंभ को यह अपमान सहन नहीं हुआ, वह देवी पर धचल्लाया, “हे दुबुला और दुष्ुट दुरा् ा! घमंमित कर, तू तो ककसी और का सहारा ले कर युद् किर रही है। देवी ने कहा, “म ैंइस जर्त में मात्र एक ही हूाँ। यहा ाँपर मेरे शसवा और कौन है? ये जो अन्य तुहारे साथ युद् किरते हदखाई दे रही हैं, म ैंस्वयं हूाँ। अब मेरी ओर देख।" दुरा् ाके ऐसा कहते ही सारे रूप दुरा् ाके भीतर समा ए् और वहा ाँदेवी के शसवा कोई नहीं था। देवी ने पुनः कहा, "शात रहो। म ैंही अन्तभूता तथा सवव्ायापकता की शजक्त हूाँ जो अनेक रूपों में प्रर्ट थी और अब स्वयं को स्वयं में समाहहत करके अब अकेली खड़ी हूाँ।”

ऋवष ने कहा : शुंभ पुनः भूशम पर से उठ कर खड़ा हो र्या और उसने देवी से युद् किकया। जैसे तततली आर् पर झपटती है उसी प्रकार शुंभ देवी के ऊपर भयंकर झपटा। संपूण ाजर्त में कोई भी नहीं जानता था कक क्या होने वाला है? लेककन सभी उत्मसुकता से पररणाम की प्रतीक्षा कर रहे थे। शुंभ ने संसार में जजतने भी अस्त्र हैं, वे सब अज्बका के ऊपर छोड़े। देवी ने खेल ही खेल में उनमें से कुछ को तनर्ल शलया और कुछ को मात्र हुंकार से ही चूर-चूर कर हदया। शुंभ ने अपने िनुष-बाण, शजक्तया ाँऔर आग्नेयास्त्र उठाये। देवी ने उसके रथ को घोड़ों और सारधथ के सहहत उलट हदया। शुंभ भूशम पर धर्र पड़ा। उसने देखा कक उसके पास न तो रथ है, न घोड़ा है और न ही सारधथ, तो वह दर्ा ले कर देवी पर टूट पड़ा। देवी ने तत्मक्षण अपने बाणों से उस अस्त्र को टुकड़े-टुकड़े कर हदया। उसके बाद वह हाथ उठा कर मुक्के से दुरा् ाके शसर को तोड़ने के शलए आया। उसने बलपूवका मा ाँके वक्षस्थल पर प्रहार ककया। देवी ने अपनी दर्ा से उसके वक्ष पर प्रहार ककया और वह पुनः तनश्चेष्ट हो कर भूशम पर धर्र पड़ा। पुनः चेतना आने पर वह आकाश में उड़ र्या और देवी पर अनेक अस्त्र छोड़े। देवी भी आकाश में कूद र्यीं और त्रबना ककसी अवलंबन के असुर के साथ युद् किकया और उसे भूशम पर धर्रा हदया। शसद्र्ण तथा देवता इस दृश्य को देख कर आश्चयचाककत थे। पुनः शुंभ अपना हाथ उठा कर मुक्के से देवी को मारने के शलए दौड़ा। देवी ने अपना त्रत्रशूल उसके सीने में घोंप कर उसके सीने को दो भार्ों में चीर हदया और उसका अन्त कर हदया। वह समुि और पृथ्ुवी को कंपायमान करते हुए पृथ्ुवी पर धर्र पड़ा। आकाश स्वच्छ हो र्या। देवता प्रसन्न थे। जब उस दुष्ुट दैत्मय का अन्त हुआ तो समस्त जर्त प्रसन्न था ।

र्ंवि ार्ान करने लर्े। स्वर् ाकी अप्सराऐं प्रसन्नतापूवका नृत्ुमय करने लर्ीं। वृकुष आनंहदत हो उठे। नहदया ाँतेजी से बहने लर्ीं। समुि शांत हो र्या। अजग्न आनंदपूवका जलने लर्ी। वातावरण स्वच्छ हो र्या। पृथ्ुवी भार से मुक्त हो र्यी। वायु आनंद के साथ बहने लर्ी। सूय ातेज चमकने लर्ा।

एकादशोऽध्यायः

य्ानम् ्

'ॐ' बालरप्रवद्युततशमन्दुकुकरीटां तुङ्गकुचां नयनरययुकताम् ्।

स्त्मेरमुर्खी वरदां किुपिााभीततकरां प्रभिे भुवर्नीम् ्।।

'ॐ' ऋप्रषरुवाच ॥ १ ॥

देव्या हते तर महासुरे न्द्रेद्

सेन्द्ौःसुरावण्ह्नपुरोगमास्त्ताम् ्।

कात्यायर्नीं तुष् टुवुर रष्टलाभाद्

प्रवकाशिवकराब्प्रिवकाशितिाौः ॥२॥

देवी प्रपन्नाततहा रे प्रसीद

प्रसीद मातिगा तोऽणखलस्त्य ।

प्रसीद प्रवश्वेश् वरर पाहह प्रवश्वं

त्वमीश्वरी देप्रव चराचरस्त्य ॥३ ॥

आिारभूतािगतस्त्त्वमेका

महीस्त्वरूपेणयतैःणस्त्र्ताशस।

अपां स्त्वरूपणस्त्र्तया त्वयत-

दाप्यायते कृत्स्त्नमलङ्घयवीये ॥४ ॥

त्वं वष्णवीण्कतरनन्तवीयाा

प्रवश्वस्त्य बीिं परमाशस माया ।

सम्मोहहतं देप्रव समस्त्तमेत त् ्

त्वं व प्रसन्नाभुप्रवमुण्कतहेतुः॥५॥

प्रवद्यौः समस्त्तास्त्तवदेप्रवभेदौः

णस्त्रयैः समस्त्तौःसकलिागत्सु।

त्वयकया पूर रतमम्बयतत् ्

का ते स्तुत तैः स्तव्यपरा परोण्कतैः॥६॥

सवभूातायदादेवीस्त्वगमुाण्कतप्रदातयनी।

त्वं स्तुतास्तुतयेकावाभवन्तुपरमोकतयैः॥७।।

सवस्त्ा य बुद् धिरूपेण िनस्त्य हृहद संण् स्त्ते ।

स्त्वगापा वगदो देप्रव नारायणण नमोऽस्तुते ॥ ८॥

कलाकाष्ठाहदरूपेणपररणामप्रदातयतन।

प्रवश्वस्त्योपरतौ िकतेनारायणणनमोऽस्तुते॥९॥

सवमाङ्गलमाङ्गल्येशिवेसवार्ासााधिके।

रिण्ये त्र्यम्बके गौरर नारायणणनमोऽस्तुते।।१०।।

सृण्ू ष्टण्स्त्ततप्रवनिाानां िण्कतभूते सनाततन ।

गुणाश्रये गुणमये नारायणणनमोऽस्तुते।।११।।

रिणागतदीनातपाररराणपरायणे।

सवस्त्ायाततहारे देप्रव नारायणणनमोऽस्तुते।।१२।।

हंसयुकतप्रवमानस्त्रेब्रह्माणीरूपिाररणण।

किौम्भैःक्षररके देप्रवनारायणणनमोऽस्तुते॥१३॥

बरिूलचन्द्ाहहिरेमहावृषृभवाहहतन।

माहेश्वरीस्त्वरूपेण नारायणणनमोऽस्तुते।।१४।।

मयूरकुककुटवृतेृमहािण्कतिरेऽनघे।

कौमारीरूपसंस्त्ाने नारायणणनमोऽस्तुते।।१५।।

खिचक्रगदािाङ्गागृहीतपरमायिुे।

प्रसीद व ष्णवीरूपे नारायणणनमोऽस्तुते।।१६।।

गृहीतोग्रमहाचक्रे दंष्ट्रोद्‌धृतविसुन्‍रि ।
वराहरूप्रपणण शिवे नारायणण नमोऽस्तु ते। ।। १७ ।।
नृशृसंहंरूपेणोगे्रेण हन्तुं द त्यान् ्कृतोद्यमे ।
र लोकयराणसहहते नारायणण नमोऽस्तु ते ।। १८ ।।
ककरीहटन महावज्रे सहरनयनोज्वले ।
वृत्रप्राणहरे च ण्न्द् नारायणण नमोऽस्तुते ।। १९ ।।
शिवदूतीस्त्वरूपेण हतद त्यमहाबले ।
घोररूपे महारावे नारायणण नमोऽस्तुते॥२०॥
दंष्ट्राकरालवदने शिरोमालाप्रवभूषणे ।

चामुर्ण्र्े मुण्मिर्ने नारायणण नमोऽस्तु ते ॥२१॥

लण्क्ष्मम लर्ज्र्े महाप्रवद्ये श्रर्द्र्े पुण्ष्टस्त्वे ध्रुवे।
महाराबर महाऽप्रवद्ये नारायणण नमोऽस्तुते॥२२॥

मेर्े सरस्त्वतत वरे भूतत बाभ्रप्रव तामशस।
तनयते त्वं प्रसीदिे नारायणण नमोऽस्तुते।।२३॥

सवस्त्ावरूपे सर्वे सविाण्कतसमण्न्वते।
भयेभ्यस्त्राहह नो देप्रव दुगेु देप्रव नमोऽस्तुते।।२४॥

एततेते वदनं सौम्यं लोचनरयभूप्रषतम् ्।
पातु नैः सवभीततभ्यैः कात्यायतन नमोऽस्तुते।।२५।।

ज्वालाकरालमत्युग्रमिेषासुरसूदनम् ्।
बस्र्ूलं पातु नो भीतेभर्द्ाकाशल नमोऽस्तु ते।।२६।।

हहनण्स्त द त्यतेर्ांशस स्त्वनेनापूय ाया िगत् ्।
सा घण्टा पातु नो देप्रव पापेभ्योऽनैः सुतातनव।।२७।।

असुरासृग्वसापंकचधचतास्ते करोज्वलैः ।
ुभाय खड्गो भवतु चण्ण्कि त्वां नता वयम्॥्२८ ॥

रोगानिषानपहंशस तुष्टा
रुष्टा तु कामान् ्सकलानभीष्टान् ्।

त्वामाधश्रतानां न प्रवपन्नराणां
त्वामाधश्रता ह्याश्रयतां प्रयाण्न्त।।२९ ।।
एतत्कृतं यत्कदनं त्वयाद्य
मिद्ाप्रवषां देप्रव महासुराणाम् ्।
रूप रनेक बह्धिाऽऽत्ममूततं ं
कृत्वाण्म्बके तत्प्रकरोतत कान्या ॥३०॥
प्रवद्यासु िास्त्रेषु प्रववेकदीपे-
ष्वाद्येषु वाकयेषु च का त्वदन्या ।
ममत्वगतेऽततमहान्किारे
प्रवभ्रामयत्येतदतीव प्रवश्वम् ्।। ३१ ।।
रक्षांशस यरोग्रप्रवषाश्च नागा
यरारयो दस्त्युबलातन यर ।
दावानलो यर तर्ाण्ब्मिये्
तर ण्स्त्ता त्वं पररपाशस प्रवश्वम् ्।।३२ ।।

प्रवश्वेश्वरर त्वं पररपाशस प्रवश्वं
प्रवश्वाण्त्मका िारयसीतत प्रवश्वम् ्।
प्रवश्वेवन्द्या भवती भवण्न्त
प्रवश्वाश्रया ये त्वतय भण्कतनम्रौः॥३३॥
देप्रव प्रसीद पररपालय नोऽररभीते-
तनत्यं यर्ासुरविादिुन व सद्यौः ।
पापातन सविागतां प्रिमं नयिु

उत्पातपाकितनतांश्च महोपसगान्। ्।।३४ ।।

प्रणतानां प्रसीदत्वंदेप्रवप्रवश्वाततहाािररणण।
र लोकयवाशसनामीड्येलोकानांवरदाभव॥३५।।

देव्युवाच।।३६।।

वरदाहं सुरगणावरंयन्मनसेच्छर्।
तं वृणुवं् प्रयच्छाशमिगतामुपकारकम् ्॥३७॥
देवा ऊचुः ।। ३८ ।।

सवाबिााप्रिमनंरलोकयस्त्याणखलेश्वरर।
एवमेव त्वया कायमास्त्मद्वररप्रवनिानम् ्।।३९।।
देव्युवाच॥४०॥

व वस्त्वतेऽन्तरेप्राप्तेअष्टाप्रवंतितमेयुगे।
ुम्भिो तनिुम्भश्चवान्यावुत्पत्स्त्यतेमहासुरी।।४१।।
नन्दगोपगृहेिातायोिदागभसाम्भवा।
ततस्त्तौ नितयष्याशमप्रवन्याचलतनवाशसनी।।४२।।
पुनरप्यततरौरेिद्ेणरूपेणपृधृर्वीतले।
अवतीय ाहतनष्याशम व प्रधचत्तांस्त्तुदानवान् ्।।४३।।
भक्षयन्त्याश्च तानुग्रान् ्वप्रधचत्तान्महासुरान् ्।
रकता दन्ता भप्रवष्यण्न्तदाडिमीकुसुमोपमाः।।४४।।
ततो मां देवताः स्त्वगेमत्यलाोकेचमानवाः।
स्त्तुवन्तो व्याहररष्यण्न्तसततंरकतदण्न्तकाम् ्।।४५।।
भूयश्च ितवाप्रषकायामनावृष्ट्यामनम्भशस।
मुतनशभैः संस्त्तुता भूमौ सम्भप्रवष्याम्ययोतनिा।।४६।।

ततैः ि तेन नेराणां तनरीज्ञक्षष्याशम यन्मुनीन् ्।
कीततायष्यण्न्त मन्िुौः िताक्षीशमतत मां ततैः ।।४७ ||

ततोऽहमणखलं लोकमात्मदेहसमुद्भव ैः ।
भररष्याशम सुरौः िाक रावृष्टैः प्राणिारक ैः ।।४८ ।।
ाकिम्भरीतत प्रवख्याततं ंतदा यास्त्याम्यहं भुप्रव ।
तर व च वधिष्याशम दुगुमाख्यं महासुरम् ्।। ४९ ।।
दुगुा ादेवीतत प्रवख्यातं तन्मे नाम भप्रवष्यतत ।
पुनश्चाहं यदा भीमं रूपं कृत्वा हहमाचले ।।५० ।।
रक्षांशस भक्षतयष्याशम मुनीनां राणकारणात् ्।
तदा मां मुनयैः सवे स्त्तोष्यन्त्यानम्रमूतयौः ।।५१ ।।
भीमा देवीतत प्रवख्यातं तन्मे ेनाम भप्रवष्यतत ।
यदारुणाख्यस्त्र लोकये महाबािां कररष्यतत ।।५२ ।।
तदाहं भ्रामरं रूपं कृत्वाऽसंख्येयषटपदम् ्।
र लोकयस्त्य हहतार्ााया वधिष्याशम महासुरम् ्||५३ ||
भ्रामरीतत च मां लोकास्त्तदा स्त्तोष्यण्न्त सवतौः ।
इत्र्ं यदा यदा बािा दानवोत्र्ाा भप्रवष्यतत ।।५४ ।।
तदा तदाऽवतीयाहां कररष्याम्यररसंक्षयम् ्।।५५ ।।

।।ॐ ।।

इतत श्रीमाकाण्डेयपुराणे सावणणके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्य ेंदेव्याः स्तुततनामैकादशोऽध्यायः ।।११।।

एकादश अध्याय

अन्त

असुर ों का अन्त हो जाने पर देवता बड़े ही प्रसन्न हुए और उनकी इच्छा पूण ा हुई। तत्मपश्चात वे देवी कात्मयातयनी के पास आए और तन्नानुस ार उनकी स्तुत त की, "हे देवव! हे दु: खों का नाश करने वाली ! प्रसन्न हों। हे जर्न्माता! हे ववश्व को तनयंत्र त्रत करने वाली परम माता! हम सभी की रक्षा करें और इस जर्त की रक्षा करें। आप इस जर्त का आिार हैं। आप ही हैं जो जर्त के रूप में प्रर्ट हुई हैं। आप जल हैं। आप तत्मव हैं। आप ववष्णुम ाया ह।ैं आप बंि न और मुज क्त का कारण हैं। समस्त ज्ञान आपका ही रूप है। सभी जस्त्रयााँ आप स्वयं ही ह।ैं हे माता! सब आपके ही द्वारा पूण ा हैं। आप सभी पुरु षों में बुद् धि हैं। हे नारायणी! आप ही स्वर्ा और मोक्ष की दाता हैं। आप समय, स्थान और कारणत्मव हैं। हे तनराशों का आश्रय स्थल ! नारायणी! आपको बारंबार प्रणाम है। जो आपकी शरण हैं उन भक्तों की सभी बािाओं का नाश करने वाली हे नारायणी! तु हें मेर ा प्रणाम है।

"कमंडिलुिारणकरनेवालीहेब्रह्माणी,हंसकीसवारीकरनेवाली!त्रत्रशूल,चंमिातथासपा िारण करने वाली माहेश्वरी, बैल पर सवारी करने वाली, महाशजक्त हे कुमारी, मयूर वाहहनी शंख , चक्र, दर्ा और पद्म, श्रृंर् और अनेक महा अस्त्रों को िारण करने वाली, हे वैष् णवी प्रसन्न हों। हे नारायणी, आपको प्रणाम है। हाथी पर सवार और वज्र हाथ में शलए हे इंिाणी! आपको प्रणाम है।

“हे नारायणी आपको प्रणाम है। नृशृ संहं के भयंक र रूप में और वराह के रूप में बड़ी सी थूथ न वाली हे नारायणी आपको प्रणाम है। उस देवी को प्रणाम है जजसने शशवदूत ी और काली के समान अनेकरूपिरे।हेभयंकरमुखमंडलिवाली,हेनारायणी,आपकोप्रणामहै।हेलक्ष्मी!हेकाली!हे सरस्वती! हमारी रक्षा करो। हे दुर् ा,ा हे नारायणी, आपको प्रणाम है। आपका त्रत्रशूल , चक्र, घंट ा, शंख , तलवार,जजसनेचंड,मुंड,शुंभ,तनशुंभकानाशककया,वेहमारीरक्षाकरें।हेनारायणी!आपको प्रणाम है।

"हे देवी! आप सभी रोर्ों का पूण ा नाश करने वाली हैं। जब आप प्रसन्न होती हैं, तो आपसे जोभीमार्ााँजाताहै,वहप्रदानकरतीहैं।जोआपमेंशरणलेतेहैं,उनकीकोईइच्छाशेषनहीं ं रहती। वे वास्तव में आपमें आश्रय प्राप्त करते हैं। जब यहााँ दुरु णा होते हैं, जब भी यहााँ राक्षस होते हैं, जब यहााँ अिमा की शजक्तयााँ होती हैं, तो आप स्वयं को प्रर्ट करती हैं और उनका नाश करती हैं। हे देवी! आप प्रसन्न हों और हमारी रक्षा करें। जर्त के पाप शीघ्र कम हो जाय।ें हे पूज नीय देवी! आपके चरणों में जस्थत हम देवताओं के ऊपर दया करें।"

देवीनेकहा,“मैंआपकोवरदानदेनाचाहतीहूाँ।हेदेवतार्ण,आपकोईभीएकवरदान मार्ाँ लें।मैंवहआपकोप्रदानकरूंर्ी।"देवताओंनेकहा,"आपनेसब-कुछककयाहै।बसआपइतनी कृपा करें कक हमारे सभी शत्रुओं का नाश हो जाए।"

देवीनेकहा,"वैष्णवमन्वंतरमेंअट्ठाइसवेंद्वापरयुर्में,मैंनंदर्ोपके घरयशोदाके र्भासेजन्मलूाँर्ीऔरएकबारऔरशुंभ-तनशुंभकानाशकरूाँर्ीजोववंध्यपवता मेंमेरेशत्रुकेरूप मेंपुनःजन्मलेंर्े।मैंअपनातनवासववंध्यपवता मेंबनाऊाँर्ीऔरउनकानाशकरूाँर्ी।मैंएक भयंकररूपिारणकरूाँर्ीऔरसभीदुष्टराक्षसोंकोमारदूंर्ी।मैंउन्हेंखाजाऊाँर्ीऔरउनकारक्त पीजाऊाँर्ी,जजसकेकारणमेरेदाताँ लालहोजाएंर्ेऔरमुझेदेवताऔरमनुष्यरक्तदंततकाकहकर पुकारेंर्े।

अकालहोर्ाऔरपृथ्वीकेऊपरसौवषोंतकवषाानहींहोर्ीतोपुनःमेरा आवाहनऋवषयोंद्वाराककयाजाएर्ा।तबमैंउनकेदुःखदूरूकरनेकेशलएजन्मलूाँर्ी।मैंउन्हेंसौ आखाँोंसेदेखूंर्ीऔरवेमुझेशताक्षीकहकरपुकारेंर्े।

"मैंसंपूणाजर्तकापेटमक्काऔरभोजनसेभरूाँर्ी,तबमुझेशाक्भरीकहकरपुकारा जाएर्ा।

“मैं एक राक्षस दुर् मा का नाश करूाँर्ी, तब मुझे दुर् ाा कह कर पुक ारा जाएर्ा।

"एकबारपुनःमैंहहमालयपवता मेंभयंकररूपिरूाँर्ीऔरऋवषयोंकीरक्षाकेशलएराक्षसों को भयभीत करूाँर्ी, तब मुझे भीमादेवी कह कर पुक ारा जाएर्ा।

लोर्ोंकोसताएर्ा,तबमैंभ्रमरकारूपिर करउनकानाशकरूाँर्ी।तबमुझेभ्रामरीकीभाताँतपूजाजाएर्ा।“इसप्रकारजबकभीभीकोई कहठनाईहुई,जब-जबराक्षसोंकाजन्महोनेलर्ा,तबऔरवहााँमैंस्वयंकोप्रर्टकरकेपृथ्वीपर शांत त लाती हूाँ।”

द्वादशोऽध्यायः

य्ानम् ्

ॐ प्रवद्युद्दामसमप्रभां मृगृपततस्त्कन्ण्स्त्रितां भीषणां
कन्याशभैः करवालखेटप्रवलसद्स्त्ताशभरासेप्रवताम् ्।
हस्त्त श्चक्रगदाशसखेटप्रवशिखांश्चापं गुणं तिर्नीि
बबभ्राणामनलाण्त्मकांिीिशिरांदुगुा ाबरनेरां भिे।।
'ॐ' देव्युव ाच ।। १ ।।

एशभैः स्त्तवश्चमांतनत्यंस्त्तोष्यतेयैःसमाहहतैः।
तस्त्याहं सकलांबिाांनितयष्याम्यसंयिम् ्॥२॥

मिुक टभनिां च महहषासुर घातनम् ् ।
कीतता यष्यण्न्त ये तद्वद् विं िुम् भतनिुम् भयौः ॥३॥
अष्टम्यां च चतुद ाश्यां नवम्यां चकचेत सैः ।
श्रोष्यण्न्त चव ये भकत्या मम माहात्म्यमुत्त मम् ् ॥४ ॥
न तेषांदुषुकृतंककण्ञ्चद्दुषुकृतोत्ऱानचापदैः।
भप्रवष्यतत न दाररद्र्यं न चवेष् टप्रवयोिनम् ् ॥५॥
रिुतोनभयंतस्त्यदस्त्युतोवानरितैः।
न िस्त्रानलतोयौघात्कदाधचत्सम्भप्रवष्यतत॥६॥
तस्त्मान्ममतन्माहात्म्यं पहठतव्यं समाहहतैः ।
श्रोतव्यं च सदाभकत्यापरंस्त्वस्त्त्ययनंहहतत् ्॥७।।
उपसगानिोषांस्त्तुमहामारीसमुद्भवान् ्।
तऱ् बरप्रविमुत् पातं माहात्म्यं िमयेन्मम ॥८ ॥

यर तत्पठ्यतेसम्यतनत्यमायतनेमम।
सदा न तद्प्रवमोक्ष्मयाशमसांतनय्ंतरमेण्स्त्रतम् ्।।९।।
बशलप्रदाने पूिायामण्नकायेमहोत्सवे।
सव ामम तच्चररतमुच्चायाश्राव्यमेवच॥१०॥
ानिताऽानिता वाप्रप बशलपू ां तरा् कृताम् ् ।
प्रतीण्च्छष्याम्यहं प्रीत्यावण्ह्वहोमंतरा्कृतम् ्।।११।।
रत्काले महापूिाकक्रयतेयाचवाप्रषकी।
तस्त्यां मम तन्माहात्म्यंश्रुत्वाभण्कतसमण्न्वतैः।।१२।।
सवाबा िाप्रवतनमुका तो िनिान्यसुत ाण्न्वतैः ।
मनुष्यो मत्प्रसादेन भप्रवष्यततनसंयिैः।।१३।।
श्रुत्वा मम तन्माहात्म्यंतरा्चोत्पत्तयैःुभिौः।
पराक्रमं च युर्दषेषु ियतेतनभयौःपुमान् ्॥१४॥
ररपवैः संक्ंषयं याण्न्तकल्याणंचोपपद्यते।
नन्दते च कुलं पुंसां माहात्म्यंममिृण्वताम् ्।।१५।।

ाण्न्तकमणाण सवरा तरा्दुैःस्त्वप्नदिनेो ।
ग्रहपीिासु चोग्रासु माहात्म्यंिृणुयान्मम।।१६।।
उपसगौःा िमं ंयाण्न्तग्रहपीिाश्चदारुणौः।
दुैःस्त्वप्नं च नृशभदृष्ाटंसुस्त्वप्नमुपिायते।।१७।।
बालग्रहाशभभूतानांबालानांाण्न्तकारकम् ्।
संघातभेदे च नृणांमरीकरणमुत्तमम् ्।।१८।।
दुवृत्ताानामिेषाणांबलहातनकरंपरम् ्।
रक्षोभूतप्रपिाचानां पठनादेव नािनम् ् ।।१९।।

सवं ंमम तन्माहात्म्यंममसण्न्नधिकारकम् ्।
पिपुष्पाघ्यिूपश्चगन्दिीपस्त्तर्ोत्तमैः।।२०।।

प्रवप्राणां भिोनहोमैः प्रोक्षणीयरहतनिा म् ् ।
अन्य श्चप्रवप्रविभोगैःप्रदानवत्ासरेणया।।२१।।
प्रीततमे कक्रयते साण्स्त्मन् ् सकृत्सुच ररते श्रुते ।
श्रुतं हरततपापातनतर्ाऽऽरोग्यंप्रयच्छतत।।२२।।
रक्षां करोतत भूते भ् यो िन्मनां कीतनां मम ।
युर्दोषुचिररतंयन्मेदुषुटदत्यतनबहाणम् ्।।२३।।

तण्स्त्मञ्तु वररकृतंभयंपुंसांनियते।
युष् माशभैः स्त्तुत यो याश्च याश्च ब्रह्मप्रषशा भैः कृतौः ।।२४ ।।
ब्रह्मणा च कृतास्त्तास्त्तु प्रयच्छण्न्त िुभ ां मततम् ् ।
अरण्ये प्रान्तरे वाप्रप दावाण्ग्नपररवाररतैः ।। २५ ।।
दस्त्युश भवाा वृत् ैः िून् ये गृह्ह ीतो वाप्रप िरुश भैः ।
शसंहंव्यिाानुयातोवावनेवावनहण्स्त्तशभैः।।२६।।
राज्ञा कुरुर्दोनिचाज्ञप्तोवय्ोबन्गितोऽप्रपवा।

आघूणणतोोवावातेनण्स्त्र्तैःपोतेमहाणवे ।।२७।।

पतत्सु चाप्रप िस्त्रेषु संग्र ामे भिृ दारुणे ।
सवाबिाासुघोरासुवेदनाभ्यहदातोऽप्रपवा।।२८॥
स्त्मरन्ममतच्चररतं नरो मुच् येत संक टात् ् ।
मम प्रभावाण्त्संहाद्यादस्त्यवोवररणस्त्तर्ा।।२९।।
दूरूादेव पलायन्तेस्त्मरतश्चररतंमम।।३०॥

ऋप्रषरुवाच ॥३१ ॥

इत्युकत्वा सा भगवती चण्ण्किा चण्प्रिवक्रमा ।।३२।।

पश्यतामेव देवानां तर वान्तर्रीयत ।

तेऽप्रप देवा तनरातंका स्त्वाधिकारान् ्यऱ्ा पुरा ॥३३॥

यज्ञभागभिु: सवे चकुरुप्रवतानहतारयै: ।

द त्याश्च देव्या तनहते िुम्भे देवररपौ युधि ॥३४॥

गिद्प्रवव्ंशसतन तण्स्त्मन् ्महोग्र ऽतुलप्रवक्रमे ।

तनिुम्भे च महावीये िषौ: पातालमाययुै: ।।३५ ॥

एवं भगवती देवी सा तनत्याप्रप पुनै: पुनै: ।

सम्भूय कुरुते भूप िगतै: पररपालनम् ्।। ३६ ।।

तय तन्मोह्यते प्रवश्वं स व प्रवश्वं प्रसूयते ।

सा याधचता च प्रवज्ञानं तुष्टा ऋद्धिं ंप्रयच्छतत ॥३७॥

व्याप्तं तय तत्सकलं ब्रह्माण्ं मिनुेश्वर ।

महाकाल्या महाकाले महामारीस्त्वरूपया ॥३८ ।।

स व काले महामारी स व सृणृष्टभवात्यिा ।

ण्स्त्रततं ंकरोतत भूतानां स व काले सनातनी ।।३९ ॥

भवकाले नृणां स व लक्ष्ममीवृद्धिप्रदा गृहे ।

स वाभावे तऱ्ाऽलक्ष्ममीप्रवनिाायोपियते ।।४० ॥

स्त्तुता सम्पूण्तिा पुष्पिू पागन्ाहिदशभस्त्तऱ्ा ।

ददातत प्रवत्तं ंपुरांश्च मततं ंिमे गततं ंिुभाम् ्।। ४१ ।।

।।ॐ ।।

इतत श्रीमाकाणे्यिपुराणे सावणणको मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये फलस्त्तुततनामा द्वादशोऽध्याय: ।।१२।।

द्वादश अध्याय

कल्याण केलिएपुनरखट्ूँी,औरजोभीकेसबसभीकष्टोंकोदूरूकरदूंर्ी।जोभीमुिैत्रस,शुिम्भऔरतनशुंभकेउसके
नाश की मेर ी महहमा की कहातनयों का श्रवण करेर्ा, उन्हें कभी ककसी प्रकार का कष्ट नहीं होर्ा।
उनके पास कभी भी रींबी नहीं आएर्ी। उनको शत्रु अथवा राजा से कोई भय नहीं रहेर्ा। उन्हें अस्त्र,
अजग्न और वषाा से ककसी प्रकार का भय नहीं रहेर्ा। इसशलए मेर ी इन कथाओं का सभी को तनत्मय
पाठ करना चाहहए। इसका सभी को तनत्मय श्रवण करना चाहहए। यह महान फलदायक है। मेरे
माहात्म्य से बड़े से े बड़े पापों का नाश जाता है। मेर ी महहमा के र्ान से े त्रत्रतापों का शमन होता है।
जहााँ भी मेर ी महहमा का र्ान होता है तथा जहााँ भी मेर ी भजक्तपूव का पूज ा की जाती है, वहााँ मैं सदा
तनवास करती हूाँ। शरद ऋतु में मेर ी पूज ा भजक्तपूव का की जाती है, क्योंकक यह मुझे बड़ी ही वप्रय है।
पूज ा के समय मेर ी इन कथाओं का श्रवण ककया जाना चाहहए। ऐसा करने से सभी समृद् धिशाली और
शांततपूण ा रहेंर्े। राजाओं को युद् ि में ववजय प्राप्त होर्ी और उनके शत्रुओं का नाश होर्ा। सवत्रा
आनंदऔरशांततहोर्ी।जोपररवारसदामेरीमहहमाकार्ानकरेर्ा,वहसदासमृद्धिऔरशांततसे
पूण ा होर्ा। जो सदा मेरे भक्तों की रक्षा हेतु तत्मपर रहेर्ा, उसके सभी रोर् और धचंतं ाऐं मेरे द्वारा हर
ली जाऐंर् ी। मेरे भक्तों को कभी दु: स्वप्न नहीं आयर्ें और उन्हें राक्षसों तथा प्रेत ों से कोई भी कष्ट
पाठसेकष्टसमाप्तहोजाऐंर्े।मेरायह
नहींहोर्ा।मेरेमाहात्म्यसेसंबंधितकहातनयोंके
माहात्म्य ही सब कुछ है। पुष्पों तथा चंदन से ववधिपूव का मेर ी पूज ा करने के उपरांत ब्राह्मणों को
भोजन कराया जाना चाहहए। मेरे मन्त्र तथा महहमा के साथ हवन ककया जाना चाहहए और दान ककया
जाना चाहहए। मेर ी पूज ा तथा ब्राह्मण भोजन आनंद पूव का कराया जाना चाहहए। मैं इससे अपने भक्तों
से बड़ी ही शीघ्र प्रसन्न हो जाती हूाँ।

"मेर ी शजक्त सभी रोर्ों का नाश करती है और उत्तम स्वास्थ्य प्रदान करती है। यह पाठ करने
वाले की रक्षा करती है और शांत त का संर क्षण करती है। मेरे जन्म तथा कायों का र्ान जो कक पूव ा में
ब्रह्मा और ऋवषयों ने भी ककया है, जैस ा आप सभी ने भी र्ाया, वह आस्थावान और समवपता भक्त
कोस्वास्थ्य,शांततऔरआनंदप्रदानकरताहै।मेरेस्मरणमात्रसेव्यजक्तकहठनाइयोंतथादु:खों को पार कर लेत ा है। मेर ी
शजक्त के कारण सभी शत्रु ु और दुष्ु ट पशु मेरे भक्त के पास से दूरू भार्
जाते हैं।"

ऋवष ने कहा : इतना कहते ही देवी तत्मक्षण अदृश्य हो ई। देवता स्वर् पर शासन करने लर्े
और यज्ञ का भार् पाने लर्े तथा सदा प्रसन्नतापूव का तनवास करने लर्े। सभी असुर अपनी शजक्त

खोने के बाद भयभीत हो कर पाताल में भार् येंऔरवहााँबेचैनरहनेलरे्। हे राजन! इस प्रकार देवी पृथ्ूवी पर िम ाकी स्थापना हेतु स्वयं को प्रर्टकरतीहैंऔरअपनेभक्तों की रक्षा करती हैं। वे समस्त जर्त को मोहहत करती हैं और मा ाँकी भाताँतजर्तपरतनयन्त्रणकरती हैं। हे राजन! यह संपूण ाजर्त उस महादेवी द्वारा व्याप्त है। वह महाशजक्तइससंपूणाववश्वका सृजृन करती है और वह स्वयं ही संसार के दःुख और प्रसन्नता का कारणहै।

त्रयोदशोऽध्यायः

य्ानम् ्

ॐ बालाकामण्लिाभासां चतुबाह्वां बरलोचनाम् ्।
पिाांकुिवराभीतिीारायन्तीं शिवांभिे॥
'ॐ' ऋप्रषरुवाच ॥ १ ॥

एततेृ्ते कधर्तं भूप देवीमाहात्म्यमुत्त मम् ् ।
एवंप्र भावा सा देवी ययेदं िायतो िगत् ् ॥२॥
प्रवद्या तर्व कक्रयते भगवद्प्रवष्णुम ायया ।
तया त्वमेषवश्यश्चतर्वान्येप्रववेककनैः॥३॥
मोह्यन्ते मोहहताश्चव मोहमेष् यण्न्त चापरे ।
तामुपहहमहािरािरणंपरमेश्वरीम् ्॥४॥
आराधिता सव नृणृ ां भोगस्त्वगापा वगदा ा ॥५॥

माकाणर््येयिउवाच||६॥

इतत तस्त्यवचैःश्रुत्वासुररै्ःसनराधिपैः॥७।।

प्रणणपत्य महाभागं तमृपूर षं ं िश सतव्रतम् ् ।
तनप्रवण्ा णोऽततममत्वेन राज्यापहरणेन च ॥८ ॥
गिाम सद्यस्त्तपसे स च वश्यो महामुने ।
संद िना ार्मा म्बाया नदीपुश लनसंण् स्त्रतैः ।।९।।

स च व श्यस्त्तपस्त्तेपेदेवीसूक्तंपरंपिन् ्।
तौ तण्स्त्मन् ्पुशलने देव्यौःकृत्वामूततामहीमयीम् ्।।१०।।

अहाणां चक्रतुस्त्तस्त्यौःपुष्पिपूाण्ग्नतपणौः।
तनराहारौ यताहारौ तन्मनस्त्कौसमाहहतौ।।११।।
ददतुस्त्तौ बशलं ंच वतनिगारासृगुज्ञक्षतम् ्।
एवं समारियतोण्स्त्रशभवषैायतााात्मनौः।।१२।।
पररतुष्टा िगद्िरी प्रत्यक्षं ंप्राहचण्ण्किा।।१३।।

देव्युवाच।।१४।।

यत्प्राथ्यतो त्वया भूपत्वयाचकुलनन्दन।
मत्तस्त्तत्प्राप्यतां सवं ंपररतुष्टाददाशमतत् ्।।१५।।
माकाण्र्यि उवाच ॥। १६ ।।

ततो वव्रे नृपृ ो राज्यमप्रवभ्रंश् यन्यिन्मतन ।
अर वचतनिंराज्यंहतिरुबुलंबलात् ्।।१७।।
सोऽप्रप वश्यस्त्ततो ज्ञानं वव्रे तनप्रवण्ा णमानसैः ।
ममेत्यहशमततप्राज्ञैःसङ्गप्रवच्युततकारकम् ्।।१८।।
देव्युवाच।।१९।।

स्त्वल्प रहोशभनृपाते स्त्वंराज्यंप्राप्स्त्यतेभवान् ्॥२०॥

हत्वा ररपूनस्त्खशलतंतवतरभप्रवष्यतत।।२१।।

मृतृश्च भूयैः सम्प्राप्यिन्मदेवाद्प्रववस्त्वतैः।।२२।।

सावणणकाो नाम मनुभवाान् ्भुप्रवभप्रवष्यतत।।२३।।

व श्यवय ात्वया यश्चवरोऽस्त्मत्तोऽशभवाण्ञ्छतैः||२४||

तं प्रयच्छाशम संशसद्यतवज्ञानंभप्रवष्यतत।।२५।।

माकाण्ड्येय उवाच ।। २६ ।

इतत दत्त्वा तयोदेवीयर्ाशभलप्रषतंवरम् ्।।२७।।

बभूवान्तहहताा सद्योभकत्याताभ्यामशभष्टुता।
एवं देव्या वरं लब्व्ासुररैःक्षबरयषभौः।।२८।।
सूयाज्न्मि समासाद्यसावणणभाप्रावतामनुैः।।२९।।

एवं देव्या वरंलब्विासुररैःक्षबरयषभौः
सूयाज्न्मि समासाद्यसावणणभाप्रावतामनुैः।।३०।।
।। कलीं ॐ ।।

इतत श्रीमाकाण्ड्येयपुराणेसावणणकेमन्वन्तरेदेवीमाहात्म्ये
सुरर्व श्ययोवराप्रदानंनामरयोदिोऽयायैः।।१३।।

त्रयोदश अध्याय

ऋवष कहते हैं : इस प्रकार मनैं देवी के माहात्म्य की सभी कथाओं का वणना ककया। वह वविा अथवा ववष्णु शजक्त का बुद् धिमूल अथवा माया है तथा वह ही अवविा है और वह ही दोनों है। उसके ही द्वारा तुम और यह वैश् य मोहहत हुए हो तथा अन्य सभी भी इसी प्रकार मोहहत होते हैं।
हेराजन!तुमउन्हींभर्वतीकीशरणमेंजाओ,जोसुखकरनेवालीहैं।कीदाताहैंतथासाथही
अपने भक्तों को स्वर् और मोक्ष को प्रदान करने वाली है ।

माकंडेय ऋवष ने कहा : मुतन के इन वचनों को सुन कर राजा सुरथ का हृदय पररवतना हो
र्या और वे तत्मकाल कठोर तप करने के शलए घने वन में चले र्ए। | वैश् य ने भी उनका अनुक रण
ककया और तनरंतर देवी सूक् त का पाठ करते हुए वे दोनों नदी के तट पर कठोर तपस्या करने लरे्।
राजा सुर थ अपना राज्य और संप वत्त पुन ः प्राप्त करने के शलए देवी के दशना करना चाहते थे। उन
दोनों ने देवी की षिोशोपचार पूज ा के शलए नदी के ककनारे की शमट्टी से देवी की प्रततमा का तनमाणा
ककया। दोनों ने ही अपने मन को देवी के ऊपर एकाग्र ककया। तीन वषों तक कठोर तपस्या करने पर
देवी प्रसन्न हुई और उनके सामने प्रर्ट हो कर बोलीं, “तुम क्या चाहते हो, कहो। मैं तुम दोनों से
प्रसन्न हूाँ। वरदान मार्ाँ ो, मैं तु हें कुछ भी देने के शलए तैय ार हूाँ।"

माकाण्डेय ऋवष ने कहा : राजा ने देवी से अपना खोया हुआ राज्य वापस मााँर्ा। लेककन वैश्य
ने देवीसेज्ञानकेशसवाकुछनहींमार्ाँा।

देवी ने कहा, “कुछ हदनों के पश्चात तु हें तु हारा राज्य वापस शमल जाएर्ा। तुम अपने
शत्रुओं पर ववजय प्राप्त करोरे् और प्रसन्नतापूव का राज्य करोरे्। | मृतूम यु के उपरांत तुम सूय ा के अंश
द्वारा आठवें मनु के रूप में जन्म लोरे् और सावणणा के नाम से ववख्यात होरे् और वैश् य तु हारी
इच्छानुस ार मैं तु हें ज्ञान प्रदान करती हूाँ।"

माकाण्डेय ऋवष ने कहा : इस प्रकार उन दोनों को वरदान दे कर देवी अदृश्य हो ई। देवी से
वरदान प्राप्त करके राजा सुर थ ने अर्ले जन्म में सूय ा देव के अंश से े जन्म शलया और सावणणा के
नाम से ववख्यात हुए।

यह देवी दुर् ाा का माहात्म्य था।

क्षमा-प्राथनाा

अपरिासहराणणकक्रयन्तेऽहतनिंा मया ।
दासोऽयशमततमांमत्वाक्षमस्त्व परमेश्वरर ।।१ ।।
आवाहनंनिनाशमनिनाशम प्रवसिनाम् ्।
पूिां चवनिनाशमक्षम्यतां परमेश्वरर ॥२ ॥
मन्त्रहीनंकक्रयाहीनंभण्कतहीनं सुरेश्वरर ।
यत्पूण्तिंमयादेप्रवपररपूण ातदस्तु मे ॥३॥
अपराििातंकृत्वािगदम्बेतत चोच्चरेत् ्।
यां गततं ंसमवाप्नोततनतांब्रह्मादयैः सुरौः ॥४ ॥
सापरािोऽण्स्स्मरणंप्राप्तस्त्वां िगदण्म्बके ।
इदानीमनुकम्प्योऽहंयरे्च्छशस तरा् कुरु॥५॥
अज्ञानाद्प्रवस्मृते्भ्रान्त्यायन्यूनमधिकं कृतम् ्।
तत्सवं ंक्षम्यतांदेप्रवप्रसीद परमेश्वरर॥६॥
कामेश्वररिगन्मातैःसण्च्चदानन्दप्रवग्रहे ।
गृहाणाचाशाममांप्रीत्याप्रसीद परमेश्वरर ॥७।।
गुह्यातितगुह्यगोरीत्वंगृहाणास्त्मत्कृतं िपम् ्।
शसद्धिभवातुमेदेप्रवत्वत्प्रसादात्सुरेश्वरर ॥८ ॥
।।श्रीदुगाापाणामस्तु ।।

क्षमा-प्रानार्ा

दुगा् ासप्तसती के पाठ में जाने-अनजाने हुई भूलों के शलए पाठ के अन्त में की जाने वाली प्राथनाा।

ॐ

श्री देव्यष्टोत्तरशतनामावशलः

१.ॐआहदिकतये नमैः
२.ॐमहादेव्य नमैः
३.ॐअण्म्बकाय नमैः
४.ॐपरमेश्वयै नमैः
५.ॐईश्वयै नमैः
६.ॐअनीश्वयै नमैः
७.ॐयोधगन्य नमैः
८.ॐसवभूातेश्वयै नमैः
९.ॐयिाय नमैः
१०.ॐप्रवियाय नमैः
११.ॐयिन्त्य नमैः
१२.ॐाम्भिव्य नमैः
१३.ॐान्त्यि नमैः
१४.ॐब्राह्मय नमैः
१५.ॐब्रह्माण्ड्ाािररण्य नमैः
१६.ॐमहारूपाय नमैः
१७.ॐमहामायाय नमैः
१८.ॐमाहेश्वयै नमैः
१९.ॐलोकरज्ञक्षण्य नमैः
२०.ॐदुगुाया नमैः
२१.ॐदुगुपााराय नमैः
२२.ॐभकतधचन्तामण्य नमैः
२३. ॐ मृतृ्यनमैः
२४. ॐ शसद्यिनमैः
२५. ॐ मूत्यैनमैः
२६. ॐ सवशासद्धिप्रदायनमैः
२७. ॐ मन्रमूत्यैनमैः
२८. ॐ महाकाल्यनमैः
२९. ॐ सवमूाततस्त्ावरूप्रपण्यनमैः
३०. ॐ वेदमूत्यनमैः'
३१. ॐ वेदभूत्यनमैः
३२. ॐ वेदान्तायनमैः
३३. ॐ व्यवहाररण्यनमैः
३४. ॐ अनघायनमैः
३५. ॐ भगवत्यनमैः
३६. ॐ रौर्द्ायनमैः
३७. ॐ रुर्द्स्त्वरूप्रपण्यनमैः
३८. ॐ नारायण्यनमैः
३९. ॐ नारशसंहृ्यनमैः
४०. ॐ नागयज्ञोपवीततन्यनमैः
४१. ॐ िंखचक्रगदिाररण्यनमैः
४२. ॐ िटामुकुटिोशभन्यनमैः
४३. ॐ अप्रमाणायनमैः
४४. ॐ प्रमाणायनमैः

४५. ॐ आहदमय्ावसानायनमैः
४६. ॐ पुण्यदायनमैः
४७. ॐ पुण्योपचाररण्यनमैः
४८. ॐ पुण्यकीत्यैनमैः
४९. ॐ स्त्तुतायनमैः
५०. ॐ प्रविालाक्षमयनमैः
५१. ॐ गम्भीरायनमैः
५२. ॐ रूपाण्वतायनमैः
५३. ॐ कालरात्र्यनमैः
५४. ॐ अनल्पशसद्यनमैः
५५. ॐ कमलायनमैः
५६. ॐ पद्मवाशसन्यनमैः
५७. ॐ महासरस्त्वत्यनमैः
५८. ॐ मनैःशसद्यिनमैः
५९. ॐ मनोयोधगन्यनमैः
६०. ॐ मातङ्धगन्यनमैः
६१. ॐ चण्मिुण्चािररण्यनमैः
६२. ॐ द त्यदानवनाशिन्यनमैः
६३. ॐ मेषज्योततषायनमैः
६४. ॐ परंज्योततषायनमैः
६५. ॐ आत्मज्योततषायनमैः
६६. ॐ सवज्ायोततस्त्वरूप्रपण्यनमैः
६७. ॐ सहरमूत्यैनमैः
६८. ॐ िवाण्ायनमैः
६९. ॐ सूयमूातस्त्ावरूप्रपण्यनमैः
७०. ॐ आयुलक्ष्माम्यनमैः
७१. ॐ प्रवद्यालक्ष्मम्यनमैः
७२. ॐ सवलाक्ष्ममीप्रदायनमैः
७३. ॐ प्रवचक्षणायनमैः
७४. ॐ क्षीराणवावाशसन्यनमैः
७५. ॐ वागीश्वयैनमैः
७६. ॐ वाण्कसद्यनमैः
७७. ॐ अज्ञानज्ञानगोचरायनमैः
७८. ॐ बलाय नमैः
७९. ॐ परमकल्याण्यनमैः
८०. ॐ भानुमण्लिवाशसन्यनमैः
८१. ॐ अव्यकतायनमैः
८२. ॐ व्यकतरूपायनमैः
८३. ॐ अव्यकतरूपायनमैः
८४. ॐ अनन्तायनमैः
८५. ॐ चन्द्रायनमैः
८६. ॐ चन्द्मण्लिवाशसन्यनमैः
८७. ॐ चन्द्मण्लिमण्ण्तायनमैः
८८. ॐ भ रव्य नमैः
८९. ॐ परमानन्दायनमैः

९०. ॐ शिवायनमैः

९१. ॐ अपराण्तायनमैः
९२. ॐ ज्ञानप्राप्त्यनमैः

९३. ॐ ज्ञानवत्य नमैः

९४. ॐ ज्ञानमूत्य नमैः

९५. ॐ कलावत्य नमैः

९६. ॐ श्मिानवाशसन्यनमैः

९७. ॐ मारे नमैः

९८. ॐ परमकण्ल्पन्यनमैः

९९. ॐ घोषवत्य नमैः

१००. ॐ दाररद्र्यहाररण्यनमैः

१०१. ॐ शिवर्तिीमुख्यनमैः

१०२. ॐ प्रवष्णुवल्लभायनमैः

१०३. ॐ किंप्रवभूप्रषतायनमैः

१०४. ॐ कूमाया नमैः

१०५. ॐ महहषासुरघाततन्यनमैः

१०६. ॐ सवराक्षायनमैः

१०७. ॐ महाकाल्यनमैः

१०८. ॐ महालक्ष्मम्यनमैः

इतत श्रीदेव्यष्टोत्तरशतनामावशलः।

ॐ

श्रीलक्ष्यष्टोत्तरशतनामावशलः

१. ॐ प्रकृत्य नमैः

२. ॐ प्रवकृत्य नमैः

३. ॐ प्रवद्याय नमैः

४. ॐ सवभूा त हहतप्रदाय नमैः

५. ॐ श्रद्धयि नमैः

६. ॐ प्रवभूत् य नमैः

७. ॐ सुर भ्य नमैः

८. ॐ परमाण्त्मकाय नमैः

९. ॐ वाचे नमैः

१०. ॐ पद्मालयाय नमैः

११. ॐ पद्माय नमैः

१२. ॐ िुच ये नमैः

१३. ॐ स्त्वाहाय नमैः

१४. ॐ स्त्विाय नमैः

१५. ॐ सि ु ाय नमैः

१६. ॐ िन्याय नमैः

१७. ॐ हहरण्मय्य नमैः

१८. ॐ लक्ष्मम्य नमैः

१९. ॐ तनत्यपुष् टाय नमैः

२०. ॐ प्रवभावयै नमैः

२१. ॐ अहदत्य नमैः

४३. ॐ पद्माक्ष्मय नमैः

४४. ॐ पद्मसुन् दयै नमैः

४५. ॐ पद्मोद्भवाय नमैः

४६. ॐ पद्ममुख् य नमैः

४७. ॐ पद्मनाभप्रप्रयाय नमैः

४८. ॐ रमाय नमैः

२२. ॐ हदत्यनमैः २३. ॐ दीप्तायनमैः

२४. ॐ वसुिायनमैः २५. ॐ वसुिाररण्यनमैः

२६. ॐ कमलायनमैः २७. ॐ कान्तायनमैः २८. ॐ कामाक्ष्मयनमैः

२९. ॐ क्रोिसंभवायनमैः

३०. ॐ अनुग्रहप्रदायनमैः

३१. ॐबुद्धयैनमैः

३२. ॐ अनघायनमैः

३३. ॐ हररवल्लभायनमैः

३४. ॐ अिोकायनमैः

३५. ॐ अमृतायनमैः

३६. ॐ दीप्तायनमैः

३७. ॐ लोकिोकप्रवनाशिन्यनमैः

३८. ॐ िमतानलयायनमैः

३९. ॐ करुणायनमैः

४०. ॐ लोकमारे ेनमैः

४१. ॐ पद्मप्रप्रयायनमैः

४२. ॐ पद्महस्तायनमैः

६७. ॐ शिवकयै नमैः

६८. ॐ सत्यनमैः

६९. ॐ प्रवमलायनमैः

७०. ॐ प्रवश्विनन्यनमैः

७१. ॐ पुष्टय नमैः

७२. ॐ दाररद्र्यनाशिन्यनमैः

४९. ॐ पद्ममालिरायनमै:

५०. ॐ देव्य नमै:

५१. ॐ पद्शमन्यनमै:

५२. ॐ पद्मगण्न्यिनमै:

५३. ॐ पुण्यगन्यिनमै:

५४. ॐ सुप्रसन्नायनमै:

५५. ॐ प्रसादाशभमुख्यनमै:

५६. ॐ प्रभायनमै:

५७. ॐ चन्द्रद्वदनायनमै:

५८. ॐ चन्द्ायनमै:

५९. ॐ चन्द्सहोदयैनमै:

६०. ॐ चतुभिुायनमै:

६१. ॐ चन्द्रूपायनमै:

६२. ॐ इण्न्दरायनमै:

६३. ॐ इन्दुिीतलायनमै:

६४. ॐ आह्लादिनन्यनमै:

६५. ॐ पुष्टय नमै:

६६. ॐ शिवाय नमै:

७३. ॐ प्रीततपुष्कररण्य नमै:

७४. ॐ िान्ताय नमै:

७५. ॐ िुकलमाल्याम्बराय नमै:

७६. ॐ धश्रय नमै:

७७. ॐ भास्त्कयै नमै:

७८. ॐ बबल्वतनलयाय नमै:

७९. ॐ वरारोहाय नमै:

८०. ॐ यिण्श्वन्य नमै:

८१. ॐ वसुन्रिय नमै:

८२. ॐ उदाराङ्गाय नमै:

८३. ॐ हररण्य नमै:

८४. ॐ हेममाशलन्य नमै:

८५. ॐ िनिान्यकयै नमै:

८६. ॐ शसद्यि नमै:

८७. ॐ स्त्रण सौम्याय नमै:

८८. ॐ िुभप्रदाय नमै:

८९. ॐ नृपृवेश्मगतानन्दाय नमै:

९०. ॐ वरलक्ष्मम्य नमै:

९१. ॐ वसुप्रदायनमैः

९२. ॐ िुभायनमैः

९३. ॐ हहरण्यप्राकारायनमैः

९४. ॐ समुर्द्तनयायनमैः

९५. ॐ िायनमैः

९६. ॐ मङ्गलायदेव्यनमैः

९७. ॐ प्रवष्णुवक्षस्त्रलण्स्त्रतायनमैः

९८. ॐ प्रवष्णुपत्न्यनमैः

९९. ॐ प्रसन्नाक्ष्मयनमैः

१००. ॐ नारायणसमाधश्रतायनमैः

१०१. ॐ दाररद्र्यवं्शसन्यनमैः

१०२. ॐ देव्य नमैः

१०३. ॐ सवोपर्द्ववाररण्यनमैः

१०४. ॐ नवदुगाुाया नमैः

१०५. ॐ महाकाल्य नमैः

१०६. ॐ ब्रह्मप्रवष्णुशिवाण्त्मकायनमैः

१०७. ॐ बरकालज्ञानसंपन्नायनमैः

१०८. ॐ भुवनेश्वयै नमैः

इतत श्रीलक्ष्म्ष्टोत्तरशतनामावशलः।

ॐ

श्रीसरस्वत्मयष्टोत्तरशतनामावशलः

१.ॐश्रीसरस्त्वत्य नमैः
२.ॐमहामायाय नमैः
३.ॐवरप्रदाय नमैः
४.ॐश्रीप्रदाय नमैः
५.ॐपद्मतनलयाय नमैः
६.ॐपद्माक्ष्मय नमैः
७.ॐपद्मवकराय नमैः
८.ॐशिवानुिाय नमैः
९.ॐपुस्त्तकहस्त्ताय नमैः
१०.ॐज्ञानमुर्द्ाय नमैः
११.ॐरमाय नमैः
१२.ॐकामरूप्रपण्य नमैः
१३.ॐमहाप्रवद्याय नमैः
१४.ॐमहापातकनाशिन्य नमैः
१५.ॐमहाश्रयाय नमैः
१६.ॐमाशलन्य नमैः
१७.ॐमहाभोगाय नमैः
१८.ॐमहाभुिाय नमैः
१९.ॐमहाभाय नमैः
२०.ॐमहोत्साहाय नमैः
२१.ॐहदव्याङ्गय नमैः

२२. ॐ सुरवण्न्दताय नमैः
२३. ॐ महाकाल्य नमैः
२४. ॐ महापाििाय नमैः
२५. ॐ महाकाराय नमैः
२६. ॐ महांकुिाय नमैः
२७. ॐ पीताय नमैः
२८. ॐ प्रवमलाय नमैः
२९. ॐ प्रवश्वाय नमैः
३०. ॐ प्रवद्युन्मालाय नमैः
३१. ॐ व ष्णव्य नमैः
३२. ॐ चण्न्द्काय नमैः
३३. ॐ चन्द्लेखाप्रवभूप्रषताय नमैः
३४. ॐ साप्रवत्र्य नमैः
३५. ॐ सुरसाय नमैः
३६. ॐ देव्य नमैः
३७. ॐ हदव्यालंकारभूप्रषताय नमैः
३८. ॐ वाग्देव्य नमैः
३९. ॐ वसुदाय नमैः
४०. ॐ तीव्राय नमैः
४१. ॐ महाभर्द्ाय नमैः
४२. ॐ महाबलाय नमैः

४३. ॐ भोगदाय नमैः
४४. ॐ भारत्य नमैः
४५. ॐ भामाय नमैः
४६. ॐ गोप्रवन्दाय नमैः
४७. ॐ गोमत्य नमैः
४८. ॐ िहटलाय नमैः
४९. ॐ प्रवन्यावासाय नमैः
५०. ॐ चण्ण्िकाय नमैः
५१. ॐ ब्राह्मय नमैः
५२. ॐ ब्रह्मज्ञान कसिनाय नमैः
५३. ॐ सौदाशमन्य नमैः
५४. ॐ सिुामूत्यै नमैः
५५. ॐ सुभर्द्ाय नमैः
५६. ॐ सुरपूण्तिाय नमैः
५७. ॐ सुवाशसन्य नमैः
५८. ॐ सुनासाय नमैः
५९. ॐ प्रवतनर्द्ाय नमैः
६०. ॐ पद्मलोचनाय नमैः
६१. ॐ प्रवद्यारूपाय नमैः
६२. ॐ प्रविालाक्षमय नमैः
६३. ॐ ब्रह्मिायाय नमैः
६४. ॐ महाबलाय नमैः
६५. ॐ रयीमूतयो नमैः
६६. ॐ बरकालज्ञाय नमैः

६७. ॐ बरगुणाय नमैः
६८. ॐ िास्त्ररूप्रपण्यनमैः
६९. ॐ िुम्भासुरप्रमधर्न्यनमैः
७०. ॐ िुभदाय नमैः
७१. ॐ सवाण्ात्मकायनमैः
७२. ॐ रकतबीतनहन्त्र्यनमैः
७३. ॐ चामुण्ियिनमैः
७४. ॐ अण्म्बकायनमैः
७५. ॐ मुण्िकायप्रहरणायनमैः
७६. ॐ िूम्रलोचनमदानायनमैः
७७. ॐ सवदोवस्तुतायनमैः
७८. ॐ सौम्यायनमैः
७९. ॐ सुरासुरनमस्त्कृतायनमैः
८०. ॐ कालरात्र्यनमैः
८१. ॐ कलिारायनमैः
८२. ॐ वाग्देव्यनमैः
८३. ॐ वरारोहायनमैः
८४. ॐ वाराहीनमैः
८५. ॐ वाररिासनायनमैः
८६. ॐ धचराम्बरायनमैः
८७. ॐ धचरगन्ियिनमैः
८८. ॐ धचरमाल्यप्रवभूप्रषतायनमैः
८९. ॐ कान्तायनमैः
९०. ॐ कामप्रदायनमैः

९१. ॐ वन्द्याय नमैः ९२. ॐ रूपसौभाग्यदातयन्य नमैः

९३. ॐ श्वेताननाय नमैः

९४. ॐ सुभ्िाय नमैः

९५. ॐ श्वेतस्त्तनसुपूण्िताय नमैः

९६. ॐ रकतमय्ाय नमैः ९७. ॐ नीलिङ्घाय नमैः ९८. ॐ तनरञ्िनाय नमैः

९९. ॐ चतुराननसाम्राज्याय नमैः

१००. ॐ चतुवगाफालप्रदाय नमैः

१०१. ॐ हंसासनाय नमैः

१०२. ॐ ब्रह्मप्रवष्णुशिवाण्त्मकाय नमैः

१०३. ॐ प्रवन्य्ाचलप्रवराण्िताय नमैः

१०४. ॐ पराय नमैः

१०५. ॐ स्त्वराण्त्मकाय नमैः

१०६. ॐ चन्द्रद्वदनाय नमैः

१०७. ॐ शिवाय नमैः

१०८. ॐ सरस्त्वत्य नमैः

इतत श्रीसरस्वत्मयष्टोत्तरशतनामावशलः।

श्री स्वामी शशवानन्द जी के नवरात्रत्र संदेश

दशहरा संदे श (१९४२)

श्री दुरु् ा देवी को प्रणाम, देवी माँ जो बुद् धि, करुणा और सौंदया के रूप में सभी प्राणणयों में

ववद्यमान हैं, जो भर्वान् ् की संध र्नी हैं, जो ववश्व का सृजृ न, पोषण और नाश करती हैं।

देवीदुर्ााभर्वान् ्कीईश्वरकेरूपमेंदेवीकेरूपमेंबड़ात्मयोहारहै।

वे भर्वान् ् का शजक्त रूप हैं। त्रबना दुरु् ाा के शशव की कोई अशभव्यजक्त नहीं है। त्रबना शशव के

दुरु् ाा का कोई अजस्तत्मव नहीं है। शशव दुरु् ाा की आत्ममा है। दुरु् ाा शशव के साथ अशभन्न है। वे भर्वान् ् शशव ही एकमात्र मौन साक्षी हैं। वे तनश्चल और त्रबलकुल अपररवतना ीय हैं। वे ब्रह्मांकी लीला से त्रबलकुल भी प्रभाववत नहीं होते हैं। दुरु् ाा ही सब-कुछ करती हैं।

माँकीपूजादेवीमाँश्रीमाताकेरूपमेंईश्वरकीपूजाहै।वेशजक्तयादैवीशजक्तहै।देवी माँ उसके देवी के रूप में उसके दस हाथों में अस्त्र शलए प्रस्तुत की जाती है। वे शेर पर सवार हैं। वे तीनोंर्ुणोंकेद्वारासत्मव,रजऔरतमकेद्वाराभर्वान् ्कीलीलाचलातीरहतीहैं।ववद्या,शांतत, वासना, क्रिो, लोभ, अहंकार, स्वाथ,ा सभी उनके ही रूप हैं।

देवी अथवा जर्न्माता की उपासना आत्ममज्ञान की ओर प्रेररत करती है। केनोपतनषद् की कहानी जजसे यक्ष प्रश्न कहते हैं, इस दृजष्टकोण का समथना करती है। उमा ने देवताओं को सत्मय का ज्ञान हदया। देवी शजक्त अपने भक्तों को ज्ञान प्रदान करती है।

एक बच्चा अपने वपता की अपेक्ष ा माँ से अधिक प्ेरेम करता है, क्योंकक वह बड़ी ही दयालु, प्रेम ल, कोमल, आकषका होती है तथा वह बच्चे की आवश्यकताओं का ध्यान रखती है। आध्याजत्ममक क्षेत्र में भी सािक अथवा भक्त—जो कक आध्याजत्ममक बालक है, उसकी माँ दुरु् ाा से वपता शशव की अपेक्षाअधिकअन्तरंर्ाहोतीहै।इसशलएसािककोमाँकेपासपहलेजानाचाहहए,कफरवेअपने आध्याजत्ममक बालक का पररचय ज्ञान अथवा आत्मम-साक्षात्मकार हेतु उसके वपता शशव से कराएेंर् ी।

मा ाँकी महहमा अपार है। उनकी करुणा असीम है। उनका ज्ञान अनंत है। उनकी शजक्त अपररशमत है। उनकी महहमा अवणनीय है। उनका वैभव अवणनीय है। वह आपको भजक्त और मुजक्त
प्रदान करेंर्ी।

उनके पास खुले हृदय से जाऐं। उनके समक्ष अपना हृदय उन्मुक्तता और ववनम्रता से खोल दें। एक बालक की भाताँत सरल रहें। अहंकार, िूतताा, स्वाथताा तथा कुहटलता को त्मयार् दें। पूण ा तनःशत ासमपणा करें। उनकी प्राथनाा करें। उनके नाम र्ाऐं। आस्था और भजक्त के साथ उनकी पूजा करें। नवरात्रत्र के हदनों में ववशेष पूजा करें। नवरात्रत्र अथवा दशहरा कठोर सािना हेतु सवश्रेष्ठ समय है। ये नौ हदन देवी की पूजा के शलए अत्मयुत्तम हैं। उनकी आरािना में लीन हो जाऐं। अनुष्ठान करें। देवी ने नौ हदन और नौ रात तक भिासुर और उनकी शजक्तयों से युद् ककया। यह युद् दसवें हदन समाप्त हुआ जजससे दशहरा अथवा ववजय का हदन कहा जाता है। ववजयादशमी के हदन बालकों को अक्षर अभ्यास कराया जाता है। सािकों को इस हदन दीक्षा दी जाती है। ककसी भी ववद्या को प्रारंभ करने के शलए यह सवश्रेष्ठ हदन है। यह वह हदन है जब अजुना ने कुरुक्षेत्र् में कौरवों से युद् करने के पूव ादेवी की पूजा की थी।

देवी दुर्ा ाअपने बच्चों को दैवी ज्ञान का दुग्ि प्रदान करें और उन्हें दैवी वैभव और यश की ववशाल ऊँचाइयों, कैवल्य तथा अनंत सूय ाके प्रकाश की अववनाशी अवस्था तक उठाए ाँ।

माताओं के शलए स्वामी शशवानन्द जी का एक संदेश

(१९४५)

वप्रय अमर आत्ममाओ,

आजकेहदनआपसभीमंहदरोंमेंदेवीमााँकेप्रततसमवपता
होकर दशहरा मनाने के शलए

एकत्रहुएहैं।यहउत्मसवभारतवषाकेववशभन्नभार्ोंमेंववशभन्नप्रकारमनाया जाता है। लेककन इस उत्मसवकोमनानेकामुख्यलक्ष्यहै,देवीकोआपकोसेसंपवत्त,सौभाग्य,समृद्धि, ववद्या तथा अन्य शसद्धियााँप्रदानकरनेकेशलएप्रसन्नकरना।आपमेंसेकोईभीजोभी ववशेष प्राथनाा देवी के समक्षकरताहै,आपजोभीवरदानदेवीसेमार्ाँतेहैं,उनसभीकेपीछेएक ही उद्देश्य है आरािना करनाऔरस्वयंकोउनसेजोड़ना,इसकेशसवाअन्यकोईभीउद्देश्यनहीं है। यह ही जाने अथवा अनजानेककयाजाताहै।प्रत्मयेकउनकेकरुणामयप्रेमेकावरदानप्राप्तकरता है और उसकी रक्षा होती है।

आपका यह अनूठ ा लक्ष्य इस ववशेष अवसर पर ही नहीं होता वरन यह आपके जीवन के प्रत्मयेक क्षण में होता है। आपके भीतर तनरंतर संघ षा चल रहा है। अन्तरात्ममा ववशभन्न इंहियों के जाल से ढंकी होने तथा उनसे दबी होने के कारण यह उनके फंदे से बचने के शलए संघ षा कर रही है। यह आपको इस आत्ममा की परमात्ममा से पहचान हेतु तनरंतर चेत ावनी दे रही है। यह आपको स्मरण कराती है कक आप जहााँ से चले थे, उस स्थान की वापसी यात्रा पर हैं। चाहे आपकी इच्छा हो या नहीं ं आपके पास इसके शसवा अन्य कोई स्थान है ही नहीं। आपको अपना रास्ता खोजना होर्ा। अन्य ककसी भी स्थान पर आप पलक झपकने से अधिक देर तक नहीं रुक सकते हैं। जजतनी अधिक आपकी र्तत तीव्र होर्ी, उतना ही अधिक आप अपने लक्ष्य पर शीघ्र पहुाँचेंर्े। इसशलए उधचत युज क्त खोजें और आर्े बढ़ें। एक क्षण भी व्यथा न र्ंव ाएाँ। अपने जीवन में बढ़ना और इसके ववशभन्न पहलू अन्यों से उसी प्रकार शभन्न हो सकते हैं, जजस प्रकार आप जो देवी से वरदान मार्ाँ ते हैं, वह अन्य जो वरदानमार्ाँतेहैंउससेशभन्नहोताहै।ककंतुदोनोंकादृजष्टकोणएकहैऔरववशभन्नजीवनोंका दृजष्टकोण शभन्न भी है। संसं ार में प्रत्मयेक मोक्ष की आकांक्ष ा रखता है।

एक र्ेंद को भूश म पर पटककए। यह पुन ः वापस आती है। यह उसी त्रबंदं ु पर पुन ः पहुाँचना चाहती है जहााँ से यह फेंकी र्यी थी। लेक कन एक र्ेंद की वापसी तथा दूसू री र्ेंद की वापसी में अन्तर होता है। एक मोटे खोल वाली और पूर ी तरह हवा से भरी हुई र्ेंद अत्मयंत शीघ्र वापस आ जाती है, जबकक एक जापानी र्ेंद वापस आने में अधिक समय लेत ी है। ऐसा क्यों? क्योंकक बाद वाली र्ेंद में पयाप्ा त र्तत नहीं होती। जैसे ही यह भूश म तक पहुाँचती है, यह अपना र्ोल आकार खो देती है। इसका आकार त्रबर्ड़ जाता है। इसके शलए बहुत अधिक बल की आवश्यकता होती है। यह सब कुछ खो बैठ ती है। यह िीरे-िीरे र्तत पकड़ती है।

हम सभी जापानी र्ेंद की भाताँ त हैं। हमको स्वयं को वैर ाग्य के आवरण से ढाकाँ ना चाहहए। भजक्तऔरसमपणा कीहवाभरनाचाहहए।कीतना औरप्राथनाादोवपस्टनवालेपप् हैं।ध्यानजाने के शलए आकाश है। ज्ञान वह स्थान है जो कक र्ेंद को इसके वास्तववक स्थान को वापस ले कर जाता है। यह नीचे की ओर खींच ने वाले र्ुरु त्मवाकषणा बल अज्ञान पर ववजय हदलाता है। तनष्काय कमा हमारे ऊपर और अहंकार और दुर्ुु णा ों के रूप में धचपके िूल के कणों का उन्मूल न करता है। ये सभी सािन हैं। ये सभी जीवन के स्वयं के अनुभ वों के द्वारा तनशमता होते हैं। लेक कन अधिक अच्छा है कक इन्हें अपने माता-वपता से प्राप्त ककया जाए। इससे आप अधिक समय बचा पाएाँर्े ।

माता-वपता अपने बच्चों के हहतैष ी होते हैं। उनको अपने बच्चों को बुर ी आदतों का अजना नहीं करने देना चाहहए। उन्हें अपने बच्चों को शसनेम ा के र्ाने अथवा अन्य तनरथका र्ीतों की लोररयााँ नहीं ं

सुनाना चाहहए। मात्र भर्वान् ्के ववशभन्न रूपों से संबंधित र्ीत ही सुनाना चाहहए। र्ाऐं, “हरर हरर बोल, बोल हरर बोल, मुकुंद मिाव केशव बोल।” यह ि्ुन बड़ी ही मिुर है। यह एक मिुर लोरी है। इसी के साथ ही यह बच्चे ेके मन पर र्हरा प्रभाव िालती है। आप बालक के मन के बारे में नहीं ं जानते हैं। आप इसकी भाषा समझने में सक्षम नहीं हैं। बालक तो दैवी र्ुणों से पूण ाहोता है, मात्र आपकी बुरी संर्त के कारण बालक त्रबर्ड़ता है। आप बच्चे की बहुत अधिक देखभाल करते हैं। आप बालक को सुख-सुवविाओं का प्रशशक्षण देते ेहैं। आप इन सभी चीजों को उसके बाद के जीवन में अतनवाय ाबना देते हैं।

"जैसा वपता होर्ा वैसा ही बालक होर्ा।" जो भी आदतें आपके जीवन में होर्ी वह उसमें भी आ जाऐंर्ी। यहद आप ताश खेलते होंर्े, तो आपका बेटा यहद आपके सामने नहीं ंताश खेलेर्ा तो भी आपसे चोरी से ेजरूर ही खेलेर्ा। यहद आप ि्ूम्रपान करते हैं तो आपका बेटा अवश्य ही ि्ूम्रपान करेर्ा। सवप्राथम स्वयं को सुिारें। जजस क्षण आपको ज्ञात हो कक आप एक बेटे के वपता बनने वाले हैं, सभी बुरी आदतों का उन्मूलन कर दीजजए। यहद खरपतवार हटा दी जाए तो बीज अवश्य ही उर्ेर्ा। बालक का जन्म आपके शलए ए. आर. पी. का सायरन है। यह आपको साविान करने के शलए एक खतरनाक संकेत है।

शमट्टी का पात्र तब तक उपयोर्ी रहता है जब तक कक बीज में से जड़ न तनकल आऐं। इसके पश्चात इसे पात्र में नहीं रखना चाहहए। यहद इसे तब भी पात्र में ही रखा रहने हदया जाएर्ा तो पौिे की वृद्धि में बािा आएर्ी और पात्र भी टूट जाएर्ा। इसीशलए इसे तुरंत ही एक उवरा भूशम में रोवपत ककया जाना चाहहए। बच्चे को भी तब तक घर में रखना चाहहए जब तक उसमें भले-बुरे की समझ न आ जाए। जजस हदन बच्चा पसंद-नापसंद की प्रवृवृत्त दशायो, उस हदन उसे एक शशक्षक के पास ले जाना चाहहए और उसे सौंप देना चाहहए। अब वह बच्चा नहीं है अब वह ककशोर है जो तनदेश ग्रहण करने के शलए तैयार है। कोई भी माता-वपता जो इस तथ्य से अज्ञान रहते हैं और उसे घर में ही रखते हैं, वे व्यावहाररक रूप से बलपूवका बालक के नैततक और चाररत्रत्रक ववकास को अवरुद् किर रहे हैं।

ऐसे शशक्षक जो बालक को एक आदश ापुरुष बनाना अपनी जजम्मेदारी समझते हैं, मात्र उन्हें ही उसके प्रशशक्षण की जजमे्दारी देनी चाहहए। अब इसके बाद शशक्षक की जजम्मेदारी आती है। शशक्षक को पाठ्य पुस्तकों पर व्याख्यान मात्र ही नहीं देना चाहहए वरन ववशेष अंश कंठस्थ भी कराना चाहहए और उसे स्वयं अपने जीवन में भी उतारना चाहहए तथा अच्छे उदाहरणों के द्वारा समझाना चाहहए। उन्हें साविानीपूवका एक-एक बच्चे की प्रर्तत की ओर ध्यान देना चाहहए और प्रत्मयेक बालक की नैततक और मानशसक प्रर्तत को देख कर उससे स्वयं संतुष्ट होना चाहहए। शशक्षक को ववज्ञान,

समाजशास्त्र, अंकर्णणत के समान पढ़ाए जाने वाले ववषयों से अधिक बालकों को नैततक तनदेश देना चाहहए। उनका चाररत्रत्रक तनमाणा इस प्रकार ककया जाना चाहहए कक वे ेकभी भी समाज में जा कर (जहा ाँकक उसे उनकी शशष्यता समाप्त होने पर जाना है) के ववरीी प्रभाव में िावााौल न हों। बालक के सद्व्यवहार के शलए माता-वपता और रुरु अकेले ही उत्तरदायी हैं। ज्ञान से पररपूण ाबालक एक पूण ा ववकशसत पुष्प की भाताँत होता है। यह पुष्प बृहत क्षेत्र में अपनी मिुर सुरंधि त्रबखेरता है। उसकी सुरंधि से आकृष्ट हो कर बालक के भीतर एकत्रत्रत ज्ञान के मिु ुको खींचने तथा आनंद लेने के शलए मिुमजक्खया ाँएकत्रत्रत होती हैं। वह ज्ञान प्राप्त करने के पश्चात पूण ायोरी् हो जाता है। वह रहस्यमय ज्ञान के खजाने को अन्यों के शलए ही नहीं वरन् ्स्वयं के शलए खोदता है। वह एक आदश ापुरुष होता है। वह एक आदश ायोरी् होता है। वह देवपुत्र कहलाने के योग्य है। वह माता-वपता के शलए नाम और यश ले कर आता है। एक कलेक्टर अथवा र्वनरा का स्मान तो उसके पद पर रहने तक अथवा अधिक से अधिक उसकी मृतूमयु तक रहता है, ककंतु यह ज्ञानी जो आत्ममज्ञानी है, उसका स्मरण ववकास के चक्र तक ही नहीं वरन् ्अनंत काल तक ककया जाता है।

हे माताओ! ऐसे बालक के शलए प्राथनाा करो। यहद आप ऐसे सौ बालकों को भी जन्म देंरी् जजनमें सद्रुण न हों तो न आप प्रसन्न रहेंरी् न बच्चे। रांिारी के सौ बेटे थे। कुंती ने तीन बालकों को जन्म हदया और कौशल्या ने एक को। आप ककसे पसंद करेंरी्। रांिारी अथवा कौशल्या को ?

देवी से आप अपने वंश को बनाए रखने के शलए ऐसे ही एक पुत्र के शलए प्राथनाा करे। वे सव ा शजक्तमान हैं। वे सब-कुछ कर सकते हैं। आप उनकी ककसी भी रूप में आरािना कर सकते हैं। इस ववश्व की रचना मात्र उनके ही कारण है। हम सब उसके हाथों के णखलौने हैं। शजक्त के तीन रूपों कक्रया, इच्छा और ज्ञान के कारण यह जर्त शाशसत है। शजक्त की आरािना आपको मात्र समृद्धि ही नहीं देती वरन समस्त बंिनों से मुजक्त प्रदान करती है। देवी ने कहा है : "म ैंब्रह्म की प्रकृतत हूाँ, म ैं प्रकृतत पुरुष की प्रकृतत हूाँ। म ैंज्ञान और अज्ञान हूाँ। म ैंआत्ममा की शजक्त हूाँ। म ैंअनाहद सत्मय हूाँ। म ैं ब्रह्म की अद्वैत शजक्त हूाँ।"

आप सभी पूण ाआस्था और भजक्त के साथ यह दशहरा मनाएं। आप सभी के ऊपर देवी की कृपा वृजष्ट हो !

नवरात्रत्र दुरा् ापूजा का महत्मव (१९४६)

समय-समय पर िाशमका त्मयोहार, पूजा और व्रत के अनेक महत्मव हैं। देवी की आरािनाके अततररक्त ये प्राचीन घटनाओं का स्मरण कराते हैं। जब इनकी रूढ़ ढंर् से व्याख्या की जातीहैतोवे

अतीत की रहस्यमय घटनाओं का स्मरण कराते है और अन्त में ये जीव का उसके भर्वद्-साक्षात्मकार के मार् ापर प्रत्मयक्ष मार्दाशना करते हैं।

बाह्य रूप से देवी अथवा मा ाँकी यह नौ हदनी पूजा ववजय उत्मसव है। शुभ तनशुंभ के द्वारा भेजे र्ये असुरों पर देवी की संघषपूाण ाववजय की प्रसन्नता में इन नौ और हदनों में देवी को पताका अवपता की जाती है। लेककन सिाक के शलए देवी के ववशभन्न रूपों में की आरािना नवरात्रत्र के नौ हदनों को तीन हदनों के समूह में ववभक्त करके करना अत्मयंत मंर्लकारी होता है। यह व्यावहाररक सत्मय को प्रर्ट करता है। इसके दैवी रूप में यह मनुष्य से ईश्वर में जीवात्ममा से शशव में ववकास की जस्थततयों को सूक्ष्म करता है। इसके वैयजक्तक महत्मव में यह बताता है कक आध्याजत्ममक सािना करना चाहहए।

अब अजस्तत्मव का मुख्य उद्देश्य है, परमात्ममा के साथ आपकी सनातन अशभन्नता को पहचानना। यह देवी की प्रततमा में ववकशसत होता है। परमात्ममा इस रूप में साकार रूप में प्रर्ट होते े हैं। यह तनदोष पववत्रता है, तनरंजना है। उसके साथ आपकी अशभन्नता का साक्षात्मकार करने के शलए तथा उनके साथ स्पका करने के शलए देवी के रूप का ववकास ककया र्या है। इसशलए सािना के प्रारंभ में सिाक को अपने भीतर की समस्त अशुद्धियों, आसुरी वृवृत्तयों से मुजक्त पानी होर्ी। उसके बाद उसे सद्र्ुणों, दैवी र्ुणों का अजना करना होर्ा। और इसके उपरांत शुद् होने तथा सत्मव से पररपूण ाहोने पर जैसे शांत झील के स्वच्छ जल के ऊपर सूय ाकी ककरणें धर्ती हैं, उसी प्रकार सिाक के ऊपर ज्ञान की ककरणें धर्र कर उसे चकाचौंि कर देंर्ी।

सािना के शलए दृढ़ संकल्प, तनजश्चत प्रयास तथा कठोर संघषा की आवश्यकता है। अन्य शब्दों में शजक्त तथा अनंत शजक्त सवप्राथम अतनवाय ाहै। देवी माँ-प्रभु की परम शजक्त हैं जो सिाक के द्वारा काय ाकरती हैं। अब देणखए कक प्रथम तीन हदनों तक देवी मा ाँकी आरािना भयंकर दुर्ा ा शजक्त के रूप में की जाती है। इस समय आपको माँ दुर्ाा से अपनी समस्त अशुद्धिया,ाँ दोषों और दुर्ुाणों का उन्मूलन करने की प्राथनाा करनी चाहहए। उसे सिाक के मूलभूत आसुरी र्ुणों, उसकी तन्न आसुरी प्रकृतत से संघष ाकरना पड़ता है और उसका उन्मूलन करना पड़ता है। साथ ही देवी वह शजक्त हैं जो आपकी सािना की अनेक खतरों और र्तों से रक्षा करती हैं। इसी कारण प्रथम तीन हदन मल के नाश की प्रथम अवस्था तथा आपके मन की बुरी वासनाओं को जड़ सहहत उखाड़ फेंकने के आपके तनजश्चत प्रयत्मन हेतु देवी के ववनाशकारी रूप की आरािना हेतु अलर् रखे र्ये हैं।

यहद आपने एक बार अशुद् प्रवृवृत्तयों और पुरानी दुष्ुट आदतों के उन्मूलन का काय ाकर शलया, तो अर्ला चरण है पववत्र आध्याजत्ममक चररत्र का ववकास और बाहर की र्यी आसुरी प्रवृवृत्तयों

के स्थान पर सद्गुण ों का अजना करना। भर्वान् ् कृष्ण ने र्ीता में जजन दैवी रुण ों (दैवी स्पद) का वणना ककयाहै,सािककोउनसभीसद्गुणोंकाअजना औरजीवनमेंउनकाअभ्यासकरनाचाहहए। सािककोहदव्यज्ञानकेदुलुभा रत्मनोंकामूल्यचुकानेकेशलए,प्रचुरआध्याजत्ममकसंपवत्तकाअजना करना चाहहए। यहद इन सद्गुण ों का प्रयत्मनपूव का नहीं ककया र्या तो पुर ानी आसुर ी ववृत्तयााँ बार-बार शसरउठाऐंर्ी।इसशलएआध्याजत्ममकसािककेशलएयहदूसरीअवस्थाभीप्रथमअवस्थाजजतनीही महत्मवपूण ा है। दोनों में अतनवाया अन्तर यह है कक पहली वाली अवस्था अशुद् ि अहंकारी क्षुि आत्ममा कादृढ़तापूवका उन्मूलनहैऔरद्ववतीयअवस्थाशुद्तिाकेववकासहेतुक्रमबद्,जस्थर,शांततपूवका सच्चा प्रयास है।. सािक की सािना का आनंद कारी पक्ष लक्ष्मी पूज ा के द्वारा होता है। वे अपने भक्तों को दैवी संप दा का अक्षय भंि ार प्रदान करती हैं। लक्ष्मी ब्रह्म का संप वत्त प्रदातयनी रूप है। वह स्वयंहीशुद्तिाहै।इसप्रकारदेवीलक्ष्मीकीआरािनातीनहदनोंकेदूसरेसमूहमेंकीजातीहै।

यहद एक बार सािक दुष्ु ट प्रवृवृ त्तयों को जड़ से उखाड़ फें कने तथा साजत्त्वक रुण ों के ववकास के अपने प्रयत्मन में सफल हो जाता है, तो वह परम ज्ञान के प्रकाश को ग्रहण करने का अधिकारी बन जाता है, वह परम ज्ञान के प्रकाश को ग्रहण करने के योग्य हो जाता है। वह हदव्य ज्ञान प्राजप्त के योग्य हो जाता है। इस अवस्था में देवी सरस्वती जो कक दैवी ज्ञान, ब्रह्म ज्ञान का साकार स्वरूप है की भजक्तपूव का आरािना का समय आता है। उनकी वीणा श्ेरेष् ठ महावाक्यों तथा प्रणव के स्वरों को हृदय में जर्ाती है। वह परम नाद का ज्ञान देती है और उसके पश्चात पूण ा आत्ममज्ञान प्रदान करती है जो उनके श्वेत िवल वस्त्रों से अशभव्यक्त होता है। ज्ञान देने वाली श्री सरस्वती की आरािना तृत ीय अवस्था है।

दसवााँ हदन - ववजयादशमी सरस्वती माता की कृपा से प्राप्त ज्ञान के द्वारा जीवात्ममा के इस संस ार में रहते हुए जीवन्मुज क्त प्राप्त हो जाने की ववजय पताका फहराने का संके त करता है। जीव अपने आत्मम स्वरूप सजच्चदानंद स्वरूप में ववश्राम करता है। यह हदन लक्ष्य प्राजप्त की ववजय का उत्मसव है। यह ववजय पताका ऊाँ ची फहरा रही है, मैं वह हूाँ, मैं वह हूाँ।

धचदानंद रूपैः शिवोऽहं शिवोऽहं;

धचदानंद रूपैः शिवोऽहं शिवोऽहम् ्।।

इसका सािक के आध्याजत्ममक ववकास में भी अपना महत्मव है। यह ववकास की उन जस्थततयों कीओरसंकेत करता है, जजनसे प्रत्मयेक को हो कर जाना पड़ता है। यहद कोई सािक छोटे रास्ते से े जाताहै,तो छोटे रास्ते से जाने पर पररणाम र्ंभीर असफलता होता है। आजकल कुछ अज्ञानी सािक त्रबनाआरंशभक शुद्धि और सद्गुणों को अजजता ककए त्रबना सीिे ही ज्ञान प्राप्त करना चाहते हैं और

ऐसा कहते हैं कक वे अपने मार् ा में प्रर्तत नहीं कर पा रहे हैं। लेककन उनकी प्रर्तत कैसे होर्ी? जब तक अशुद्धिया ाँ बाहर नहीं तनकाल दी जाएर्ी, जब तक शुद्तिा का ववकास नहीं होर्ा, तब तक ज्ञान प्राप्त नहीं हो सकता। पववत्र पिौा अपववत्र भूशम में कैसे उर् सकेर्ा ?

इस क्रम का पालन कीजजए, आपके प्रयत्मनों को अवश्य ही सफलता शमलेर्ी। यह आपका पथ है। "नान्यः पन्था ववद्यतेऽयनाय" अन्य कोई पथ मुजक्त के शलए ज्ञात नहीं है। एक दुर्ुणा को नष्ट कीजजए और एक ववपरीत सद्गुण का ववकास कीजजए। इस ववधि के द्वारा आप स्वयं को उस पूणताा तक पहुाँचा देंर्े, जहा ाँ आप स्वयं को ब्रह्म से पहचानने योग्य होंर्े, जो आपका लक्ष्य है। तब संपूण ा ज्ञान आपका होर्ा। आप सवज्ञा, सवशाजक्तमान बन जाएंर्े। आप सभी में स्वयं के ही दशना करेंर्े। े

आप एक जीवन्मुक्त बन जाएंर्े। आप जन्म और मृत्मयु के चक्र के ऊपर संसार रूपी दैत्मय के ऊपर ववजय प्राप्त कर लेंर्े। अब कोई कष्ट नहीं, अब कोई ददा नहीं, अब कोई जन्म नहीं, अब कोई मृत्मयु नहीं, ववजय और मात्र ववजय होर्ी आपकी।

देवी मा ाँ को प्रणाम! वे आपको चरण दर चरण आध्याजत्ममक सीढ़ी के ऊपर लेके जाएं और आपको ईश्वर से एक कर दें।

देवी पूजा का सच्चा महत्मव (१९४७)

भारत आज स्वतन्त्रता के लंबे समय से आकांक्षक्षत लक्ष्य की प्राजप्त के पश्चात नौ हदनी दुर्ा ा उत्मसव मना रहा है। सभी के शलए इस पूजा का सच्चा भाव तथा महत्मव जानना महत्मवपूण ा है, जजससे कक सभी इसका अधिकतम आध्याजत्ममक और भौततक लाभ प्राप्त कर सकें।

देवी की पूजा की ववधि का अथ ा यहद आप सही ढंर् से समझ लें तो यह आपको हदव्य जीवन जीने का सही मार् ा बताती है। यह आपको उस प्रकार जीवन जीना शसखाती है जजससे ेकक आपका जीवन देवी की सच्ची और व्यावहाररक पूजा और आरािना बने। यह अंिकार, असत्मय, नश्वरता से जार्ें और प्रकाश, सत्मय और अमरता के राज्य में प्रवेश करने के रहस्य खोलती है।

देवी पूजा के तीन रूप हैं—अच्छाई, समृद्धि और ज्ञान। अच्छाई सत्मय को प्रर्ट करती है, समृद्धि आनंद की पररचायक होती है और ज्ञान अन्तरज्ञान की ओर प्रेरेरत करता है तथा आपको सजच्चदानंद के लक्ष्य की ओर ले के जाता है। उपरोक्त तीनों बताए र्ए तथ्यों का मनुष्य जीवन में ले कर आना ही उस देवी मा ाँ की सच्ची आरािना और िारण है, जो मानव जीवन के प्रत्मयेक रूप में प्रर्ट हैं।

परंपरार्तपूजातनस्संदेहअच्छीहै,ककंतुयहपूजाजीवंतपूजाहै,जोवास्तवमेंआपको अत्मयंतशीघ्ररूपांतररतकरतीहैऔरआध्याजत्ममककरतीहैऔरआपकोउच्चसाक्षात्मकारहेतुपे्रेररत करतीहै। देवीमााँकोआपकेपववत्रहृदयवेदीपरमेंस्थावपतकरनेकेशलए,उनकीदैवीशजक्तको भीतरप्रर्टकरनेकेशलएतथासभीकीसेवाऔरसभीकेकल्याणकेशलएजीनादेवीमााँदुर्ााकी आरािना और पूज ा का सवशे्रा ष्ठ तरीका है।

देवीलक्ष्मीकोप्रसन्नकरनेकेशलएआपकोसभीकेजीवनमेंसमृद्धिलानेकातनरंतर प्रयत्मनकरनाहोर्ा।इसकेशलएआवश्यकहैककआपबड़ेहदलवाले,उदार,दानीऔरदयालुबनें। सिाककोअपनीक्षमताकेअनुसारसभीकेदुुःखदूरकरनेतथाउनकेजीवनमेंआनंदलानेका कठोर प्रयत्मन करना चाहहए।

रोधर्योंकेशलएजनमानसको,वजृ्द्धोंकेशलएसरायाँऔरअनाथोंकेशलये भोजनालयखोलनेतथाअशशक्षक्षतोंकोपढ़ानेतथादेशकीसंपवत्तमेंवृद्धिकेशलएप्रत्मयेकसिानको प्रोत्मसाहनदेनेकेशलएकहताहूाँ।जहााँसमृद्धिऔरआनंदचारोंओरहों,मात्रवहीींदेवीलक्ष्मीअधिक सरलता से प्रसन्न हो सकती हैं।

अबदेवीसरस्वतीकोप्रसन्नकरनेकेशलएपहलेआपकोस्वयंकोप्रशशक्षक्षतकरनाहोर्ा। आपकोएकप्रकाशकापुंजबननाहोर्ाऔरआपकोहदव्यज्ञानकोप्रत्मयेकककोववकररतकरनाहोर्ा। ऐसेसच्चेसािकवपछड़ेहुुएतथाअशशक्षक्षतलोर्ोंकीबस्तीमेंजासकतेहैंऔरउन्हेंतनःशुल्क लौककककतथाआध्याजत्ममकशशक्षाप्रदानकरसकतेहैं।इसप्रकारआपदेवीसरस्वतीकीआरािनाको बृहृ त और सच्चा स्वरूप प्रदान करेंर्े।

नवरात्रत्रकासंदेशपववत्रता,समृद्धिएवंज्ञानहेतुआवाहनहै।जहााँज्ञानऔरसद्गुण संयुक्तरूपसेउपजस्थतहों,वहााँहमेंहदव्यजीवनशमलताहै।इसशलएआपकोआध्याजत्ममकताके ववकास के साथ शुद् िता, सद्गुण तथा व्यावहाररक ज्ञान के नए युर् का सूत्र पात करना चाहहए।

ऐसीजीवंतपूजाकोप्रणामऔरऐसेदैवीपूजकोंकोप्रणाम।देवीमााँकाआशीवादा सभीको शांत त, समृद् धि और प्रचुर ता प्रदान करे।

दुरु ्पूजा (१९४८)

देवी माँ की जय हो, जजसकी प्रणाम है। 1 कृपा से सब कुछ अजस्तत्मवमान है! मेर ा उनको जैस ा ककसी एक के साथ होता है वैस ा ही संपू ण ा ब्रह्मांा में सभी के साथ होता है। देवी के त्रबना कुछ भी संभ व नहीं है। मनुष् य की आध्याजत्ममक और भौततक प्रर्तत अशभन्न रूप से माँ के साथ बंि ी हुई है। मानव का मानवीय अंश लर्भर् संपू ण ता या उसकी माँ के द्वारा ढाला जाता है। उसका तथाबौद्धिकयोग्यताएवंउसकेपूरेव्यजक्तत्मवकोआकारउसकी चररत्रतनमाणा,मानशस्क्तेमता माँ के द्वारा हदया जाता है; यही कारण है कक श्रुतुतयों में उसे अपनी माँ को भर्वान् ् की भातााँत व्यवहृत करने के शलए कहा है। यही आध्याजत्ममक क्षेत्र में भी है। त्रबना देवी माँ की सहायता के मनुष् य के शलए ककंधचत भी आध्याजत्ममक प्रर्तत संभ व नहीं है। जब सवशा जक्तमान यक्ष के अचानक अदृश्य हो जाने पर इंि भ्रशमत हो ए थे और उन्हें छोटे देवताओं अजग्न और वायु के समक्ष लजज्जत होना पड़ रहा था तो उमा ने ही उनको मुक् त कराया था तथा उन्हें ज्ञान अथाता उन्हें यक्ष की सच्ची पहचान — ब्रह्म का ज्ञान प्रदान ककया था (केनोपतनषद्) ।

देवी उनके द्वारा ककए जाने वाले अनेक कायों के अनुस ार अनेक रूप ग्रहण करती हैं। कभी-कभी मिुर और कोमल और कभी-कभी भयंक र और िरावनी । लेकेकन वह सदा अपने भक्तों पर दयालु और कृपालु होती है। देवी माहात्म्य (दुरु ाा सप्तशती) पहढ़ए। देवी माया शजक्त है, जो मनुष् य को तनरंतर घूम रहे इस संस ार के चक्र से बाँि रखती है। वे जो ज्ञानी हैं, उन्हें भी मोहहत कर देती हैं। हालाकाँ क वे ही अपने उन भक्तों को जो उनको प्रसन्न करते हैं, मोक्ष प्रदान करती है। यहद आप राजा सुर थ तथा वैश् य समाधि की भातााँ त उनसे सच्ची प्राथना ा करेंर्े तो वे आपके समक्ष प्रर्ट हो कर आपको मोक्ष सहहत सभी वरदान देंर्ी। इसमें कोई संदें ह नहीं है।

नवरात्रत्र के समय संपू ण ा भारतवषा देवी की पूज ा करता है और उनकी अत्मयंत भजक्तपूव का आरािना करता है। प्रथम तीन रात्रत्रयों में दुरु ाा अथवा देवी के ववनाशकारी रूप की पूज ा होती है। अर्ले तीन हदनों तक देवी के सृजृ क रूप अथवा लक्ष्मी की पूज ा होती है और अंत तम तीन रात्रत्रयों में उनके ज्ञान रूप अथवा सरस्वती की आरािना की जाती है। दसवााँ हदन ववजयादशमी अथवा ववजय का हदन है। इस व्यवस्था का ववशेष महत्मव है। जब देवी की भक्त द्वारा प्रथम बार आरािना की जाती है। तो वह मन में छुपी दुष्ु ट प्रवृवृ त्तयों का नाश करती है। उसके बाद वह उसके भीतर दैवी संप दा (जो आध्याजत्ममक अनावरण हेतु संव ाहक है) अथाता दैवी रुण ों की वहााँ स्थापना करती है। उसके पश्चात

वह उन्हें सच्चा ज्ञान प्रदान करती है और अन्त में सिाक मुजक्त अथवा संसार पर ववजय प्राप्त करता है।

नवरात्रत्र प्रबल सिाना हेतु वष ाामें सवाधिाक अनुकूल अवसर है। ये नौ हदन अत्मयंत श्रेेष्ठ हैं। जब संपूण ाजर्त में करोड़ों लोर् मा ाँके नाम का जप और उनकी महहमा का ग्रान कर रहे हों ! उस समय उस भूशम पर जहा ाँदेवी के नामों का उच्चारण हो रहा है, तीव्र वेर् से चल रही उन अद्भुत आध्याजत्ममक स्पन्दनों की तरंर्ों की कल्पना कीजजए! ऐसे स्थान पर सभी देवता अपने सूक्ष्म रूप में सदा उपजस्थत रहते ेहैं। वे ेसभी आपको आशीवादा देते हैं और आपकी सहायता करते हैं। यहद आप इन नौ हदनों में प्रबल सिाना करते हैं तो आपको अज्ञात स्रोतों से, ऋवषयों और शसद्िों से अमूल्य सहायता प्राप्त होती है।

उनसे व्याकुलता से प्राथनाा कीजजए। वे सरलता से प्रसन्न हो जाएेंर्ी। उनसे देवी माहात्म्य के राजा की भाताँत तुच्छ सांसाररक वस्तुओं के शलए प्राथनाा न करें, वैश्य की भाताँत मोक्ष के शलए प्राथनाा करें। वे आपके पास दौड़ते हुए आने के शलए सदा तैयार हैं। आपको उन्हें मात्र स्वीकार करना है। अपने मन की समस्त रं्दर्ी को साफ करें और वहा ाँमा ाँको एक स्वणा शसंहासन पर प्रततजष्ठत करें। अपने तुच्छ अहं को उनके चरणों में त्मयार् दें। प्राथनाा करें, “हे मा ाँआप ही करेंर्ी, मुझे कुछ नहीं चाहहए!" वे आपको हाथ पकड़ कर, मोक्ष हेतु ले कर जाएेंर्ी !

देवी पूजा (१९४९)

सवमांगलमांगल्येशिवेसवार्ासााधिके ।
रिण्येत्र्यंबकेगौररनारायणणनमोऽस्तु ते ।।

हेत्रत्रनेत्रवालीनारायणीदेवी,आश्रयदात्री,मंर्लकारी,समस्तकामनाओं को देने वाली, समस्त मंर् ल में जो मंर् लकारी है उस देवी को प्रणाम है।

देवी!शजक्तअथवाउसदैवीशजक्तकासमानाथीहैजोववश्वको प्रर्ट करती है, पोषण करती है अथवा उसे अजस्तत्मव को जोड़ने वाले बल के रूप में रूपांत ररत

करतीहै।वास्तवमेंदेवीकीपूजासांप्रदातयकनहींहै।यहककसीपंथ के साथ जुड़ी हुई नहीं है जैसीककसामान्यरूपसेर्लतिारणाहै।देवीवहनहींहैजजसेववष्णु ुअथवा शशव का ववरिोी

मान शलया र्या है जैस ा कक सामान्यतया लोर् समझते हैं। देवी अथवा शजक्त से हमारा अथा है कक अजस्तत्मवमान सभी शजक्तयााँ तथा वे शजक्तयााँ जो भर्वान् ् के महहमामय रूप हैं—आप उन्हें ववष्णु ु अथवाशशवजैसाभीआपपसंदकरें,पुकारसकतेहैं।अन्यशब्दोंमेंशजक्तइसववश्वकोबनाने वाले अनेक देवताओं के रूप में परमात्ममा की संभ ाव्यता है। भर्वान् ् ने इस संस ार की रचना उसकी सृजृ ष्ट शजक्त के द्वारा की है और इसका संर क्षण जस्थतत शजक्त से ककया है तथा इसका नाश वे संह ार शजक्त से करते हैं। शजक्त और शाक्त एक ही हैं। शजक्त और शजक्त को िारण करने वाला दोनों अलर् नहीं ककए जा सकते। भर्वान् ् और शजक्त, अजग्न और अजग्न की उष्णता के समान हैं।

इसी कारण देवी पूज ा अथवा शजक्त की पूज ा भर्वान् ् की महहमा अथवा भर्वान् ् की महानता की पूज ा है। यह परमात्ममा की पूज ा है। यह दुभु ाग्य य है कक देवी को मात्र रक्त की प्यासी हहंदू ू देवी समझ शलया र्या है। नहीं, नहीं, देवी मात्र हहंदु ओं की संप वत्त नहीं है। देवी ककसी एक हहंदू ू िमा से संब द् निहीं है। देवी शलंर् भेद के कारण देव से शभन्न नहीं की जा सकती। देवी देव की चेत ना है। इसेनहींभूलनाचाहहए।देवीशजक्तआहदशब्दऔरिारणाऐंजोइनरूपोंसेसंबद्हैं,वेमानव ज्ञान की सीशमतता के कारण हदये र्ए हैं। वे देवी की अंत तम पररभाषा नहीं हैं। वास्तववक शजक्त तो मानव की समझ से परे है। भर्वान् ् कृष्ण र्ीता में कहते हैं, "यह मात्र मेर ी तन्न प्रकृतत (शजक्त) है— मेर ी उच्च प्रकृतत (वास्तववक शजक्त), तो इस ववश्व को बनाए रखने वाले वह जीवन तत्त्व के भी परे है।" उपतनषद कहती है, "पराशजक्त- भर्वान् ् की परम शजक्त अनेक प्रकार से सुन ी र्यी है, यह भर्वान् ् की प्रकृतत शजक्त, ज्ञान शजक्त तथा कक्रया के रूप में प्रर्ट होती है।" सच ही कहता ववश्व के सभी प्राणी शजक्त के उपासक हैं, कोई भी ऐसा नहीं है जो ककसी न ककसी रूप में शजक्त के प्रतत प्रेमे तथा लालसा न रखता हो, तथा वैज्ञ ातनकों ने भी अब शसद् किर हदया है कक प्रत्मयेक वस्तु शुद् ि अववनाशी ऊजाा है। यह ऊजाा उस दैवी शजक्त का एक रूप है जो अजस्तत्मव के प्रत्मयेक रूप में अजस्तत्मवमान है।

शजक्त की आरािना इसकी अतनवाया प्रकृतत में नहीं की जाती है। इसकी आरािना इसके प्रर्ट ककसी भी रूप जैसे सृजृ न, संर क्षण तथा संह ार के रूप में की जाती है। इन तीनों कायों से शजक्त सरस्वती, लक्ष्मी, काली के रूप में सब्द् है। ये जैसै ा प्रतीत होता है कक ये अलर्-अलर् हैं, ककंतु वास्तव में ये अलर्-अलर् नहीं हैं, बजल्क ये एक ही तनराकार देवी के अलर्-अल तीन रूप हैं। उनसे े जुड़े तीनों देव हैं ब्रह्मा, ववष्णु और महेश। जो कक इसी प्रकार तीन अलर्-अलर् देव नहीं हैं, बजल्क एक ही परमात्ममा जो तनराकार है, के ववशभन्न रूप हैं। नवरात्रत्र महाकाली, महालक्ष्मी तथा महासरस्वती ववश्व की देवी की आरािना की नौ रात्रत्रयों का उत्मसव है।

सरस्वतीहदव्यबुद्धि,हदव्यचेतना,हदव्यज्ञानहै।देवीसरस्वतीकीउपासनाबुद्धिशुद्धि
अथवा वववेकउदय,ववचारशजक्त,ज्ञानअथवाआत्ममसाक्षात्मकारहेतुअतनवायाहै।लक्ष्मीकाअथामात्र
भौततक संपवत्तजैसे ेस्वण,ापशुआहदनहींहै।सभीप्रकारकीसमृदृ्धियश,वैभव,आनंद,श्रेष्ठता
अथवा महानतालक्ष्मीकेअन्तर्ता आतीहैं।अप्पय्यदीक्षक्षततोयहााँतकककअंततममोक्षकोभी
"मोक्ष साम्राज्यलक्ष्मीकहतेहै।"इसीकारणलक्ष्मीकीआरिनाकाअथाहै—अजस्तत्मवकी,स्वयंके
मुख्य उद्देश्यकीआरिना।महालक्ष्मीहदव्यताकीपररवतना करनेकीशजक्तहैं।वहशजक्तजो
अनेकता कोएकतामेंववलीनकरदेतीहै।इसशलएदेवीकीआरिनाइसके सभीरूपोंमें
आध्याजत्ममक सािना की संपू ण ा कक्रयाववधि की व्याख्या है।

नवरात्रत्र के समय में कठोर अनुष् ठान करें और अपनी आंत ररक प्रकृतत को शुद् ि करें। यह देवी की आरिनाहेतुवषामेंसबसेअधिकश्रेष्ठसमयहै।दुर्ाासप्तशतीअथवादेवीमाहात्म्य,लशलता सहस्रनाम पढ़ें। देवी के मन्त्र का जप करें। शुद् िता, लर्नशीलता तथा भजक्त के साथ परंपरार्त पूज ा करें।

देवी के दशना के शलए रुदन करें। देवी आपको वह ज्ञान, शांतत तथा आनंद प्रदान करेंर्ी जजसका कोई अन्त न होर्ा।

देवी मााँ आप सब को आशीवादा प्रदान करें।

ॐ शाजन्तः शाजन्तः, शाजन्तः !

देवी पूजा का महत्मव (१९५०)

अमर आत्ममा !

आप सभी को शांतत प्राप्त हो! ववश्व माता को प्रणाम! नवरात्रत्र उत्मसव तथा देवी पूजा ने संपूण ावातावरण को शुद्किर हदया है। अब म ैंआपको देवी की पूजा के महत्मव को बताता हूाँ। देवी ववश्व के सृजृन, संरक्षण तथा संहार के रूप में वह धचरूवपणी शजक्त है, जो कक भर्वान् ्जो कक सजच्चदानंद हैं की अनंत शजक्त है। देवी पूजा अथवा दुर्ा ापूजा उस देवी मा ाँकी आरिना है, जो कक ववश्व के बीज को अपने अववनाशी र्भ ामहद् ब्रह्म में िारण करती है, देवी चैतन्य शजक्त है, ववश्व के परम सवसात्तिाारी की महानता ने सृजृष्ट के जर्त में जीवों को प्रर्ट ककया। चूाँकक ववश्व के सृजृक, संरक्षक और संहार कता ाएक ही भर्वान् ्हैं जो कक तीन रूपों में प्रर्ट हुए हैं। इसशलए वह शजक्त जो कक भर्वान् ्से अशभन्न है, वही त्रत्ररूप में उसी प्रकार प्रर्ट हुई है, जजस प्रकार एक ही व्यजक्त उसके चररत्र और शजक्तयों के कारण जाना जाता है। भर्वान् ्ने देवी के रूप में अपनी शजक्त को प्रर्ट ककया है, यह समस्त ज्ञान, संकल्प तथा कक्रया के रूप में हदखायी देती तथा अनुभव की जाती है और साथ ही साथ यह अदृश्य और समझ से परे है। संपूण ाववश्व इसके अववनाशी सृजृक की समृद्धि तथा महहमा का प्रार्ट्य है, जो कक पृथ्वी तथा स्वर् ाके परे है। वह हदव्य स्वामी सवत्रा इसकी दो शजक्तयों ववद्या और अववद्या के द्वारा काय ाकरता है।

आंतररक युद्

नौहदनोंमेंपरमदेवीकीलीलातथातन्नप्रकृततकीशजक्तयोंपरउच्चशजक्तयोंकी ववजयकावणना ककयार्याहै।यहमहानयुद्-ववश्वकेववषयाधश्रततथावैयजक्तकदोनोंप्रकार के जीवनकोइंधर्तकरताहै।ववद्याशजक्तसदैवसवोपररहैऔरसवत्रा जहााँभीजीवात्ममातथा आसुरीशजक्तयोंकीअपूणतााासीमाओंकाअततक्रमणहोताहै,तोदैवीज्ञानशजक्तअज्ञानताको इसकीअनुर्ामीसेना—कारण,कामनातथास्वाथापूणाकायोंसहहतनाशकरनेकेकायामेंजीवात्ममा केभीतरप्रत्मयेककोनेसेप्रवेशकरतीहै।देवीमाहात्म्यअथवासप्तशतीमेंदेवीकावणना देवताओं कीऊजााकेपुंज,मुख्यरूपसेब्रह्मा,ववष्णुऔरशशवकीशजक्तकेपुंजकेरूपमेंवणना ककया र्याहै।यहशजक्ततबप्रर्टहुई,जबककववषयशजक्तयााँबुद्धिके ऊपरववराजमानहोईं,जब बुद्धिकावासना,क्रोि,लोभ,द्वेषआहदआसुरीशजक्तयों(जोककववनाशकप्रवृवृत्तकीथीं)केद्वारा दमनककयाजानेलर्ा,औरवेवास्तवमेंजीवनकेदुःखोंकेरूपमेंअपनीदीनताकाअनुभवकरने लर्ीं।प्रतीकात्ममकरूपसेयेदेवोंकेद्वाराउनकेराजाइंद्(मन)केसाथएकत्रऔरयेसबएकहो करउच्चप्रकृततके पाससहायताके शलएईं।तत्मकालभीतरजस्थतदैवीतत्त्वनेस्वयंकोअपनी

अद्भुत शजक्त की क्षमता के साथ प्रर्ट ककया और इस सत्मय के एकीकरण ने, पाशववकता के वासना से पररपूण ाजीवन तथा जो सब आसुरी था अथवा जो अववद्या से संबद् था, का अन्त कर हदया। ववजयादशमी अज्ञानता की ऋणात्ममक प्रकृतत पर ववजय के उत्मसव का हदन है।

देवी देव से अशभन्नहै

सत्मयमेंपूणताàकीखोजकरनेवालो!यहााँतकककचाहेआपइसकीओर जाने वाले तथा इससेस्बद्मिार्ासेलक्ष्यतकभीपहुाँचर्येहैं,तोभीभर्वद्साक्षात्मकारआनुभववक यथाथताा के कुछस्तरोंकेद्वाराहीहोसकताहै,येआध्याजत्ममकअनुभवोंमेंसीढ़ीकाकायाकरते हैं। सत्मय तथा चेतनाकेववशभन्नस्तरोंसहहतउनकाजर्त,भर्वान् ्कीशजक्तहै।ईशावास्योपतनषद् में आप पढ़ेंर्े ककअसंभूततऔरसंभूततकीआरािनाअंततमपूणताàकीप्राजप्तहेतुप्रेररतकरती है। भर्वान् ्को उसकीइसववश्वपरशासनकरनेवालीशजक्तसेउसीप्रकारपृथकनहींककयाजा सकता है, जजस प्रकारआपअजग्नऔरऊष्माकोपृथकनहींकरसकतेहैं।आपककसीभीपदाथ ाको उसके र्ुण कारणजानतेहैं।आपभर्वान् ्कासाक्षात्मकारउनकीशजक्त,जोककदेवी,महामाया, प्रकृतत तथा सबकी जननी है, के द्वारा ही कर सकते हैं।

पूजा की ववधि

आपदेवीकीपूजावैहदकअथवातांत्रत्रकववधिसेकरसकतेहैं।उनकीपूजातोत्रबनाककसी ाशिमका कमकाांडके परापूजाअथवामात्रशुद्ध्यानजातीहै।वास्तवमेंयहीपूजाकासवोच्च प्रकारहै,जहााँदेवीमााँकोउसकेआध्याजत्ममकबालकद्वाराउसकीअपनीमानाजाताहै।देवीकी कृपाभक्तके द्वाराद्वाराभीकीउनके प्राकट्यकेतनयमोंकीदैवीशजक्तअथवाएकदैवीशजक्त केरूपोंकेद्वाराउच्चप्रकृततकाअनुभवहै।देवीकाउपासकयहजानकरककदेवीस्वयंपरब्रह्म शजक्तहै,वहभर्वान् ्औरउसकीशजक्तकेमध्यकोईअवरोिकनहींलर्ाता।यहााँतकककजोसूय ा औरइसकीद्युततकोपृथकनहींमानतावहभीदेवीकीकृपासेब्रह्मकीजस्थततमेंपहुाँचजाताहै। इसकाअथाहैककवहसीिामार्ाजजसपरएकसािकचलरहाहैउसेयहनहींसोचनाचाहहएकक वहनीचेकीसीहढ़योंकोचढ़ेत्रबनाएकदमसेकूदकरसीिेऊपरपहुाँचजाएर्ाउसेतोभौततकचेतना सेउच्चअवस्थातकक्रमशःचरणदरचरणदृश्यमानअनुभवोंकेप्रर्टक्रमकीश्रेष्ठताकेअनुसार जाना है।

तनन् प्रकृतत का त्मयार् अनुरूप

इस प्रकार दुरु् ाा पूज ा का एक महान आध्याजत्ममक महत्मव है। इसशलए ववश्वमाता ब्रह्म की शजक्त की उसके परम रूप अथवा उसके प्रर्ट रूप में अपनी क्षमता के अनुरू प आरिाना कीजजए। मैं इसके अतनवाया तथ्य पर बल देने की आवश्यकता नहीं समझता कक यहद आप परम सत्मय की दैवी शजक्त देवी का साक्षात्मकार करना चाहते हैं, तो आप अहहंसं ा, सत्मय और ब्रह्मचया का कड़ाई से पालन करें। मैं सिाना के नैत तक पक्ष के ऊपर बल दूँर् ा, क्योंकक त्रबना इसके कोई मूल् यवान प्राजप्त संभ व नहीं है। त्रबना इसके उच्च आदशों में ऊपर उड़ने का कोई लाभ नहीं होर्ा, वे े राख के ऊपर िाले एं भोर् की भाताँ त व्यथा हो जाएँर्े । देव अथवा देवी की आरिाना आध्याजत्ममक ज्ञान के शलए की जा रही है तो यम और तनयम का पालन अतनवाया है। ये पाशववक प्रकृतत पर ववजय तथा आध्याजत्ममक ववजय का ध्वज फहराने में दुि ारे उपकरण की भाताँ त काया करते हैं। देवी दुरु् ाा को अपने दुरुु णा ों, वासना, क्रोि और लोभ के पशु को भेंट कीजजए, देवी को बशल के नाम पर बाह्य जर्त के पशुओं को न मारें। वह आपके भीतर के पशु मानव का बशलदान चाहती हैं, इसके शलए ककसी प्रकार की हहंसं ा नहीं की जानी चाहहए। ककसी भी कारण से आपको ककसी भी प्राणी को हातन पहुँुचाने का कोई अधिकार नहीं है। अहहंसांकोश्रेणी,स्थान,समयऔरपररजस्थततसेमुक्तहोनाचाहहए।अहहंसांएकवैजश्वकशपथहै जजसकाककपूणतायापालनककयाजानाचाहहए।कोईभीपूजा,कोईभीप्राथनाा,कोईभीकायाककसी भी जीववत प्राणी को चोट पहुँुचाने के शलए नहीं ककया जाना चाहहए। आत्ममरक्षा भी हत्मया को सही नहीं सात्रबत कर सकती है। आपको ववश्व-प्रेम के तनयम पर अपनी क्षमता के अनुस ार यथासंभ व दृढ़ रहना चाहहए।आत्ममसमपणा देवीकेसमक्षअपनेअहंकासमपणा सबसे ेबड़ात्मयाहै।इससेअधिकश्रेष्ठ कुछ भी नहीं है। इसके समान कोई चीज नहीं है। यह देवी की आरिाना का श्रेष्ठ प्रकार है। परमात्ममा की आरिाना आत्ममभाव, सवाात्ममभाव से कीजजए। यह संस ार में सबसे े महानतम और र्रमामय काया है। आप सभी देवी की सच्ची आरिाना के ज्ञान को िारण करें। देवी दुरु् ाा आप सभी पर अपने आशीवादा कीवृजृष्टकरें।ॐ।

दैवी शजक्त की आरिाना (१९५१)

रक्षाशजक्तकी आरिाना एक आवश्यकता है जजसका अनुभव सभी प्राणणयों के द्वारा ककया जा रहाहै।यहआरिाना ववश्व का पोषण करने वाली शजक्त के शलए अथवा सामान्य जनों में यह मात्र उच्चशजक्तयोंको वशीकृत करने हेतु हो सकती है, जजनकी सहायता की खोज हेतु वे यत्मनशील हैं। मनुष्यवववेक,बुद्धि और चेतना की देदीप्यमान क्षमता से युक्त है। वह यह जानता है कक उसका कल्याणववश्वकोतनयन्त्रण करने वाली शजक्त के साथ सामंजस्य में तनहहत है। मनुष्य शारीररक

और मानशसक दोनों प्रकार का संरक्षण चाहता है। अनूठा भारतीय मानव मन ववश्व की इस सच्चाई से सहमत है कक कोई परम बुद्धि स्पन्न अपनी शजक्त के साथ काय ाकर रहा है, जो कक इस वैजश्वक बुद्धि में तछपा है। यह परम शजक्त अवतार के रूप में प्रर्ट होती है जो कक दृश्यमान जर्त अथवा वे अदृश्य कल्याणकारी शजक्तया ाँहैं, जजनके प्रतत मनुष्य सािारणतया चेतन नहीं रहता है। इस शजक्त द्वारा जो भी रूप ग्रहण ककया जाता है, इसकी आरािना उस शजक्त के संपका में आने हेतु एक
प्रयास है, जो कक मनुष्य के कल्याण के शलए अतनवाय ाहोती है। जो इसकी सदा आरािना नहीं कर सकते, उनके शलए शास्त्रों ने समय-समय पर आरािना की व्यवस्था दी है।

ग्रीष्म ऋतु शीत ऋतु के अन्त और शीत ऋतु के प्रारंभ में तथा ग्रीष्म ऋतु के प्रारंभ और के
अन्त में ये दोनों वष ामें मौसम की जस्थततयों तथा सूय ाके प्रभाव के अनुसार बड़े ही महत्मवपूण ासंयोर्
हैं। इन दोनों को • भर्वान् ्की उपासना हेतु श्रे्ष्ठ अवसर माना जाता है। इनको चैत्र मास में राम
नवरात्रत्र तथा अश्वायुज्य मास में दुर्ा ानवरात्रत्र कहा जाता है। बाह्य प्रकृतत में पररवतना होने के
कारण लोर्ों के मन तथा शरीर में भी तदनुरूप पररवतना होता है। प्रथम अवसर पर रामनवमी पर श्री
राम की आरािना की जाती है और दूसूरे अवसर पर देवी दुर्ा ाकी आरािना की जाती है। राम
भर्वान् ्की शजक्त (प्रकृतत, आत्मम माया या योर् माया) के द्वारा उनके अवतार थे। दुर्ा ावह शजक्त
है जो कक इस जर्त के सृजक, संरक्षक, संहारक तत्त्व के रूप में प्रर्ट है। इसकी देवी मा ाँकी भाताँत
महाकाली, महालक्ष्मी और महासरस्वती के रूप में पूजा की जाती है, जो तमोर्ुण, रजोर्ुण और
सतोर्ुण के रूप को अशभव्यक्त करती हैं।

जजस प्रकार एक रस्सी तीन िार से बनी होती है। यह ववश्व इन तीन र्ुणों अथवा प्रकृतत के
तीन रूपों से बना है। देवी पूजा सभी के मूल कारण की पूजा है और यह सभी का कल्याण करती है।

यह मनुष्य का कतवा्य है कक देवी मा ाँकी आरािना करे; क्योंकक वे ववश्व के स्वास्थ्य और
संपवत्त पर शासन करती है। यहा ाँतक कक मनुष्य की बुद्धि भी उनके द्वारा ही शाशसत होती है।
मानव वास्तव में शजक्तमय (शजक्त से पूण)ा है। वह शजक्त से अलर् रह कर अजस्तत्मव में नहीं रह
सकता। यह संपूण ाववश्व ऊजा ाहै और ऊजा ाशजक्त है। उसमें जस्थत भर्वान् ्का प्रर्ट रूप शजक्त है।
उसके अप्रकट रूप में वह धचत अथवा चेतना है। धचत शजक्त वह चेतना है जो प्रत्मयेक चीज के
भौततक कारण की भाताँत सभी जर्ह काय ाकरती है। सभी चीजों की इस मा ाँकी आरािना पर ही
व्यजक्त की, समाज की, देश की तथा स्पूण ाजर्त की समृद्धि तनभरा है। मानव शजक्त स्वयं महान
नहीं है। यह हदव्यता के अक्षय स्रोत का रूप है। यह स्रोत सौभाग्य का कारण बन जाता है। यह तुच्छ
ववनाश और दुभाग्ा्य के स्थान पर आध्याजत्ममक तनमाणा तथा सौभाग्य की ओर ले कर जाता है। इस

समयकीमहानआवश्यकताहै,ववश्वकीदैवीशजक्तकाज्ञानऔरउसकेसाथसामंजस्य,क्योंकक इसकी कमी पाप तथा कष्टों की संव ाहक है।

पूण ा के साथ पे्रम मय संप का का अथा है, वह आनंद जो पूण ा के साथ एक है।

हेखोजी!आपएकआत्ममसंतुष्ट,स्वतन्त्रअजस्तत्मवनहींहैं।आपकीमहानतामहाशजक्त अथवाभर्वान् ्केऐश्वयाकीववशालताकाप्रततत्रब्बमात्रहै।अपनीअज्ञानताऔरअहंकारकोत्मयार् दें।

स्वयं को देवी माँ के समक्ष समवपता कर दें। उनसे प्राथना ा करें! जो ब्रह्म शजक्त, ववष्णु ु शजक्त,शशवशजक्तहै।आपमाँकेबच्चेहैं।आपउनकाअपमानकैसेकरसकतेहैं?आपउनके अंशसेबनेहैं।जानेंककवे ेसवव्यापकहैं।ऐसाकोईस्थाननहींहै।जहाँवेनहों।देवीमाहात्म्यका पाठकरेंऔरदेवीमन्त्रकाजपकरें।देवीकाध्यानकरेंऔरउनकेसाथसामंजस्यस्थावपतकरें। यहीआपकालक्ष्यहै,यहीआपकीसवोच्चसमृद्धिहै।यहयशकीचरमसीमा,कैवल्यमोक्षअथवा अंततममोक्षहै।आपसभीशांततमेंववश्रामकरेंऔरसौभाग्यशालीहों।देवीमाँकीकृपाआपसभी पर सदा बनी रहे।

अपने हृदय में पे्रम को शसंहांसनारूढ़ करें (१९५२)

प्रेमहीएकमात्ररूपांतररतकरनेवालीशजक्तहैऔरमाँदैवीप्रेम का अक्षय स्रोत है। मा ँका अपने बच्चों के प्रतत पे्रम अकथनीय और अतुल नीय है।

यहपे्रमसंपूणावृद्धि,प्रर्तत,ववकासऔररूपांतरणकेशलएअतनवाय ापूवापेक्षा है। यहा ँभय की अपेक्षापे्रमसेहीअधिकववकासहोताहै।भय(घृणा)सेशभन्न)ववकास को रोकता है और प्रर्तत को बंदकरदेताहै।पे्रमवृद्धिकोबढ़ाताहै।औरप्रर्ततमेंवृद्धिकरता है।

इसपववत्रअवसरपरजबहमसभीदेवीकीआरािनाकररहेहैं, इस महान सत्मय पर ववचार करें। यहपे्रमहीहैजजसपरसृजष्टहटकीहैऔरवहदैवीपे्रमदेवीमाँका सच्चा प्राकट्य है।

जो कुछ भी यहा ॉँप्राप्त होता है, वह एकमात्र पे्रेम से ेही प्राप्त ककया जा सकता है। दैवी प्रेमे का अजना करें। और कुछ भी नहीं मात्र पे्रेम ही अपने हृदय में रहने दें। यह बिााऐं दूरू करेर्ा और आपकी आध्याजत्ममक प्रर्तत में वृद्धि करेर्ा। यह आपके शत्रुओं को आपके शमत्रों में बदल देता है। यह शांतत, समृद्धि और प्रचुरता के रूप भर्वान् ्के समृद्धिशाली आशीवादाों की आपके ऊपर वृजृष्ट करता है। यह आपको सवोच्च वरदान मोक्ष प्रदान करता है।

यह वह पाठ है, जो देवी मा ॉँआपको शसखाती है। पववत्र और पापी, संत और दुष्ुट, तनिना और निवान, सभी की वह मा ॉँहै, सभी उनके बच्चे हैं। उसका प्रेम वह है। जो कभी-कभी ऐसा लर्ता है कक नष्ट कर रहा है, लेककन वास्तव में यह मुक्त करता है। उनका पे्रेम वह है जो रक्षा करता है, अज्ञानता के आवरण को चीरता है और सबको मुक्त करता है।

सभी प्राणणयों के प्रतत वैराग्य से युक्त पे्रेम का अजना करें और ऐसा होने पर ही आप माॉँ पराशजक्त को अपने हृदय शसंहासन पर आरूढ़ कर सकेंर्े। तभी पृथ्वी पर शांतत, मैत्री, आनंद, समृद्धि और मेल होर्ा। देवी का आशीवादा आप सभी के ऊपर हो। आप सभी इसी जन्म में जीवन्मुक्त की भातॉँत प्रकाशशत हों।

आदशा के प्रतत प्रयत्मन (१९५४)

देवी मा ॉँकी नौ हदन की आरािना करोड़ों हहंदुओं के द्वारा अभी-अभी की ई। यह सभा आपको दैवी चेतेना की प्रतीक शजक्त जजसे भर्वान् ्के रूप में ईश्वरीय शजक्त, अमर आत्ममा पुकारते हैं, की आरािना का महत्मव स्मरण कराने के शलए तथा व्यजक्त को भर्वान् ्के साक्षात्मकार के प्रतत प्रेररत करने के शलए है।

देवी मा ॉँको परमात्ममा का कक्रयात्ममक प्रतीक कहते ेहैं, जो ववश्व को तनयंत्रत्रत करती है। र्ुरुत्मवाकषणा, कारण और प्रभाव, ववकास के तनयम ये सभी इस कक्रयाशजक्त के प्रततततनधि हैं। यह सृजृन, संरक्षण तथा ववलय के पीछे जस्थत प्रतीकात्ममक शजक्त है। संपूण ाववश्व इस शजक्त का प्रर्ट रूप है।

सभ्यता के प्रारंभ में हहंदू ूमन ने देवी मा ॉँके मूतत ापूजन में अनंत चेतना के प्रतीक की कल्पना की । यह अस्पष्ट, तनराकार, तनर्ुणा अग्रहणीय, पारलौककक आदश ाकी अपेक्षा अधिक आकषका, समझने योग्य, संतान के समान तनकट तथा अन्तरंर् भावनात्ममक रूप से संतोषजनक तथा

पाररवाररक रूप से शमलनसार िारणा है तथा यह ककसी का लक्ष्य अथवा जीवन का अवलंब न हो सकता है।

"संपूणाववश्व,मनकीववशालतमकल्पनाहै",ऐसाश्रुततमेंशलखाहै।हालाकाँकयहव्यजक्त की शारीररक,भावनात्ममक,बौद्धिकतथाअवचेतनसत्तासे ेसंबंधितहै।यहस्पष्ट,असंहदग्तिथा सबं्ध ित रूप से ताजत्मवक यथाथता ा है। इसी प्रकार कोई भी ववचार जो कल्पना से तनशमता हो, आस्था और भजक्तसेपूणातथाध्यानऔरिारणामेंआकषका होवहतनजश्चतहीभौततकरूपसेसत्त्व, मानशसक ववश्वनीय, सार पूण ,ा बौद्धिक रूप से ग्राह्य तथा आध्याजत्ममक रूप से रूपांतरण करने वाली यथाथता ा होर्ी और इसका मानव जीवन में मानव के आत्मम-साक्षात्मकार की और ववकास में दूरू र्ामी पररणाम होर्ा।

दैवी माँ की पौराणणक र्ाथा ऋणात्ममकता के र्हन बलों के ऊपर देवी शजक्त की ववजय को अशभव्यक्त करती है। मानव जीवन में अच्छाई और बुर ाई के मध्य, सत्मय तथा असत्मय के मध्य, सद्गुणतथादुर्गुणा केमध्य,स्वतन्त्रतातथार्ुलामीकेमध्य,प्रकाशतथाअंिकारकेमध्यद्वंदसभी को भली प्रकार ज्ञात हैं। इसशलए यह अवसर सिाक को उस महान दैवीय तनयम का वषा में स्मरण कराने के शलए है कक अन्त में असुर ता पर हदव्यता की सदा ववजय होती है। यह अवसर इसशलए सिाक को प्रततवषा उस महान दैवी तनयम का स्मरण कराता है कक दैवी इच्छा आसुर ी इच्छा पर सदैव ववजयी होती है।

नवरात्रत्र मनुष् य के भीतर दैवी प्रकृतत को अनुभ व करने तथा व्यक्त करने, सत्मय और प्रेम के प्रकाश को प्रर्ट करने, अपने भीतर के बलों पर ववजय के शलए जाग्रतत की पुक ार है, क्योंकक प्रेम और भाईचारे तथा तनःस्वाथता ा के सकारात्ममक बलों के द्वारा नकारात्ममक और आसुर ी तत्मव लोर्ों के हृदयों तथा मनों से बाहर तनकल जायर्ें। अंिकार कभी भी प्रकाश को रोक नहीं सकता है। सत्मय, प्रकाश और अच्छाई समानाथका शब्द हैं। वे भर्वान् ् के दृश्यमान भाव हैं।

असत्मय के साथ इसका ककतना ही लंब ा, कष्ट दायक और घुम ावदार द्वंद हो सत्मय ही एकमात्र ववजयी होता है। िनात्ममक ही ऋणात्ममक पर ववजय प्राप्त करता है। माँ की पुक ार व्यजक्त का इस सत्मय की ओर उत्मथान करने तथा उसके जीवन को दैवी सकारात्ममक का सकक्रय रूप बनाने हेतु है। माँ का संदे श है, सकारात्ममक आदशवा ाद के एक व्यावहाररक मूत तमा ान और ववजयी बनें, संस ार के शलए तनरासक्तभावसेउपयोर्ीबनें।आत्ममपूणताा,समदृजष्ट,मनकासंतुलन,मानवताकीतनष्काम भावसेसेवा,तनःस्वाथताऔरपूणाववनम्रता।

इसशलए प्रत्मयेक का जीवन पूण िा मपारायणता और पववत्रता पर आिाररत हो, अब व्यजक्त का आदश ा और अच्छाई ववशेष रूप व्यावहाररक बने। व्यजक्त के सद्गुण जीवंत प्रभावशाली और जीवन को बदलने वाला हो। सभी के कल्याण हेतु प्रयत्मन करें, भले बनें, भला करें, अच्छाई का ववककरण करें।

संसार की शांतत और मुजक्त हदव्य जीवन व्यतीत करने में सजन्नहहत है। वह भाईचारा जजसकी व्यजक्त बातें करता है, वह व्यवहार में भी भाईचारा बने तथा बुद्धि और भावनाऐं 'आत्ममा एक है' के आदश ा के द्वारा कायाजान्वत हों।

प्रकृतत के ववकास की र्ततववधि सदा अवस्थाओं में काय ा करती है। समस्त कक्रयाववधि अथवा तनमाणा ववकास के तनयम के अनुसार ढलती है। ववकास वह कक्रयाववधि है जो सच्चे जीवन और सच्ची वृद्धि का अनावरण करती है। यह स्थायी प्राजप्त में फलीभूत होता है। इसशलए व्यजक्त को जो सब अच्छा और श्ेष्ठ हैं, उसका अजना ववकास की सकारात्ममक और रचनात्ममक कक्रयाववधि के द्वारा अजना ककया जाना चाहहए।

यहद कोई आनंदपूण ा और अच्छा जीवन व्यतीत करना चाहता है तो उसे सभी प्रकार की हहंसा और घृणा को त्मयार्ना होर्ा और शांतत, तनमलाता और दया की तरंर्ों को अनुभव और ववकररत करना होर्ा। स्वाथ,ा वासना, क्रोि, लोभ और अज्ञानता से रहहत जीवन स्वयं ही हदव्य जीवन है। प्रेम के पौिे को रोवपत करने के शलए व्यजक्त को ईष्या,ा घृणा, संदेह और शेष की खरपतवार को उखाड़ना होर्ा।

बुरे कम ा नहीं करना, तुच्छ से तुच्छ को भी ककंधचत भी आहत न करना, ककसी का भी अपमान नहीं करना, दूसूरे के मूल्य पर कमाई नहीं करना, अशुद्ि और अपववत्र न बनना, िूत ा और कपटी न बनें। यही स्पूण ा जर्त के सभी संतों तथा पैर्ंबरों की केन्द्रीय शशक्षा है। ककसी भी प्राणी के प्रतत कू्रूरता स्वयं मा ाँ के प्रतत कू्रूरता है। िम ा का सार ककसी को भी हहंसा न पहुुँचाने में तनहहत है।

सभी घृणा को प्ेरेम से, बुराई को भलाई से, अन्याय को न्याय से, असत्मय को सत्मय से, स्वाथ ा को तनःस्वाथताा से ववजय करने हेतु शमल कर काय ा करें। सभी को शांतत शमले। देवी मा ाँ का आशीवादा सभी कोअसत्मय से सत्मय, अंिकार से ेप्रकाश की ओर, मत्मयताा से अमरता की ओर ले के जाये।

देवी मा ाँकी पूजा (१९५५)

समृद्धितथामुजक्तहेतुमार्

आहद पराशजक्त को प्रणाम, परम दैवी शजक्त, जो कक ववश्व का मूल जो सभी प्राणणयों का

पोषण करती है तथा जजसकी उदार कृपा जीव को समस्त समृद् धि तथा अंत तम मोक्ष प्रदान करती है।

'न अयं आत्मा बलहीनेन लभ्यैः' - यह आत्ममा दुबु ला ों को प्राप्त नहीं होती। आपका शरीर दृढ़ होना चाहहए। आपका मन स्वस्थ होना चाहहए। आपकी बुद् धि तीक्ष्ण और सूक्ष् म भेद ी होनी चाहहए। आपको शजक्तशाली होना ही चाहहए। आपकी आत्ममा देदीप्यमान होना चाहहए। आपके कमा दृढ़ ववश्वास कीशजक्तसेअनुमोहदतहोनीचाहहए।आपकेशब्दसत्मय,िमपारायणताऔरपे्रमकीशजक्तसेपूणा होने चाहहए। आपके ववचार शजक्तशाली होने चाहहए तथा वे एक तनःस्वाथता ा, शुद् िता, हदव्य पे्रम तथा वैर ाग्य से भरे हुए होने चाहहए, मात्र तभी आप वास्तव में एक दृढ़ और शजक्तशाली व्यजक्तत्मव के स्वामी होंर्े।

नवरात्रत्र की पूज ा हमारे प्राचीन संत ों द्वारा आपको इस महान सत्मय का स्मरण कराने के शलए स्थावपत की र्यी है। माँ आपको शजक्त प्रदान करेंर्ी यहद आप उनके पास एक बच्चे की भाततँ सरलताऔरभोलेपनसेजाकर,उनकेसमक्षस्वयंकोसमवपता करेंऔरप्राथनााकरें:"हेमाता,आप ही सब हैं; पापी हूाँ अथवा पुण् यात्ममा, मैं आपका ही पुत्र हूाँ, मुझे ऊपर उठाऐं, क्योंकक आप दया और पे्रमसेपूणाहैं।"

चूाँककदुर्ाापकेऊपरतथाआपकेसंपूणाव्यजक्तत्मवकेऊपरवैभवकीवषााकरतीहै।वह आपकी आध्याजत्ममक प्रर्तत में बािक समस्त बािाओं को दूरू करती है तथा आपके बुरे संस् कारों को नष्ट करती है। लक्ष्मी आपको दैवी सद्गुण ों से पूण ा करती है तथा आपको भौततक समृद् धि भी देती है जजससे कक आप नश्वर आकुलताओं से मुक् त हो जाऐं और अपने आध्याजत्ममक आदशा का अनुक रण कर सकें। सरस्वती आपके शलए आध्याजत्ममक ज्ञान के राज्य के द्वार को खोलती है, ताकक आप यथाथता ा को देख पाते हैं और आप असत्मयताओं तथा इस संस ार के मायावी अनुभ वों से वापस मुड़ जाते हैं।

अपनी दैवी लीला को यहााँ पर तनरंतर करते रहने के शलए अववद्या माया के रूप में वे स्वयं सत्मय को आपसे छुपा लेत ी हैं और आपको इस संस ार से बााँि देती हैं। जब वे सच्ची भजक्त तथा

तनःशत ासमपणा से प्रसन्न होती हैं, तो वे ववद्या माया के रूप में अज्ञानता के आवरण को हटा कर आपको सत्मय को देखने योग्य बनाती हैं।

प्रवद्यौः समस्तास्तव देप्रव भेदाः
ण्स्त्रयैः समस्तौः सकला िगत्सु ।
त्वय कया पूररतमम्बय तत् ्
का ते स्तुततैः स्तव्यपरा परोण्कतैः ।।

"माँसभीकलाऐं,ववद्याऐं, ज्ञान की सभी शाखाऐं ंआपके ही रूप हैं। इस जर्त की सभी

जस्त्रयाँआपकेहीरूपहैं।आपने ही एकमात्र इस संपूण ासृजृष्ट को व्याप्त ककया हुआ है। "

इसमहानसूत्रपरध्यान कीजजए। सभी जस्त्रयों में देवी मा ँके दशना कीजजए। जर्त के प्रत्मयेकरूपमेंमाँकीपूजाकीजजए। वह आपको समस्त कलाओं तथा ववद्याओं का स्वामी बना देर्ी। आपएकदेदीप्यमानयोर्ी,ज्ञानी तथा जीवन्मुक्त की भाताँत देदीप्यमान होंर्े।

आहदपराशजक्तकाआप सभी के ऊपर आशीवादा बना रहे। आप सभी इसी जन्म में ऋवष, ज्ञानी,भक्ततथायोर्ीकीभाताँत देदीप्यमान हों।

मानव का ऊध्वारोहण (१९५६)

सवमां ग लमांग ल्ये शिवे सवार्् सा ाधिके।

रिण्ये त्र्यंब के देप्रव नारायणण नमोऽस्तु ते ।।

"हेसवमांर्लकारी!हेआनंदकासार्र,समस्तकामनाओंकीदाता!हेसभीकीशरणदाता,

त्रत्रनेत्रदेवी!हेनारायणण,आपकोप्रणामहै।"

अमरता के पुत्र ो !

देवी माँ की कृपा आप सब पर हो। देवी दुर् ाा समस्त जर्त पर अपने आशीवादा की वषाा करें।

सवत्रा परम शांतंत तथा आनंद हो ।

यह संस ार एक मंच है जहाँ चेत ना और शजक्त के युग् म शसद्गन्तों का बृह त अशभनय चल रहाहै।यहसंसारशजक्तअनंतकीशजक्तजोककचेतेनाहैकाप्राकट्यहै।यहधचत्मशजक्तहैजोकक स्वयं को ववश्व की ववशालतम यथाथता ा की भातँ त प्रर्ट करती है। पराशजक्त सवत्रा ब्रह्म शजक्त, ववष्णु ु शजक्त तथा शशव शजक्त के रूप में भ्रमण करती है। बुद् धि तथा अन्तःपे्रेर णा हदव्य प्रकृतत के अजस्तत्मव के सत्मय को जो कक प्रायोधर्क ववषयों के बृह त दृश्यमान जर्त को बनाए रखता है तथा कक्रयाशील रखता है को स्थावपत करता है। पदाथा ऊजाा में ववलीन हो जाता है। प्रश्नोपतनषद् कहती है कक रायी और प्राण, पदाथा और ऊजा, ा संपू ण ा सृजृष्ट का तनमाणा करते हैं। पदाथा अन्तर में जस्थत शजक्त का बाह्य प्रतीक है जो कक ईश्वर द्वारा अशभव्यक्त होता है। वह शजक्त जो ववश्व को जन्म देती है और पोषण करती है, वह जड़ शजक्त अथवा वह ववद्युत शजक्त नहीं है जो कक वैज्ञ ातनकों का अंतं तम सत्मय बजल्क यह धचन्मय शजक्त है, ब्रह्म की तनत्मय चेत ना की शजक्त। वास्तव में यह वह शजक्त नहीं है जो ब्रह्म की शजक्त है, बजल्क यह वह शजक्त है जो स्वयं ब्रह्म है। ब्रह्म लीला के ववश्व के रूप में प्रर्ट होते हैं, सत्मय का सत्मय के शलए स्वयं प्राकट्य ।

भर्वद्गीता दो प्रकार की प्रकृतत, ईश्वर के काया के तन्न तथा उच्च रूपों के काया के बारे में कहती है, तन्न स्वयं को प्रकृतत के दृश्यमान स्वरूप के रूप में अशभव्यक्त करती है तथा उच्च सभी प्राणणयों के जीवन के मूल के रूप में अजस्तत्मवमान रहती है। यह परमात्ममा है जो सब कुछ है।

तब यह ववश्व मानव साक्षात्मकार के सवोच्च आदश ाकी दृश्यमान अशभव्यजक्त है। इसके उच्च एवं तन्न दोनों रूपों में, प्रकृतत स्वयं ही भर्वान् ्के चलते-कफरते ेशरीर में अशभव्यक्त करती है।
श्रीमद्भर्वद्र्ीता मनुष्य को उस प्रभाव हेतु साविान करती है कक ववश्व की प्रत्मयेक दृश्यमान वस्तु पूजा और आरािना की वस्तु है। भर्वान् ्सभी वस्तुओं के मंहदर में तनवास करते है। भर्वान् ्की पूजा का अथ ाहै, तत्मक्षण व्यजक्त का ववश्व के परम वैयजक्तक तनयम के साथ सामंजस्य तथा ववश्व की योजना जो कक स्थान और समय के ढाचोँ में ईश्वर ने तनशमता की है, के प्रतत चैतन्यता के साथ आंतररक व्यवहार के त्रबना आध्याजत्ममक भजक्त और पूजा नहीं हो सकती। बाहर तथा ऊपर जस्थत परमात्ममा, भीतर तथा नीचे ेजस्थत परमात्ममा एक समान ही है। परम देवी की उपासना परम शजक्त की भाताँत हो जो कक सभी प्राणणयों की अनाहद मा ाँहै।

नौ रात्रत्रयों की पूजा को नवरात्रत्र पूजा कहते हैं। यह महान सृषूटा की उसके दुर्ा,ा लक्ष्मी और सरस्वती के रूप में जो कक महान सत्मय के शलए रज, तम और सत्मव र्ुणों जजनके द्वारा यह ववश्व तनशमता है, के द्वारा स्वयं प्रर्ट है, मनुष्य के द्वारा की जाने वाली आरािना है। रूपांतरण, संरक्षण तथा प्राकट्य महहमामय मा ाँके दैवी काय ाहैं, जो वे अपने बच्चों के शलए करती है जो सहायता, ज्ञान, समृद्र्धि तथा अंततम मुजक्त के शलए उनकी ओर देख रहे हैं। वह ववद्या, अववद्या, माया, प्रकृतत, शजक्त, देवी अथाता- वह सब कुछ जो ब्रह्मांकि इसके स्थूल, सूक्ष्म तथा कारण प्रदेश में जीवन के पररदृश्य को बनाते हैं वे ही सब कुछ हैं। दुर्ासाप्तशती अथवा देवी माहात्म्य में देवी को महाववद्या, महामाया, महामेिा, महास्मृतत, महामोहा, महादेवी तथा माहेश्वरी कहा र्या है। वह परब्रह्म महहवष, स्पूण ाअजस्तत्मव की स्वाशमनी हैं। उसकी कृपा जजज्ञासु में जजज्ञासा का, सािक में सािना का, शसद्िि में शसद्िि का रूप है। वह सभी ववचारों, इच्छाओं, भावनाओं, बुद्धि, कायों, नाम तथा रूपों के पीछे जस्थत सत्मय है।

पववत्र दुर्ा ानवरात्रत्र उत्मसव, जर्त के अन्तर आध्याजत्ममक जीवन का उत्मसव है। देवी मा ाँउच्च आध्याजत्ममक शजक्त है जो कक तनन् कामनाओं के साथ संघष ाकर रही है और अन्त में उन पर पूणताया ववजय प्राप्त कर लेती है। सािना की कक्रयाववधि में जो सवप्राथम ववजजत तथा रूपांतररत ककया जाता है, वह है तमोर्ुण— और दुर्ा ाजो कक तम शजक्त की देवी हैं, प्रथम तीन हदनों उनकी पूजा की जाती है। अर्ला जो ववजजत ककया जाता है वह है रजोर्ुण, और लक्ष्मी इसकी अधिष्ठात्री शजक्त हैं, अर्ले तीन हदनों में उनकी पूजा होती है। अन्त में आता है सत्मव र्ुण, इसशलए अंततम तीन हदनों की देवी हैं सरस्वती मा ाँअपने सत्मव शरीर में। दसवा ाँहदन है ववजयादशमी, ववश्व की त्रत्रर्ुण शजक्त जो कक इसके अववद्या रूप में काय ाकर रही है, जजस पर ववद्या शजक्त अथवा उच्च शजक्त के द्वारा ववजय प्राप्त की ई है, यह अववद्या के ऊपर पूण ाववजय तथा आत्ममा का परमात्ममा की अमर चेतना में ववलय का उत्मसव है। मिु ुकैटभ, महहषासुर, शुंभ, तनशुंभ आहद वास्तव में आसुरी तत्मव हैं,

जो ककतनरंतरआत्ममाकोबिाँतेऔरपीड़ादेतेहैंऔरउनकासंिनि-शजक्त,मन्त्रशजक्त,ध्यान-

शजक्त, रुुरु कृपा तथा ईश्वर अनुर ◌ार् देवी माँ का त्त्ररूप इन सभी का साकार रूप है इनको भक्त हहंदू ◌ू

पूजाकरतेहैंऔरयहदेवीमाँहीत्तम्साधूतकानिरन्तरबिाँने

औरकष्टदेनेवालेआसुरीतत्मवोंमिुकैटभ,महहषासुर,शुंभ-तनशुंभआहदकानाशकरदेतीहै।

परमानंदकेखोजी!अपनीहृदयकीप्राथनााको,पराशजक्तकोजोककआपकीआत्ममशजक्त ज्ञानशजक्तहैतथाजोमोक्षसाम्राज्यलक्ष्मीहैकोअवपता करो।आत्ममाकीप्रत्मयेकसच्चीप्राथनाावह शजक्तउत्मपन्नकरतीहै,जोअज्ञानताकेककलेकोभेदतीहैऔरआत्ममाकोसत्मयकेरहस्योंमें, सच्चेजीवनऔरप्रकाशमेंसफलताप्राप्तकरनेकेयोग्यबनातीहै।पावननवरात्त्रआपकेशलए आत्ममसाक्षात्मकारकीसािनाकेशजक्तशालीअभ्यासकाआरंभकरे।जप,संकीतना तथाध्यानके द्वाराअपनीआंतररकदृढ़ताप्राप्तकरें।नौहदनोंतथानौरातोंमेंकठोरसंयमकापालनकरेंतथा अपनेसमयकाप्राथनाा,पारायणतथाध्यानमेंसदुपुयोर्करें।ववषयाधश्रतचेतनाजोककबाह्यतथा आंत ररक ववश्व में दृश्यमान है के आवरण आत्ममा का अववनाशी की ओर उत्मथान। मानव का भर्वान् ◌् कीओरऊध्वारोहणअनुभवोंकेराज्यकेतनयमोंकीक्रमशःपूणतााऔरउनकाआत्ममअनुभवमें रूपांतरण।शजक्तशशवके शलएमार्हिै।दैवीमाँअजस्तत्मवके परमअन्तोंपरमपुरुषाथिाम,◌ा अथ,◌ा कामतथामोक्षकेमानवीयप्राणीकेद्वाराप्राजप्तकावादातथासंभाव्यताहै।उनकीकृपाकेशलए उनकीओरदेखें।आपकाइसलोककातथापरलोककाअभ्युदय,तनःश्रेयस,समृद्धिसुतनजश्चतहो जाएर्ी।माँपराशजक्तआपसभीपरअपनेआशीवादा कीवृजष्टकरें।

देवी कीतना

१. ॐ शजक्त ॐ शजक्त ॐ शजक्त ॐ

ब्रह्म शजक्त ववष्णु शजक्त शशव शजक्त ॐ

आहद शजक्त महा शजक्त परा शजक्त ॐ

इच्छा शजक्त कक्रया शजक्त ज्ञान शजक्त ॐ

ऱ्ौरी ऱ्ौरी ऱ्ं ऱ्े राजेश् वरी

२. ऱ्ौरी ऱ्ौरी ऱ्ं ऱ्े भुव नेश् वरी

ऱ्ौरी ऱ्ौरी ऱ्ं ऱ्े माहेश्वरी

ऱ्ौरी ऱ्ौरी ऱ्ं ऱ्े मातेश् वरी

ऱ्ौरी ऱ्ौरी ऱ्ं ऱ्े महा काली

ऱ्ौरी ऱ्ौरी ऱ्ं ऱ्े महा लक्ष्मी

ऱ्ौरीऱ्ौरीऱ्ंऱ्ेपावती

ऱ्ौरी ऱ्ौरी ऱ्ं ऱ्े सरस्वती

जय रिी जय रिी रिी

जय रिी जय श्री रिी ◌॓

३. जयसीतेजयसीतेसीते

जय सीते जय श्री सीते

जय सरस्वती जय सरस्वती जय सरस्वती पाहह माम् ◌्

जय सरस्वती जय सरस्वती जय सरस्वती रक्ष माम् ◌्

जय श्री लक्ष्मी जय श्री लक्ष्मी जय श्री लक्ष्मी पाहह माम् ◌्

४. जय श्री लक्ष्मी जय श्री लक्ष्मी जय श्री लक्ष्मी रक्ष माम् ◌्

जयश्रीदुऱ्ुेजयश्रीदुऱ्ुेजयश्रीदुऱ्ुेशरणॐ।

जयश्रीदुऱ्ुेजयश्रीदुऱ्ुेजयश्रीदुऱ्ुेनमःॐ

भवानीशंकरीऱ्ौरीशंकरी

शशवकामी शंकं री उमा शंक री

अणखलेश्वरीमातेश्वरी

५.

माहेश्वरी त्रत्रपुर सुंदरी

अणखलेश्वरी मातेश्वरी

माहेश्वरी परमेश्वरी (सवेश्वरी)

र्ंर्ा रानी र्ंर्ा रानी र्ंर्ा रानी पाहह माम् ्

६. भार्ीरथी भार्ीरथी भार्ीरथी रक्ष माम् ्

दीनोद्ाररणी दुरुरतहाररणी सत्मव रज तम त्रत्रर्ुण ि ाररणी

संध्या- साववत्री-सरस्वती र्ायत्री रिाा रुजक्मणी पंकज लक्ष्मी

७. आहद हदव्य ज्योतत महा काशल मा ाँनमः

मिु शुंभ महहष मदानी महा शजक्तये नमः

ब्रह्म ववष्णु शशव स्वरूप त्मवं न अन्यथा

८. चरा चरस्य पाशलका नमो नमः सदा

देवी भजो दुर्ा ाभवानी

जर्त जननी महहषासुर महदानी

जर्त जननी संकट हरण

त्रत्रभुवन ताररणी मातेश्वरी (माहेश्वरी)

९. अववद्या नाशशनी, भ्रांतत नाशशनी, जर्त जननी

आनंद दातयनी, ववद्या दातयनी, मोक्ष दातयनी

आनंद करणी, कल्याण काररणी, मोक्ष काररणी

१०. सवेषां स्वजस्तः भवतु, सवेषां शांततभवातु ।

सवेषां पूण ाभवतु, सवेषां मंर्लं भवतु ।।

सवे भवन्तु सुणखनः सवे सन्तु तनरामयाः ।

११. सवे भिाणण पश्यंतु मा कजश्चद्दुःखभाग्भवेत् ्।।

असतो मा सद्र्मय ।

तमसो मा ज्योततर्माय ।

मृत्मयोमाऽमृतं र्मय ।।

ॐपूणमादः पूणशामदं पूणात्मापूणमुादच्यते ।
पूणस्ाय पूणमाादाय पूणमोवावशशष्यते ।।

ॐ शांततः शांततः शांततः।

देवी आरती

जय अ्बे ऱ्ौरी! मैया जय मंर्लमूरती!
मैया जै आनन्दकरणी !
तुमको तनशशहदन ध्यावत हरर ब्रह्मा शशव री!

ॐ जै अबे् ेऱ्ौरी !

मार्ाँशसन्दूरू ववराजत टीको मृर्मदको,
उज्ज्वल से दोऊ नैना चन्विदन नीको।।

ॐ जै अबे् ेऱ्ौरी !

कनक समान कलेवर रक्ता्बर राजे,
रक्तपुष्प वनमाला कण्ठन पर साजे।।

ॐ जै अबे् ेऱ्ौरी !

केहररवाहन राजत शंखं-खप्पर-
सुरनरमुतनजन सेववत ततनके दु्ःखहारी ।।

ॐ जै अबे् ेऱ्ौरी !

कानन कुण्लि शोशभत नासार्ग्रे मोती,
कोहटक चन्् हिदवाकर राजत सम ज्योती ।।

ॐ जै अबे् ेऱ्ौरी !

शु्भ तनशु्भ ववदारे महहषासुर घाती,
धू्म्रववलोचननाशशतन तनशशहदन मदमाती।।

ॐ जे अबे् ेऱ्ौरी!

चौंसठ योधर्तन ऱ्ावत नृत्ूमय करतभैरूाँ,
बाजत ताल मृदंऱ्ा अरु बाजत िमरू।।

ॐ जै अ्बे ेऱ्ौरी !

भुजा चारअततशोशभत शंख- खप्परि–ारी,
मनवांतछतफलपावत सेवत नर-नारर ।।

ॐ जै अबे् ेर्ौरी !

कंचनथालववराजत अर्र कपूर बाती,
श्रीमालकेतुमेंराजत कोहट रतन ज्योती ।।

ॐ जै अबे् ेर्ौरी!

याअबे्जीकीआरती जो कोई नर र्ावे,
कहतशशवानन्दस्वामी सुख स्पवत्त पावे।।

ॐ जै अबे् ेर्ौरी !